खण्ड

4

अनुवाद की पश्चिमी परम्परा

इकाई 11
पश्चिम में अनुवाद की प्राचीन परम्परा 137

इकाई 12
मध्यकालीन पश्चिम में अनुवाद की परम्परा 147

इकाई 13
आधुनिक यूरोपीय अनुवाद परम्परा 165

इकाई 14
अनुवाद की अमेरिकी एवं कनाडाई परम्पराएँ 173

खण्ड-4 का परिचय

अनुवाद की अनिवार्यता पश्चिम में भी प्राचीन काल से रही है। मिस्र, सुमेर, बेबीलोन, हित्ती साम्राज्य जैसी प्राचीन सभ्यताओं में अनुवाद के आरम्भिक स्रोत ढूँढे गए हैं। ईसाइयों के प्रमुख धर्मग्रन्थ बाइबिल के अनुवाद को लेकर अनुवाद के सैद्धान्तिक पक्ष की चर्चा की जा रही है। प्राचीन सुमेर की मिट्टी की मुद्राओं में अनुवादकों का उल्लेख बताया जाता है। प्राचीन सुमेर में अनुवादकों के प्रशिक्षण हेतु विशेष विद्यालय बनाए जाने की भी चर्चा की जाती है। प्राचीन बेबीलोन में भी अनुवाद की बहुत बड़ी भूमिका रही थी। हित्ती साम्राज्य के दौरान तैयार किए गए सुमेरी-अक्कादी-हित्ती शब्दकोशों से भी पता चलता है कि उस काल में अनुवाद-कार्य नियमित रूप से होता होगा। प्राचीन मिस्र के लिखित पाठों में अनुवादकों का उल्लेख मिलता है। फ़िराऊनों के कार्यालयों तथा मन्दिरों में अनुवादक हुआ करते थे, जो लिखित और मौखिक दोनों तरह के अनुवाद करते थे।

प्राचीन यूनानी लोग सम्पर्क की अनिवार्यता देखकर ग्रीक भाषा के दुभाषिया और अनुवादक बुलाते थे। अलेक्ज़ेण्डर तृतीय ने जब मिस्र को अपने अधीन किया तो राजभाषा के रूप में ग्रीक को अपनाया और तब अनुवादकों की आवश्यकता अपने आप पड़ गई। मिस्र के सम्राट टॉलमी के आदेश पर बाइबिल के *'पूर्वविधान'* के पहले पाँच अंशों का प्राचीन हिब्रू से ग्रीक भाषा में अनुवाद किया गया जो *सेप्तुआगिन्त* नाम से प्रसिद्ध हुआ।

मध्यकाल की भाषिक, राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक परिस्थितियाँ अनुवाद के लिए लाभदायक साबित हुईं। बौद्धिक स्तर पर, रोम को ग्रीक का उत्तराधिकारी बनाने में अनुवाद ने सबसे अधिक सहायता की थी। चार्ल्स महान द्वारा स्थापित कैथेडेरल स्कूल 12वीं-13वीं सदी आते-आते विश्वविद्यालय के रूप में परिणत हो गए। इटली, फ्रांस, स्पेन, इंग्लैण्ड आदि देशों में स्थापित इन विश्वविद्यालयों को अध्ययन और ज्ञान का केन्द्र माना जाने लगा। अनुवाद को अकादेमिक पहचान मिली।

मध्यकाल में वहाँ अनुवाद को राष्ट्रीय और राजकीय प्रश्रय मिला। ग्रीक और लैटिन से फ्रेंच में अनुवाद को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य नौवीं सदी में फ्रांस के शासक चार्ल्स ने अनुवाद को प्रोत्साहित किया। फ्रांस, ब्रिटेन, इटली, जर्मनी, स्पेन जैसे उभर रहे राज्यों में अनुवाद कार्य राजकीय नीति और योजना के तहत राजा के संरक्षण में करवाया गया। भाषाओं को सम्वर्द्धित करने का सबसे सक्षम साधन अनुवाद कार्य को माना गया।

धर्मसुधारवादियों के लिए अनुवाद धार्मिक आस्था का प्रतीक बना। ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार से अनुवाद को नई ऊर्जा मिली। आम लोगों तक बाइबल के सन्देश को पहुँचाने में अनुवाद सबसे अधिक मददगार सिद्ध हुआ। मध्यकाल में भाषाई स्तर पर राष्ट्रों को अपनी राजनीतिक पहचान बनाने में सर्वाधिक सफलता मिली। भाषा समृद्धि की नीति के तहत नए राष्ट्रों के राजाओं ने क्लासिकल ग्रन्थों का अनुवाद राष्ट्रीय भाषाओं में करवाए। अनुवाद राष्ट्रीय अस्मिता के प्रश्नों से अपना ताल्लुक रखने लगा। अनुवाद के माध्यम से पश्चिम की कई भाषाओं की लिपियों का विकास भी सम्भव हुआ।

मध्यकाल के अन्तिम दौर में अनुवाद धार्मिक कट्टरता से उन्मुक्ति पाने का साधन बन गया, मानव समाज को नया सन्देश देने में कामयाब हुआ, आम लोगों तक धार्मिक सन्देश पहुँचाने में सहायता मिली। अन्धकार युग के दौर में पश्चिमी ज्ञान को अनुवाद के माध्यम से अरबी में संरक्षित किया जा सका, यूरोपीय भाषाओं में अरबी के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के अनुवाद से पश्चिम को चौतरफा लाभ हुआ। इंग्लैण्ड में नौवीं शताब्दी से शुरू हुई अनुवाद परम्परा, सोलहवीं शताब्दी तक आते-आते काफी मजबूत हो गई।

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी आते-आते अनुवाद एक स्वतन्त्र साहित्यक विधा के रूप में स्वीकृत हुआ। न केवल संख्या की दृष्टि से बल्कि विषय और क्षेत्र की दृष्टि से भी रूस, जर्मनी, जापान आदि देशों में अनुवादकों की अनेक संस्थाएँ क्रियाशील हुईं। साहित्य, दर्शन, विज्ञान, समाज शास्त्र आदि अनुशासनों में अनुवाद-कार्य तीव्रतर हुआ। यूरोप, अमेरिका, जापान, चीन आदि देशों के आचार्य-अनुवादकों ने प्राचीन ग्रन्थों पर न केवल शोध शुरू किया, बल्कि विश्व के उत्कृष्ट एवं महत्त्वपूर्ण प्राचीन साहित्य को अपनी-अपनी भाषा में रूपान्तरण के कार्य को गति दी। भारतीय साहित्य की महत्त्वपूर्ण रचनाएँ अंग्रेजी, रूसी, चीनी, जापानी आदि भाषाओं में अनूदित होने लगीं। संयुक्त राज्य अमेरिका में कक्षाओं में पर्याप्त अनूदित साहित्य पढ़ाया जाने लगा। समझा जाने लगा कि विदेशी संस्कृति से मिले बगैर राष्ट्र की कोई भी संस्कृति विकास नहीं कर सकती, कक्षा में अनुवाद की समझ पैदा करना इसका बेहतरीन रास्ता है।

अनुवाद का इतिहास एवं परम्परा विषय पर अध्ययन करते हुए *अनुवाद की पश्चिमी परम्परा* शीर्षक इस खण्ड में *पश्चिम में अनुवाद की प्राचीन परम्परा, मध्यकालीन पश्चिम में अनुवाद की परम्परा, आधुनिक यूरोपीय अनुवाद परम्परा,* और *अनुवाद की अमेरिकी एवं कनाडाई परम्पराएँ* शीर्षक की चार इकाइयाँ हैं। इन इकाइयों में अनुवाद की पश्चिमी परम्परा के उक्त सभी आयामों पर सारगर्भित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

इकाई 11 पश्चिम में अनुवाद की प्राचीन परम्परा

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 प्राचीन सुमेर में अनुवाद

11.3 बेबीलोन में अनुवाद

11.4 हित्ती साम्राज्य में अनुवाद

11.5 प्राचीन मिस्र में अनुवाद

11.6 प्राचीन यूनान में अनुवाद

11.7 प्राचीन रोम में अनुवाद

11.8 प्राचीन रोम में अनुवाद-सिद्धान्त

11.9 सारांश

11.10 शब्दावली

11.11 अभ्यास के लिए प्रश्न

11.12 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

11.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.0 उद्देश्य

यह इकाई पश्चिमी अनुवाद की प्राचीन परम्परा से सम्बन्धित है। इस इकाई को पढ़ने से अनुवाद अध्ययन में एम.ए. करने वाले शिक्षार्थियों को पश्चिमी अनुवाद की प्राचीन परम्परा की संक्षिप्त जानकारी मिलेगी। इस इकाई का उद्देश्य है :

- अनुवाद को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करना;
- प्राचीन काल में सुमेर, बेबीलोन, हित्ती साम्राज्य और मिस्र में हुए अनुवादों का परिचय देना;
- प्राचीन यूनान में अनुवाद की स्थिति से परिचय कराना;
- प्राचीन रोम में हुए अनुवादों से परिचय कराना;
- प्राचीन रोम के अनुवाद-चिन्तकों के विचारों का परिचय देना; और
- प्राचीन काल में अनुवाद के क्षेत्र में पश्चिम के योगदान को रेखांकित करना।

11.1 प्रस्तावना

अनुवाद के प्राचीनतम इतिहास के सन्दर्भ में बाइबिल ('जेनेसिस', 2.1-9) में आई 'बैबेल की मीनार' की कहानी की ओर ध्यान चला जाना स्वाभाविक है। यह कहानी अनुवाद की आवश्यकता की ओर संकेत करती है। इस कहानी के अनुसार महाप्रलय के बाद नूह के वंशजों के रूप में केवल एक मनुष्य जाति ही जीवित बची रह गई थी, जिसकी भाषा भी एक ही थी। पर मनुष्य जाति को अपने ऊपर इतना घमण्ड हो गया था, कि उसने सीधे स्वर्ग तक जाने

वाली दुनिया की सबसे ऊँची मीनार बनाना शुरू कर दिया। इस तरह की मीनार बनाने का प्रयास ईश्वर के प्रति चुनौती था। इसलिए ईश्वर ने मनुष्य जाति को अभिशप्त करके उसकी भाषा को अलग-अलग कर दिया। उसी क्षण से मनुष्य अलग-अलग भाषाएँ बोलने लगे और सारी दुनिया में इधर-उधर बिखर गए। भाषाओं की विविधता के कारण उनका सम्पर्क एक दूसरे से कट गया। लोग एक दूसरे की बातों को समझने में असमर्थ हो गए। इस तरह 'बैबेल की मीनार' अधूरी ही रह गई।

इस कहानी का मूल भाव यही है कि विभिन्न भाषाओं के बोलने वालों के बीच मुख्य रूप से अनुवाद द्वारा ही सम्पर्क स्थापित हो सकता है। निश्चय ही भाषाओं की विविधता तथा परस्पर सम्पर्क की आवश्यकता को देखते हुए अनुवाद एक अनिवार्यता है। अनुवाद की यह अनिवार्यता प्राचीन काल से ही रही है। अलग-अलग भाषाओं को बोलने वाली दो जातियों का जब भी सम्पर्क हुआ होगा तो उन्हें मिलाने का काम अनुवादकों के माध्यम से ही सम्पन्न हुआ होगा। किसी अन्य जाति अथवा देश के लिखित साहित्य को जानने की इच्छा भी अनुवाद द्वारा ही पूरी हो सकती थी। इसलिए एक विधा के रूप में अनुवाद की प्राचीनता असन्दिग्ध मानी जा सकती है और अनुवादक का पेशा भी प्राचीनतम पेशों में आता है। स्वाभाविक है कि इतिहास के प्राचीन काल में ही अनुवाद का अस्तित्व किसी-न-किसी रूप में रहा होगा। इसीलिए तो मिस्र, सुमेर, बेबीलोन, हित्ती (Hittite) साम्राज्य जैसी विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में अनुवाद के आरम्भिक स्रोत ढूँढे गए हैं।

इनके बाद आती है प्राचीन यूनानी सभ्यता, जिसमें अनुवाद की मान्यता अपेक्षाकृत कम रही थी। वहीं प्राचीन रोम में अनुवाद को उतनी ही अधिक मान्यता प्राप्त थी। ईसाइयों के प्रमुख धर्मग्रन्थ बाइबिल के अनुवाद को लेकर अनुवाद के सैद्धान्तिक पक्ष की चर्चा भी प्राचीन यूनान में शुरू हो गई थी। पश्चिम में अनुवाद की प्राचीन परम्परा को इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। इस पाठ के आगे के अंशों में यही चर्चा होगी। इस पाठ में बहुत सारे ऐसे नाम आएँगे जिनकी वर्तनी तथा मूल उच्चारण में अन्तर हो सकता है। इसलिए ऐसे नामों की वर्तनी रोमन लिपि में भी दी जाएगी। यद्यपि इससे उनके उच्चारण का पूर्ण स्पष्टीकरण नहीं होता है। रोमन लिपि में वर्तनी देने से उन नामों को अन्यत्र ढूँढने में सुविधा हो सकती है। हिन्दी में ऐसे नामों को लिखने की कोई मान्य परिपाटी नहीं है, इसलिए इनमें से अधिकांश नाम अंग्रेजी में प्रचलित इनके उच्चारण के अनुसार लिखा जा रहा है।

11.2 प्राचीन सुमेर में अनुवाद

प्राचीन सुमेर (वर्तमान ईराक) की सभ्यता विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता मानी जाती है। इसका आरम्भिक काल ई.पू. छह हजार माना जाता है। प्राचीन सुमेर में अनुवाद एक विकसित विधा तथा मान्य पेशा था। यहाँ की लिपि कीलाक्षर कहलाती है, जिसका प्रयोग ई.पू. तृतीय सहस्राब्द से शुरू हो चुका था। सुमेर पर अक्कादियों का आधिपत्य हो जाने के बाद भी सुमेर ने अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखी थी। सामाजिक व्यवहार में तथा राजभाषा के रूप में सुमेरी और अक्कादी दोनों ही भाषाओं का प्रयोग होता था, जिसके प्रमाण हैं सुमेरी-अक्कादी शब्दकोश, व्याकरण की पुस्तकें, तथा इन दोनों भाषाओं की सामान्य प्रयोग की अभिव्यक्तियों की सूचियाँ। इनसे सुमेरी-अक्कादी द्विभाषिकता का पता चलता है। तेईसवीं शताब्दी ई.पू. की प्राचीन सुमेर की मिट्टी की मुद्राओं में अनुवादकों का उल्लेख मिलता है और यह भी बताया गया है कि उन्हें भोजन, पेय आदि उपलब्ध कराए जाते थे। अनुवादकों के प्रशिक्षण के लिए प्राचीन सुमेर में विशेष विद्यालय बनाए गए थे, जिनकी स्थापना ई.पू. तीन हजार में हो चुकी थी।

11.3 बेबीलोन में अनुवाद

प्राचीन बेबीलोन (आधुनिक बगदाद, ईराक के निकट) में भी अनुवाद की बहुत बड़ी भूमिका रही थी। बेबीलोनी साहित्य की विशालता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि यह साहित्य लाखों कीलाक्षर पट्टिकाओं के रूप में आज भी उपलब्ध है। बेबीलोनी सभ्यता का सबसे समृद्ध काल ई.पू. 2150-1740 का माना जाता है और सुप्रसिद्ध हम्मूराबी का शासन भी वहाँ इसी दौरान हुआ था। बेबीलोनी भाषा में सुमेरी भाषा से अनेक अनुवाद किए गए थे। ऐसा माना जाता है कि 12 पट्टिकाओं में कीलाक्षर लिपि में उत्कीर्ण गिल्गामेश काव्य भी किसी सुमेरी कृति पर आधारित है।

11.4 हित्ती साम्राज्य में अनुवाद

प्राचीन हित्ती साम्राज्य (ई.पू. अठारहवीं से तेरहवीं शताब्दी) भी अनुवाद-कार्य के लिए जाना जाता है। हित्ती भाषा भारोपीय परिवार में आती है। हित्ती भाषा में हुर्री भाषा से लिखित अनुवाद हुए थे। हित्ती साम्राज्य के दौरान तैयार किए गए सुमेरी-अक्कादी-हित्ती शब्दकोशों से भी पता चलता है कि उस काल में अनुवाद-कार्य नियमित रूप से होता होगा। उस काल की उपलब्ध सामग्री से पता चलता है कि हित्ती साम्राज्य के अनुवादकों ने स्वच्छन्द अनुवाद भी किए हैं तथा शाब्दिक अनुवाद भी। अर्थात् उन्होंने अनुवाद की दोनों ही पद्धतियों को अपनाया था।

11.5 प्राचीन मिस्र में अनुवाद

ई.पू. अठारहवीं से बीसवीं शताब्दी के प्राचीन मिस्र के लिखित पाठों में अनुवादकों का उल्लेख मिलता है, जिससे यह पता चलता है कि प्राचीन मिस्र में अनुवादकों का एक अलग वर्ग होता था और उनमें पदानुक्रम भी होता था। अनुवादकों का ऐसा वर्ग फ़िराऊनों के कार्यालयों तथा मन्दिरों में हुआ करता था। ये अनुवादक लिखित और मौखिक दोनों ही तरह के अनुवाद करते थे। परन्तु उस काल के कोई भी अनुवाद सुरक्षित नहीं बचे हैं। इसमें मुख्य बात यही है कि उस अत्यन्त प्राचीन काल में भी अनुवादकों का एक वर्ग विद्यमान था जिसे आजकल की सरकारी भाषा में सम्वर्ग अर्थात् 'केडर' कहा जाता है और उस सम्वर्ग में कनिष्ठता तथा वरिष्ठता के अनुसार पदानुक्रम भी था।

प्राचीन मिस्र में अनुवाद के लिखित प्रमाण ई.पू. पन्द्रहवीं शताब्दी के अक्कादी कीलाक्षरों के रूप में मिलते हैं। इनमें प्राचीन मिस्री भाषा से अक्कादी भाषा में राजनयिक पत्र-व्यवहार का अनुवाद किया गया है। अक्कादी भाषा का ही दूसरा नाम बेबीलोनी-असीरियाई भाषा भी है।

सबसे पुराना अनुवादक जिसका नाम बचा रह गया है, वह है आनख़ुरमेस, जो मिस्र का निवासी था और तीनिस का मुख्य पुरोहित भी था। आनख़ुरमेस का काल ई.पू. चौदहवीं शताब्दी माना जाता है।

इसके कुछ समय बाद रामेसेस द्वितीय के राज्यकाल में (ई.पू. तेरहवीं शताब्दी) राजनयिक पत्र-व्यवहार तथा समझौतों के बहुत अधिक अनुवाद हुए। यह प्राचीन मिस्र के इतिहास का सर्वाधिक समृद्ध काल माना गया है।

प्राचीन मिस्र की ई.पू. तीन हजार की एक नक्काशी में अनुवादक का अंकन भी मिलता है। वास्तव में यह अनुवादक दुभाषिया है, जिसे दो अधिकारियों के बीच चल रही बातचीत का अनुवाद करते हुए दिखाया गया है। इस अंकन में एक विशेष बात यह है कि जिन दो अधिकारियों के बीच बातचीत होती दिखाई गई है उनकी आकृतियाँ तो बड़ी हैं, जबकि दुभाषिए की आकृति को बहुत छोटा रखा गया है। दुभाषिये की भूमिका को देखते हुए यह स्वाभाविक ही माना जा सकता है।

इसके बाद व्यापक स्तर पर अनुवाद का काम तब हुआ जब महान अलेक्ज़ेण्डर तृतीय (ई.पू. 356-323) ने प्राचीन मिस्र को अपने अधीन कर लिया। यह ई.पू. 331 की बात है। अलेक्ज़ेण्डर तृतीय के शासकों ने अपने अधीन हुए मिस्र में राजभाषा के रूप में ग्रीक को अपनाया जो स्थानीय जनता के लिए अजनबी भाषा थी। इसलिए स्वाभाविक रूप से, अनुवादकों की आवश्यकता पड़ गई थी।

11.6 प्राचीन यूनान में अनुवाद

प्राचीन यूनानी और रोमन सभ्यता और संस्कृति यूरोपीय सभ्यता और संस्कृति का आधार रही है। छठी शताब्दी ई.पू. से लेकर पहली शताब्दी ई.पू. तक के अपेक्षाकृत अल्प काल में प्राचीन यूनान और रोम में इतना अधिक रचनात्मक काम हुआ कि उसका प्रभाव आने वाले सहस्राब्दों तक पूरे विश्व में किसी-न-किसी रूप में लगातार बना रहा है।

प्राचीन यूनान में रचित विविध प्रकार का साहित्य और उसकी विपुलता आश्चर्यचकित कर देने वाली है। साथ-साथ यह तथ्य भी उतना ही अधिक आश्चर्य में डाल देता है कि प्राचीन यूनान के उपलब्ध साहित्य में एक भी कृति ऐसी नहीं है जो किसी अन्य भाषा से अनूदित की गई हो। इसका यही अर्थ निकलता है कि सम्भवतः प्राचीन यूनान

को किसी अन्य भाषा से अनुवाद करने की आवश्यकता ही न पड़ी हो, क्योंकि उनका अपना साहित्य ही बहुत अधिक समृद्ध था। प्राचीन यूनानी लोग अपने से भिन्न अन्य लोगों को 'बर्बर' समझते थे और 'बर्बर' लोगों की भाषाओं को जानने की इच्छा उनमें नहीं थी। फिर भी अन्य जातियों के लोगों के साथ किसी-न-किसी प्रकार का सम्पर्क तो आवश्यक था, जिसके लिए उन्हें ऐसे दुभाषियों और अनुवादकों को किराये पर लेना पड़ता था जिन्हें ग्रीक (इस पाठ में प्राचीन यूनान की भाषा के लिए 'यूनानी' तथा 'ग्रीक' दोनों ही शब्दों का पर्यायवाची की तरह प्रयोग किया गया है।) भाषा आती थी। प्राचीन यूनान के कुछ अनुवादकों का उल्लेख फ़िलोस्त्रातुस वरिष्ठ (सन् 170-247 ई.) द्वारा लिखित *'त्याना के अपोलोनियस का जीवन चरित'* नामक पुस्तक में मिलता है।

प्राचीन यूनान में तो अनुवाद उपेक्षित ही रहा किन्तु, जैसा कि ऊपर कहा गया है, अपने साम्राज्य का विस्तार करते हुए यूनान के सम्राट अलेक्ज़ेण्डर तृतीय ने जब मिस्र को अपने अधीन किया तो राजभाषा के रूप में ग्रीक को अपनाया और तब अनुवादकों की आवश्यकता अपने आप ही पड़ गई। प्राचीन मिस्र में अलेक्ज़ेण्डर महान ने *अलेक्ज़ेण्ड्रिया* नामक नगर स्थापित किया और उसे अपनी राजधानी बनाया। अलेक्ज़ेण्ड्रिया में ही ई.पू. 250 से 150 के काल में मिस्र के सम्राट टॉलमी (Ptolemy) के आदेश पर बाइबिल के *'पूर्वविधान' (Old Testament)* के पहले पाँच अंशों का प्राचीन हिब्रू से ग्रीक भाषा में अनुवाद किया गया जो *सेप्तुआगिन्त (Septuagint)* नाम से प्रसिद्ध हुआ जिसका अर्थ है 'सत्तर' और इसे रोमन अक्षरों में LXX लिखा जाता है। यह अनुवाद बहत्तर अनुवादकों का सम्मिलित प्रयास था जिसे उन्होंने बहत्तर दिनों में पूरा किया था। बाइबिल का यह अनुवाद स्वच्छन्द अनुवाद माना जाता है क्योंकि अभी वहाँ ईसाई धर्म स्थापित नहीं हुआ था और इसलिए उस अनुवाद में काफ़ी छूट ली गई थी। अनुवाद के इतिहास में *सेप्तुआगिन्त* का महत्त्व इसलिए है क्योंकि यह एक सम्मिलित प्रयास था, धार्मिक ग्रन्थ का यह स्वच्छन्द अनुवाद था और आगे चल कर कई यूरोपीय भाषाओं में इसी के आधार पर बाइबिल के अनुवाद हुए। लैटिन में बाइबिल का सबसे पहला अनुवाद भी *सेप्तुआगिन्त* के आधार पर ही हुआ। प्राचीन काल में यूरोप में कई वर्षों तक कैथोलिक प्रार्थनाओं में इसी का उपयोग होता रहा था।

प्राचीन यूनान में अनुवाद के विषय में कुल मिला कर यही कहा जा सकता है कि प्राचीन यूनान में अनुवाद एक उपेक्षित विधा थी और अनुवादक का पेशा सम्मानजनक नहीं रहा होगा। परन्तु यूनान के बाहर यूनानी साम्राज्य में अनुवाद का निश्चित रूप से विकास हुआ।

11.7 प्राचीन रोम में अनुवाद

अनुवाद के मामले में प्राचीन रोम की भूमिका प्राचीन यूनान से बिल्कुल भिन्न थी। वहाँ पर अनुवाद को बहुत महत्त्व दिया गया था और ग्रीक समेत अन्य भाषाओं से भी लैटिन में अनुवाद किए गए थे। सबसे पहले रोमन सभ्यता का सम्पर्क यूनानी सभ्यता से हुआ और इसलिए ग्रीक भाषा से लैटिन में बहुत अधिक अनुवाद हुए। वस्तुतः शुरू में तो रोमवासी स्वयं अपनी भाषा को तुच्छ और 'बर्बर' मानते थे और ग्रीक भाषा में ही लिखा करते थे।

यूनान के साथ राजनयिक सम्बन्धों में ग्रीक का ही प्रयोग होता था और रोम के प्रभावशाली लोग दुभाषिए का काम करते थे। गाइउस एसीलियस (Gaius Acilius) नामक सीनेटर को रोम का सबसे प्राचीन दुभाषिया माना जाता है। सन् 155 में जब रोम में यूनानी राजनयिकों का आगमन हुआ था तब गाइउस एसीलियस ने ही दुभाषिये का काम किया था। यूनानी राजनयिकों के उस दल में कार्नेआदेस (Carneades), डायोजीनस (Diogenes), क्रितोलाउस (Critolaus) जैसे दार्शनिक शामिल थे। एसीलियस ने ग्रीक भाषा में रोम का इतिहास भी लिखा था।

ग्रीक से लैटिन में अनुवाद की परम्परा का संस्थापक लीविउस अन्द्रोनिकुस (Livius Andronicus) को माना जाता है। टेरेण्टम (Tarentum) नामक स्थान में ई.पू. 272 में यूनानियों की पराजय के बाद लीविउस अन्द्रोनिकुस को युद्ध-बन्दी बना लिया गया था। अन्द्रोनिकुस द्वारा ग्रीक से लैटिन में किए गए अनेक अनुवादों में से होमर के महाकाव्य *ओडिसी* (Odyssey) का अनुवाद विशेष प्रसिद्ध हुआ। लगभग 200 साल तक यह अनुवाद रोम के विद्यालयों में अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाता था। वास्तव में यह अनुवाद नहीं, रूपान्तर है जिसमें अन्द्रोनिकुस ने यूनानी परिवेश तथा वहाँ के देवी-देवताओं को रोमन परिवेश में रूपान्तरित कर दिया है। अन्द्रोनिकुस ने बारह ग्रीक नाटकों का लैटिन में अनुवाद किया था।

हास्य नाटकों के रचयिता टाइटस मैकिअस प्लाउतुस (Titus Maccius Plautus) की रचनाओं में भी अनुवाद और रूपान्तर का सम्मिश्रण है। इनका काल ई.पू. 254-184 माना जाता है। इनके लिखे 52 नाटकों में से 20 ही प्राप्त हैं, जो यूनानी नाटकों के लैटिन रूपान्तर हैं।

प्राचीन रोम में अनुवाद के क्षेत्र में दूसरा महत्त्वपूर्ण नाम है क्विन्तुस एनिउस (Quintus Ennius) का, जिनका काल ई.पू. 239-169 था। एनिउस अनुवादक भी थे और रचनाकार भी। एनिउस के अनुवाद भी अन्द्रोनिकुस के अनुवादों की तरह रूपान्तर की श्रेणी में आते हैं। वस्तुतः प्राचीन रोम में हुए अधिसंख्य अनुवाद यूनानी भाषा की रचनाओं के रूपान्तर ही हैं। एनिउस के एक अनुवाद का मूल्यांकन करते हुए ई.पू. दूसरी शताब्दी के आलोचक औलस गीलियस (Aulus Gellius) ने लिखा है कि उनके अनुवाद की भाषा तो प्रवाहपूर्ण है, परन्तु मूल भाव को अभिव्यक्त करने में असमर्थ है। यही बात उन्होंने ई.पू. तीसरी-दूसरी शताब्दी के नाटककार और अनुवादक कैसीलीयस स्टेटियस (Caecilius Statius) के अनुवादों के बारे में भी कही है जिन्होंने सबसे अधिक अनुवाद मिनेण्डर के नाटकों के किए थे। कैसीलीयस स्टेटियस भी लीविउस अन्द्रोनिकुस की तरह युद्ध-बन्दी थे। अनुवाद का इस तरह का मूल्यांकन किया जाना प्राचीन रोम में सामान्य बात थी और ऐसा कहने में संकोच नहीं किया जाता था कि मूल की तुलना में अनुवाद उतना प्रभावशाली नहीं बन पाया है।

प्राचीन रोम में हुए अनुवादकों में एक अत्यन्त विशिष्ट नाम है पूब्लिउस टेरेन्शियस आफ़ेर (Publius Terentius Afer) जिन्हें टेरेन्स नाम से भी जाना जाता है। इनका काल ई.पू. 190-159 था। टेरेन्स ने ग्रीक भाषा से लगभग 100 हास्य नाटकों का अनुवाद किया था, यद्यपि उनमें से केवल छह नाटक ही उपलब्ध हैं। टेरेन्स ने अपने अनुवादों में न तो पुरानी लैटिन का—'अपभ्रंश' लैटिन का—प्रयोग किया है और न ही अप्रचलित 'पुरानी' पड़ चुकीं अभिव्यक्तियों को अपनाया है, उनकी भाषा परिनिष्ठित लैटिन है। इसलिए उसे मान्यता प्राप्त हुई और उसकी प्रशंसा जूलियस सीज़र ने भी की थी।

ग्रीक भाषा से लैटिन में मुख्यतः नाटकों के ही अनुवाद हुए हैं। काव्य के अनुवादकों में एक प्रमुख नाम गायुस वालेरिउस कैटलस (Gaius Valerius Catullus) का है, जिनका काल ई.पू. 87-57 था। उनका किया हुआ एक ही काव्यानुवाद उपलब्ध—*बेरेनिका के केश* है, जिसके रचनाकार कल्लीमाखुस (Callimachus) थे। यह बहुत बड़ी काव्य-रचना है। कैटलस द्वारा किया गया यह अनुवाद मूलनिष्ठ भी है और उसमें लैटिन भाषा का लालित्य भी आ गया है।

ई.पू. पहली शताब्दी से लैटिन भाषा में यूनानी गद्य की रचनाओं—कहानियों और उपन्यासों—के भी अनुवाद होने लगे थे। इतिहासकार लूसिउस कोर्नेलिउस सीसेन्ना (Lucicius Cornelius Sisenna) ने आरिस्तीदेस (Aristides) की कहानियों का अनुवाद किया था जो मिलेतुस कथानक के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सीसेन्ना का काल ई.पू. 118-67 माना जाता है। इस समय तक आते-आते इतिहास की पुस्तकों के भी अनुवाद होने लगे थे — तीसरी-चौथी शताब्दी के अनुवादक यूलिउस वलेरिउस अलेक्सान्द्र पोलेमिउस (Julius Valerius Alexander Polemius) ने ट्रॉय युद्ध की डायरी तथा अलेक्ज़ेण्डर वृत्तान्त का लैटिन में अनुवाद किया, चौथी शताब्दी में *ट्रॉय के पतन का इतिहास* तथा *यहूदी युद्ध* नामक पुस्तकों के अनुवाद हुए जिनके रचनाकार थे पहली शताब्दी ईसवी के इतिहासकार जोसेफ़ुस फ़्लाविउस (Josefus Flavius)। यहूदियों का प्राचीन इतिहास का अनुवाद ऑरेलियस कास्सिओदोरुस (Auralius Cassiodorus) के निर्देशन में सम्पन्न हुआ था जिनका अनुवाद के क्षेत्र में काफ़ी योगदान माना जाता है। ऑरेलियस कास्सिओदोरुस का काल सन् 490-575 है।

परवर्ती काल के ग्रीक भाषा के अनुवादकों में सबसे प्रमुख नाम है एनिसियस मैनलिउस सेवेरिनुस बोथियस (Anicius Manlius Severinus Boethius) का। इनका काल सन् 480-524 माना गया है। इन्हें संक्षेप में बोथियस नाम से जाना जाता है। बोथियस स्वयं दार्शनिक थे। बोथियस ने यूनान के प्रमुख दार्शनिकों की रचनाओं के अनुवाद करके लैटिन भाषा को समृद्ध किया। उन्होंने पाइथागोरस, टॉलमी, यूक्लीड, प्लेटो, अरस्तू आदि की दार्शनिक रचनाओं का लैटिन में अनुवाद किया। बोथियस के योगदान को स्वीकार करते हुए उन्हें सन्त का दर्जा दिया गया। वे सन्त सेवेरिन के नाम से प्रसिद्ध हुए।

ग्रीक भाषा से भारी संख्या में हुए अनुवादों ने साहित्यिक लैटिन के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्राचीन रोमन साहित्य का बहुत बड़ा अंश उन रूपान्तरित नाटकों का है जो ग्रीक नाटकों पर आधारित थे। उल्लेखनीय है कि रोमन सभ्यता में ग्रीक और लैटिन दोनों ही भाषाओं को मान्यता प्राप्त थी। रोमन लोगों का ग्रीक भाषा के प्रति वैसा दृष्टिकोण नहीं था, जैसा प्राचीन यूनान के लोगों का अन्य भाषाओं के प्रति, जिन्हें वे 'बर्बर' मानते थे।

प्राचीन रोम के परवर्ती काल के बाइबिल के अनुवादकों में सन्त जेरोम (Saint Jerome/Hieronymous) का नाम सबसे ऊपर रखा जा सकता है। सन्त जेरोम का काल सन् 345-420 था। उन्होंने *वुल्गाता* (Vulgata) (अंग्रेजी में इसे Vulgate Bible कहते हैं) शीर्षक से *ओल्ड टेस्टामेण्ट* का लैटिन में अनुवाद किया। इस अनुवाद के लिए हिब्रू भाषा के अपने ज्ञान को सुधारने के लिए वह येरूशलम गए थे। उनका यह अनुवाद अन्य स्रोतों के अतिरिक्त सेप्तुआगिन्त पर भी आधारित था जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है। यूरोप में आरम्भ में ईसाई धर्म का प्रचार लैटिन के ही माध्यम से हुआ जिसमें सन्त जेरोम के इस अनुवाद का भारी योगदान रहा था। रोमन कैथोलिक चर्च में उनके इस अनुवाद की मान्यता अभी तक बनी हुई है। उनका जन्म-दिवस–30 सितम्बर–'अन्तरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

11.8 प्राचीन रोम में अनुवाद-सिद्धान्त

प्राचीन रोम में अनुवाद के सैद्धान्तिक प्रश्नों पर भी विचार किया गया था। अनुवाद पर सैद्धान्तिक बहस ई.पू. द्वितीय शताब्दी में आरम्भ हो गई थी। यह बहस मुख्य रूप से शाब्दिक और स्वच्छन्द अनुवाद को लेकर थी जो वास्तव में, उस काल की व्यावहारिक समस्या थी।

प्राचीन रोम के अनुवाद-चिन्तकों में एक प्रमुख नाम है मार्कुस तूलिउस सिसेरो (Marcus Tullius Cicero)। इनका काल ई.पू. 106 से ई.पू. 43 है। चिचेरो प्रसिद्ध वक्ता, दार्शनिक तथा राजनेता थे। चिचेरो अपनी सूक्तियों के लिए भी प्रसिद्ध हैं, जो अनूदित रूप में विभिन्न भाषाओं में प्रचलित हैं।

उदाहरणार्थ : It is the nature of every person to error, but only the fool perseveres in error (गलती किसी से भी हो सकती है पर मूर्ख बार-बार गलती करता है)। The more laws, the less justice (जितने ज्यादा कानून, उतना कम न्याय)। Never go to excess, let moderation be your guide (अति सर्वत्र वर्जयेत)। A home without books is a body without soul (पुस्तकविहीन पर आत्मारहित शरीर जैसा है) आदि।

चिचेरो ने ग्रीक से लैटिन में पहला अनुवाद 16 वर्ष की अवस्था में किया था। उन्होंने प्लेटो और डेमोस्थनीज़ की कृतियों के भी अनुवाद किए थे। चिचेरो के अनुसार अनुवाद करते समय मूल रचना के अर्थ को ग्रहण किया जाना चाहिए और उसी को लेकर अनुवाद होना चाहिए। अनुवाद के विषय में उन्होंने एक अहम बात यह कही है कि शाब्दिक अनुवाद भाषा की दरिद्रता तथा अनुवादक की असहाय स्थिति का परिचायक होता है। अनुवादक को उस भाषा के नियमों पर चलना चाहिए जिस भाषा में उसे अनुवाद करना है। साथ ही उसे पाठक अथवा श्रोता को भी लक्ष्य में रखना चाहिए। इसी तरह के विचार होरेशियस (Horatius/Horace) ने भी अपनी कृति *काव्य कला* (Ars Poetica) में अभिव्यक्त किए हैं (Ramakrishna 2004, p. 8)। होरेशियस का काल ई.पू. 65 से ई.पू. 8 है।

ऊपर सन्त जेरोम का उल्लेख किया गया है, जिन्होंने बाइबिल का लैटिन में अनुवाद किया था, सन्त जेरोम ने अनुवाद के विषय में अपने विचार बहुत विस्तार से लिखे हैं। अपने अनुवादों की भूमिकाओं, पूर्वपीठिकाओं तथा अनेक पत्रों के रूप में उनके अनुवाद-सिद्धान्त आज उपलब्ध हैं। इसीलिए उनका जन्म-दिवस 'अन्तरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस' (30 सितम्बर) के रूप में मनाया जाता है।

अनुवाद के प्रति सन्त जेरोम के दो अलग-अलग दृष्टिकोण थे। बाइबिल का अनुवाद करते समय उन्होंने उसे मूलनिष्ठ बनाया है, क्योंकि उनका ऐसा विचार था कि इस पावन ग्रन्थ में एक-एक शब्द का महत्त्व है, यहाँ तक कि शब्दों के क्रम का भी महत्त्व है। दूसरी ओर, अपने अन्य अनुवादों के विषय में उन्होंने कहा है कि 'मैंने एक-एक शब्द का नहीं बल्कि एक-एक विचार का अनुवाद किया है।' सन्त जेरोम ने अपने समर्थन में चिचेरो, होरेस तथा और भी बहुत-से अपने पूर्ववर्तियों को उद्धृत किया है।

11.9 सारांश

प्राचीन सुमेर, बेबीलोन, हित्ती साम्राज्य, मिस्र, यूनान और रोम में हुए अनुवाद-कार्य से परिचित होने के बाद सारांशतः उसकी मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार सामने आती हैं :

1. प्राचीन काल में अनुवाद का उपयोग अन्य देशों के साथ राजनयिक सम्बन्धों के लिए किया गया, जैसा कि प्राचीन सुमेर, बेबीलोन, हित्ती साम्राज्य, मिस्र तथा प्राचीन रोम में देखने को मिलता है।
2. प्राचीन काल में विभिन्न देशों में अनुवाद और अनुवादक की स्थिति में बहुत अन्तर था। प्राचीन सुमेर, बेबीलोन, हित्ती साम्राज्य और मिस्र में तो अनुवाद एक विकसित विधा तथा मान्य पेशा था, परन्तु प्राचीन यूनान में अनुवाद उपेक्षित रहा था, तथा अन्य भाषाओं के जानने वालों को 'बर्बर' समझा जाता था। दूसरी ओर, प्राचीन रोम में तो प्रभावशाली लोग ही दुभाषिए का काम करते थे।
3. प्राचीन काल में कुछ देशों में अनुवादकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था भी की गई थी। इस तरह के प्रमाण प्राचीन सुमेर में मिलते हैं।
4. प्राचीन रोम में अनुवाद का उपयोग अपनी भाषा अर्थात् लैटिन को समृद्ध करने के लिए किया गया। इसके लिए यूनानी से लैटिन में अनेक अनुवाद किए गए।
5. प्राचीन यूरोप में ग्रीक और लैटिन दोनों ही भाषाओं को बहुत अधिक मान्यता प्राप्त थी क्योंकि उस काल की यही प्रमुख भाषाएँ थीं परन्तु अनुवाद के क्षेत्र में लैटिन का योगदान ग्रीक से अधिक ही कहना उचित होगा क्योंकि प्राचीन काल में लैटिन में ही सबसे अधिक अनुवाद हुए थे। आरम्भिक काल में यूरोप में ईसाई धर्म का प्रसार भी बाइबिल के लैटिन अनुवादों के माध्यम से ही हुआ।
6. प्राचीन रोम में अनुवाद के सैद्धान्तिक पक्ष पर भी चिन्तन किया गया। यह चिन्तन मुख्यतः शाब्दिक और स्वच्छन्द अनुवाद को लेकर था। लगभग सभी अनुवाद-चिन्तक स्वच्छन्द अनुवाद के पक्षधर थे।

11.10 शब्दावली

प्राचीन सुमेर; प्राचीन बेबीलोन; प्राचीन हित्ती साम्राज्य; प्राचीन मिस्र; प्राचीन यूनान; प्राचीन रोम; शाब्दिक अनुवाद; स्वच्छन्द अनुवाद; मूलनिष्ठ अनुवाद; रूपान्तर; दुभाषिया।

11.11 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. सही (√) अथवा गलत (×) का निशान लगा कर उत्तर दीजिए।

   अ. *बाइबिल* में आई 'बैबेल की मीनार' की कहानी का सम्बन्ध अनुवाद से है।

   आ. प्राचीन सुमेर में राजभाषा के रूप में सुमेरी और अक्कादी दोनों ही भाषाओं का प्रयोग होता था।

   इ. *गिल्गामेश काव्य* भी किसी बेबीलोनी कृति सुमेरी भाषा में अनुवाद है।

   ई. हित्ती साम्राज्य में अनुवाद-कार्य की आवश्यकता नहीं पड़ती थी।

   उ. प्राचीन मिस्र में अनुवादकों का एक अलग वर्ग होता था।

   ऊ. प्राचीन यूनान में अनुवाद एक विकसित विधा तथा मान्य पेशा था।

   ऋ. प्राचीन मिस्री भाषा से अक्कादी भाषा में राजनयिक पत्र-व्यवहार का अनुवाद किया गया है।

   ए. चिचेरो के अनुसार अनुवादक को उस भाषा के नियमों पर चलना चाहिए जिस भाषा में उसे अनुवाद करना है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए।

   अ. संसार के सबसे पुराने ज्ञात अनुवादक का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

   आ. प्राचीन मिस्र की एक नक्काशी में दुभाषियों को किस प्रकार अंकित किया गया है?

   इ. प्राचीन मिस्र में ग्रीक भाषा का प्रयोग कब आरम्भ हुआ?

   ई. प्राचीन यूनान में अनुवाद की क्या स्थिति थी?

   उ. ग्रीक से लैटिन में अनुवाद करने वाले वाले पाँच प्राचीन अनुवादकों के नाम बताइए।

   ऊ. अन्द्रोनिकुस का कौन-सा अनुवाद विशेष प्रसिद्ध हुआ?

   ऋ. अनुवादक के रूप में बोथियस का क्या योगदान था?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

   अ. *सेप्तुआगिन्त* किस कृति का अनुवाद है? अनुवाद के इतिहास में इसका क्या महत्त्व है?

   आ. रोम का सबसे प्राचीन दुभाषिया किसे माना जाता है? उसके विषय में क्या जानकारी उपलब्ध है?

   इ. अनुवाद के रूप में टेरेन्स के बारे में आप क्या जानते हैं?

   ई. सप्त जेरोम के विषय में आप क्या जानते हैं?

   उ. चिचेरो के अनुवाद-विषयक विचारों का परिचय दीजिए।

11.12 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. अ. √

   आ. √

   इ. ×

   ई. ×

   उ. √

   ऊ. ×

   ऋ. √

   ए. √

2. अ. संसार का सबसे पुराना अनुवादक जिसका नाम बचा रह गया है वह है आनखुरमेस। वह मिस्र का निवासी था और तीनिस का मुख्य पुरोहित भी था। आनखुरमेस का काल ई.पू. चौदहवीं शताब्दी माना जाता है।

   आ. प्राचीन मिस्र की एक नक्काशी में दुभाषिए का अंकन मिलता है। इस नक्काशी में दो अधिकारियों के बीच चल रही बातचीत दिखाई गई है। जिन दो अधिकारियों के बीच बातचीत होती दिखाई गई है उनकी आकृतियाँ तो बड़ी हैं जबकि दुभाषिए की आकृति को बहुत छोटी रखी गई है।

   इ. प्राचीन मिस्र में ग्रीक भाषा का प्रयोग तब आरम्भ हुआ जब महान अलेक्ज़ेण्डर तृतीय (ई.पू. 356-323) ने प्राचीन मिस्र को अपने अधीन कर लिया। यह ई.पू. 331 की बात है। अलेक्ज़ेण्डर तृतीय के शासकों ने अपने अधीन हुए मिस्र में राजभाषा के रूप में ग्रीक को अपनाया जो स्थानीय जनता के लिए अजनबी भाषा थी। इसलिए, स्वाभाविक रूप से, अनुवादकों की आवश्यकता पड़ गई थी।

ई. प्राचीन यूनान में दूसरी भाषाओं से अनुवाद ही नहीं हुए हैं। प्राचीन यूनानी लोग अपने से भिन्न अन्य लोगों को 'बर्बर' समझते थे और 'बर्बर' लोगों की भाषाओं को जानने की इच्छा उनमें नहीं थी। फिर भी अन्य जातियों के लोगों के साथ किसी-न-किसी प्रकार का सम्पर्क तो आवश्यक था, जिसके लिए उन्हें ऐसे दुभाषियों और अनुवादकों को किराये पर लेना पड़ता था जिन्हें ग्रीक भाषा आती थी।

उ. ग्रीक से लैटिन में अनुवाद करने वाले पाँच प्राचीन अनुवादकों के नाम इस प्रकार हैं – अन्द्रोनिकुस, प्लाउतुस, एनिउस, कैटलस, सीसेन्ना।

ऊ. अन्द्रोनिकुस द्वारा ग्रीक से लैटिन में किए गए अनेक अनुवादों में से होमर के महाकाव्य *ओडिसी* (Odyssey) का अनुवाद विशेष प्रसिद्ध हुआ। लगभग 200 साल तक यह अनुवाद रोम के विद्यालयों में अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाता था। दरअसल यह अनुवाद नहीं, रूपान्तर है जिसमें अन्द्रोनिकुस ने यूनानी परिवेश तथा वहाँ के देवी-देवताओं को रोमन परिवेश में रूपान्तरित कर दिया है।

ऋ. बोथियस ने यूनान के प्रमुख दार्शनिकों की रचनाओं के अनुवाद करके लैटिन भाषा को समृद्ध किया। उन्होंने पाइथागोरस, टॉलमी, यूक्लीड, प्लेटो, अरस्तू आदि की दार्शनिक रचनाओं का लैटिन में अनुवाद किया। बोथियस के योगदान को स्वीकार करते हुए उन्हें सन्त का दर्जा दिया गया और वह सन्त सेवेरिन के नाम से प्रसिद्ध हुए।

3. अ. *बाइबिल* के 'पूर्वविधान' (Old Testament) के पहले पाँच अंशों का प्राचीन हिब्रू से ग्रीक भाषा में किया गया अनुवाद *सेप्तुआगिन्त* नाम से प्रसिद्ध है। यह अनुवाद बहत्तर अनुवादकों का सम्मिलित प्रयास था जिसे उन्होंने बहत्तर दिनों में पूरा किया था। *बाइबिल* का यह अनुवाद स्वच्छन्द अनुवाद माना जाता है। क्योंकि अभी वहाँ ईसाई धर्म स्थापित नहीं हुआ था और इसलिए उस अनुवाद में काफ़ी छूट ली गई थी। अनुवाद के इतिहास में *सेप्तुआगिन्त* का महत्त्व इसलिए है, क्योंकि यह एक सम्मिलित प्रयास था, धार्मिक ग्रन्थ का यह स्वच्छन्द अनुवाद था, और आगे चल कर कई यूरोपीय भाषाओं में इसी के आधार पर *बाइबिल* के अनुवाद हुए। लैटिन में *बाइबिल* का सबसे पहला अनुवाद भी *सेप्तुआगिन्त* के आधार पर ही हुआ। प्राचीन काल में यूरोप में कई वर्षों तक कैथोलिक प्रार्थनाओं में इसी का उपयोग होता रहा था।

आ. रोम का सबसे प्राचीन दुभाषिया गाइउस एसीलियस नामक सीनेटर को माना जाता है। प्राचीन काल में यूनान के साथ राजनयिक सम्बन्धों में ग्रीक भाषा का ही प्रयोग होता था और रोम के प्रभावशाली लोग दुभाषिए का काम करते थे। सन् 155 में जब रोम में यूनानी राजनयिकों का आगमन हुआ था, तब गाइउस एसीलियस ने ही दुभाषिये का काम किया था। यूनानी राजनयिकों के उस दल में कार्नेआदेस, डायोजीनस, क्रितोलाउस जैसे दार्शनिक शामिल थे।

इ. प्राचीन रोम के अनुवादकों में एक अत्यन्त विशिष्ट नाम है टेरेन्स, जिनका पूरा नाम था पूब्लिउस टेरेन्शियस आफ़ेर। इनका काल ई.पू. 190-159 था। टेरेन्स ने ग्रीक भाषा से लगभग 100 हास्य नाटकों का अनुवाद किया था, यद्यपि उनमें से केवल छह नाटक ही उपलब्ध हैं। टेरेन्स ने अपने अनुवादों में न तो पुरानी लैटिन का–'अपभ्रंश' लैटिन– का प्रयोग किया, न ही अप्रचलित 'पुरानी' पड़ चुकी अभिव्यक्तियों को अपनाया, उनकी भाषा परिनिष्ठित लैटिन है। इसलिए उसे मान्यता प्राप्त हुई और उसकी प्रशंसा जूलियस सीज़र ने भी की थी।

ई. सन्त जेरोम *बाइबिल* के अनुवादक और अनुवाद-चिन्तक के रूप में प्रसिद्ध हैं। प्राचीन रोम के परवर्ती काल के अनुवादकों में सन्त जेरोम का नाम सबसे ऊपर रखा जाता है। सन्त जेरोम का काल सन् 345-420 था। उन्होंने *वुल्गाता* नाम से *ओल्ड टेस्टामेण्ट* का लैटिन में अनुवाद किया। इस अनुवाद के लिए हिब्रू भाषा के अपने ज्ञान को सुधारने के लिए वे येरूशलम गए थे। यूरोप में आरम्भ में ईसाई धर्म का प्रचार लैटिन के ही माध्यम से हुआ जिसमें सन्त जेरोम के इस अनुवाद का भारी योगदान रहा था। रोमन कैथोलिक चर्च में उनके इस अनुवाद की मान्यता अभी तक बनी हुई है। उनका जन्म-दिवस–30 सितम्बर–'अन्तरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

उ. प्राचीन रोम के अनुवाद-चिन्तकों में एक प्रमुख नाम है मार्कुस तूलिउस चिचेरो। इनका काल ई.पू. 106 से 43 है। चिचेरो प्रसिद्ध वक्ता, दार्शनिक तथा राजनेता थे। चिचेरो ने ग्रीक से लैटिन में पहला अनुवाद 16 वर्ष की अवस्था में किया था। उन्होंने प्लेटो और डेमोस्थनीज़ की कृतियों के भी अनुवाद किए थे। चिचेरो के अनुसार अनुवाद करते समय मूल रचना के अर्थ को ग्रहण किया जाना चाहिए और उसी को लेकर अनुवाद होना चाहिए। अनुवाद के विषय में उन्होंने एक अहम बात यह कही है कि शाब्दिक अनुवाद भाषा की दरिद्रता तथा अनुवादक की असहाय स्थिति का परिचायक होता है। अनुवादक को उस भाषा के नियमों पर चलना चाहिए जिस भाषा में उसे अनुवाद करना है। साथ ही उसे पाठक अथवा श्रोता को भी लक्ष्य में रखना चाहिए।

11.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- अलेक्सेयेवा इ.स. 2008 : *अनुवादविज्ञान की भूमिका,* अकादेमिया, मास्को। (रूसी में)
- गार्बोव्स्की नि.को. 2004 : *अनुवाद सिद्धान्त (तेओरिया पेरेवोदा),* मास्को विश्वविद्यालय प्रकाशन गृह, मास्को। (रूसी में)
- गुप्त, गार्गी और गुप्त, विश्वनाथ 1992 : *पश्चिम में अनुवाद-कला के मूल स्रोत,* दिल्ली, भारतीय अनुवाद परिषद।
- गोपीनाथन, जी. 1990 : *अनुवाद : सिद्धान्त एवं प्रयोग,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।
- गोस्वामी, कृष्णकुमार 2008 : *अनुवाद विज्ञान की भूमिका,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- शर्मा, एल.एन. शर्मा 1990 : *अनुवाद चिन्तन,* दिल्ली, विद्या प्रकाशन मन्दिर।
- Jerome 2004 : *'Letter to Pammachius'* (Translated by Kathleen Davis), *The Translation Studies Reader*--Lawrence Venuti (Editor), Routledge, pp. 21-30.
- Ramakrishna, Shantha 2004: 'St. Jerome or Seminal Utterances on Translation', *JISTA,* Vol. 30, pp. 5-12.
- http://n.wikipedia.org/wiki/
- http://www.slovopedia.comè
- http://www.tris.in.ua
- http://www.qtranslate.ru/int-info/translation-history.html
- http://transfero.do.am/publ/1-1-0-43

इकाई 12 मध्यकालीन पश्चिम में अनुवाद की परम्परा

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 अवधि और वर्गीकरण

12.3 विशेषताएँ

- 12.3.1 अनुवाद सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों की उपज
- 12.3.2 अनुवाद को अकादेमिक पहचान
- 12.3.3 अनुवाद को राष्ट्रीय और राजकीय प्रश्रय
- 12.3.4 अनुवाद धार्मिक आस्था का प्रतीक
- 12.3.5 अनुवाद राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान बनी
- 12.3.6 अनुवाद भाषा के विकास में सहायक हुआ
- 12.3.7 अनुवाद लिपि के विकास में सहायक हुआ
- 12.3.8 अनुवाद धार्मिक कट्टरता का परिचायक बना
- 12.3.9 अनुवाद धार्मिक कट्टरता से उन्मुक्ति का साधन
- 12.3.10 अनुवाद ज्ञान की धरोहर को संरक्षित करने में सहायक हुआ
- 12.3.11 अनुवाद एक सामाजिक आवश्यकता बनी
- 12.3.12 अनुवाद ने पुनर्जागरण की नींव रखी
- 12.3.13 अनुवाद कार्य का आधुनिकीकरण
- 12.3.14 अनुवाद केन्द्रों की सक्रियता
- 12.3.15 बगदाद अनुवाद केन्द्र
- 12.3.16 तोलेदो अनुवाद केन्द्र
- 12.3.17 अनुवाद ने विज्ञान के विकास में अहम भूमिका निभाई
- 12.3.18 अनुवादकों की प्रतिष्ठा में इजाफा
- 12.3.19 अनुवाद धार्मिक और भाषाई सहिष्णुता और बहुवादिता का परिचायक

12.4 मध्यकालीन पश्चिम में अनुवाद की दिशाएँ

12.5 मध्यकालीन पश्चिम में अनुवाद की प्रवृत्तियाँ

12.6 अनुवाद सिद्धान्त

- 12.6.1 दान्ते अलीगियरी (सन् 1265-1321)
- 12.6.2 रोजर बेकन (सन् 1220-1292)
- 12.6.3 लियोनार्दो ब्रूनी (सन् 1374-1444)
- 12.6.4 एतीन दोले (सन् 1509-1546)
- 12.6.5 अल्फर्ड
- 12.6.6 जान विकलिफ (सन् 1320-84)
- 12.3.7 अलफान्सो डी (सन् 1400-55)
- 12.3.8 वान इव (सन् 1420-75) और हेनरिक स्टाइनहोवेल (सन् 1412-82)
- 12.6.9 मार्टिन लूथर (सन् 1483)
- 12.6.10 डी इरासमस(सन् 1466-1536)

12.7 प्रमुख अनुवादक

12.7.1 अल्धेल्म (सन् 640-709)

12.7.2 बीद (सन् 673-735)

12.7.3 अफ्रिक (सन् 995-1020)

12.7.4 चौसर (सन् 1340-1400)

12.7.5 काक्स्टन (सन् 1422-91)

12.7.6 विलियम तिन्देल(सन् 1494-1536)

12.7.7 निकोलस ओरेज्मे (सन् 1330-82)

12.7.8 अलफान्सो-X(सन् 1221-1284)

12.7.9 कारटेगेना(सन् 1384-1456)

12.7.10 लोपेज डी पेरो(सन् 1322-1407)

12.7.11 जेरार्ड ऑफ क्रेमोना(सन् 1114-87)

12.7.12 नोटकर गालेन (सन् 950-1022)

12.8 सारांश

12.9 अभ्यास के लिए प्रश्न

12.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

12.0 उद्देश्य

यह इकाई पश्चिमी अनुवाद की मध्यकालीन परम्परा से सम्बन्धित है। इस इकाई को पढ़ने से अनुवाद अध्ययन में एम. ए. करने वाले शिक्षार्थियों को पश्चिमी अनुवाद की मध्यकालीन परम्परा की संक्षिप्त जानकारी मिलेगी। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- मध्यकालीन पश्चिम की अवधि और इस दौर के विभिन्न कालखण्डों को जान सकेंगे;
- मध्यकालीन पश्चिम में अनुवाद की विशेषताएँ जान सकेंगे;
- अनुवाद की दिशा और प्रवृत्ति की चर्चा कर सकेंगे;
- अनुवाद के प्रमुख सिद्धान्तों को समझ सकेंगे; और
- प्रमुख अनुवादकों के बारे में बता सकेंगे।

12.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत खण्ड मध्यकालीन पश्चिम में अनुवाद की विशेषताएँ, दिशाएँ, प्रवृत्तियाँ, सिद्धान्तों और प्रमुख अनुवादकों से सम्बन्धित है। इस इकाई के प्राथमिक खण्ड में मध्यकालीन पश्चिम की अवधि और उसके विभिन्न चरणों को समझेंगे। मध्यकालीन शब्द अंग्रेजी के *मेडिएवल* शब्द का हिन्दी समतुल्य है, जिसे अंग्रेजी में *मिड्ल* के नाम से भी जाना जाता है। हिन्दी में *मेडिएवल* के लिए मध्ययुगीन और मध्ययुगीय शब्दों का भी प्रचलन है। *मेडिएवल* विशेषण रूप है *मिड्ल एज* का। मध्यकालीन पश्चिम में मुख्यतया मध्यकालीन यूरोप की चर्चा होगी, क्योंकि उक्त काल में यूरोप ही पश्चिम का प्रतिनिधित्व कर रहा था।

12.2 अवधि और वर्गीकरण

पश्चिम का मध्यकाल मुख्यतया यूरोप का मध्यकाल है। इसकी समय सीमा पाँचवीं शताब्दी से लेकर पन्द्रहवीं शताब्दी तक की मानी जाती है। किन्तु अनुवाद की प्रवृति और रुझान की दृष्टि से इसमें और अधिक लचीलापन लाने की

गुंजाइश है। इसकी शुरुआत रोमन साम्राज्य के पतन से मानी जाती है और अन्त पुनर्जागरण और आधुनिक काल की शुरुआत से। मध्यकाल के नामाकरण का सन्दर्भ पन्द्रहवीं शताब्दी में मिलता है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार मध्यकाल की निश्चित अवधि सन् 476 में रोमन साम्राज्य का पतन और सन् 1473 में कस्तुन्तुनिया (Constantinople) का पतन है। बेलजियन इतिहासकार हेनरी और डच इतिहासकार जॉन के अनुसार मध्यकाल को तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है :

प्रारम्भिक मध्यकाल	सन् 476-1000
मध्य मध्यकाल	सन् 1000-1300
अन्तिम मध्यकाल	सन् 1300-1453

विशेषतया अनुवाद की दृष्टि से अन्तिम सीमा रेखा सन् 1536 तक करना अधिक समीचीन होगा क्योंकि इस अन्तराल की घटनाएँ मध्यकालीन प्रवृतियों से अधिक प्रेरित जान पड़ती हैं। उस दौरान कुछ घटनाएँ भी ऐसी घटीं, जिसने उक्त दौर को अनुवाद का सन्दर्भ-काल बना दिया। आम तौर पर मध्यकाल को अकादेमिक स्तर से पश्चिम का अन्धकार युग भी माना जाता है, क्योंकि उस दौरान :

1. बौद्धिक सृजन का अभाव था।
2. सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक अराजकता की स्थितियाँ फैली हुई थीं।
3. राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक स्वतन्त्रता का सर्वथा अभाव था।
4. जनजातीय आक्रामण में तेजी आई थी।
5. प्रारम्भिक मध्यकाल की घटनाओं की सम्पूर्ण जानकारी का अभाव था।
6. आमजीवन पर चर्च का वर्चस्व बना हुआ था।
7. सोच मुख्यतया प्रकृतिवाद से प्रेरित था।
8. धार्मिक मदान्धता छाई हुई थी।

हालाँकि बीसवीं सदी के इतिहासकारों में इस बात पर सहमति नहीं दिखती है। आजकल इतिहासकार मध्यकाल के प्रारम्भिक दौर को ही अन्धकार युग की संज्ञा देना अधिक समीचीन समझते हैं। अनुवाद की दृष्टि से मध्यकाल मानवीय इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण मोड़ है, जिसने अनुवाद के माध्यम से ज्ञान की मुख्य धाराओं को अगली पीढ़ी के लिए संगृहित और संचारित किया। अनुवाद की दृष्टि से सम्पूर्ण मध्यकाल को अन्धकारयुग की संज्ञा देना उचित नहीं है। इडवार्ड ग्राण्ट जैसे इतिहासकार के इस कथन पर गौर करें : If revolutionary rational thoughts were expressed in the age of Reason (the 18th century), they were only made possible because of the long medieval tradidition that established the use of reason as one of the human activities.

12.3 विशेषताएँ

12.3.1 अनुवाद सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों की उपज

मध्यकाल की भाषिक, राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक परिस्थितियाँ अनुवाद के लिए लाभदायक साबित हुईं। हालाँकि मध्यकाल के पूर्व, विशेषतया रोमन साम्राज्य के दौर में, अनुवाद के लिए और भी अधिक अनुकूल माहौल था। ईसा पूर्व 58 और 51 के रोमन साम्राज्य ने अनुवाद के लिए अनुकूल माहौल तैयार किया। अनुवाद के माध्यम से ही रोम ने ग्रीक के सांस्कृतिक और बौद्धिक धरोहरों को लैटिन में लाने की सफलता हासिल की। बौद्धिक स्तर पर, रोम को ग्रीक का उत्तराधिकारी बनाने में अनुवाद ने सबसे अधिक सहायता की थी। स्मरणीय है कि अनुवाद को प्रश्रय देने और प्रोत्साहित करने का कार्य रोम ने किया है। इसीलिए तो विद्वानों का मानना है कि मानव समाज के लिए अनुवाद रोम की देन है।

रोम के पतन से भाषिक स्तर पर नई परिस्थितियाँ पैदा हुईं। नौवीं सदी के प्रारम्भ में लैटिन दो भागों में विभक्त हो चुका था—क्लासिकल लैटिन और जनसाधारण लैटिन। लिखित लैटिन यूरोप की लिंगुआ फ्रैंका बन गई—चर्च, कानून और ज्ञान की भाषा के रूप में खासकर। वहीं दूसरी ओर बोलचाल की लैटिन, लिंगुआ रोमन रसटिक, प्रशासकों, सेनाओं और व्यापारियों की भाषा बन चुकी थी। जनसाधारण लैटिन को वलगर लैटिन के नाम से भी जाना जाने लगा। चर्च ने भी इस भाषिक परिणति को स्वीकार किया। मध्यकाल में अनुवाद की नई परम्परा की शुरुआत यहीं से होती है। कहा जाता है कि जिन परिस्थितियों में रोमन साम्राज्य ने अनुवाद की गतिविधियों को आगे बढ़ाया, लगभग वैसी ही परिस्थितियाँ पश्चिम के उभरते साम्राज्यों के समक्ष आन पड़ी थी। अनुवाद को सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ के रूप में समझना लाजिमी है।

12.3.2 अनुवाद को अकादेमिक पहचान

चार्ल्स महान ने कैथेडेरल स्कूलों की स्थापना की थी जो आगे चलकर 12वीं और 13वीं सदी में विश्वविद्यालयों का रूप ले लिया। इसी दौर में यूरोप में विश्वविद्यालयों की स्थापना होने लगी थी। विश्वविद्यालयों ने अनुवाद के लिए आधारभूत संरचना तैयार की। अधिकांश विश्वविद्यालयों की स्थापना इटली, फ्रांस, स्पेन और इंग्लैण्ड में हुई। विश्वविद्यालयों को अध्ययन और ज्ञान का केन्द्र माना जाने लगा। विश्वविद्यालयों के विद्वद्जनों का सम्पर्क एक दूसरे से बढ़ने लगा और ज्ञान विनिमय में एक दूसरे की भागीदारी बढ़ने लगी। इससे अनुवाद को सबसे अधिक लाभ हुआ। विश्वविद्यालय से जुड़े विद्वान अनुवाद के सन्दर्भ में अपने स्वतन्त्र विचार भी प्रकट करने लगे। नतीजतन अनुवाद को इस दौर में अकादेमिक पहचान मिली।

12.3.3 अनुवाद को राष्ट्रीय और राजकीय प्रश्रय

मध्यकाल में अनुवाद को राष्ट्रीय और राजकीय प्रश्रय मिला। छोटे स्तर पर अनुवाद के कई स्कूल कार्यरत थे। सन् 813 में काउन्सिल आफ टूर ने होमलिज को वर्नाकूलर में अनूदित करने की जिम्मेदारी क्लरजियों को सौंपी। उन्होंने समृद्ध संस्कृति और भाषा से विकसित हो रही नई भाषाओं में अनुवाद कार्य को प्रेरित किया। वे स्थानीय भाषाओं को मानक बनाने के पक्षधर थे। नौवीं सदी के मध्य में फ्रांस के शासक चार्ल्स (सन् 823-77) ने अनुवाद कार्य को प्रायोजित किया, जिसका उद्देश्य ग्रीक और लैटिन से फ्रैंच में अनुवाद कार्य को प्रोत्साहित करना था। फ्रांस, ब्रिटेन, इटली, जर्मनी, स्पेन जैसे उभर रहे राज्यों में अनुवाद कार्य राजकीय नीति और योजना के तहत राजा के संरक्षण में करवाया गया। अनुवाद कार्य भाषाओं को सम्वर्द्धित करने का सबसे सक्षम साधन माना गया। राजकीय प्रश्रय से अनुवाद को सम्वर्द्धित होने का विशेष मौका मिला। ब्रिटेन के शासक अल्फर्ड ने राज्य, समाज और भाषा के हित में अनुवाद कार्य को कार्यान्वित करवाया। स्पेन, फ्रांस, ब्रिटेन एवं यूरोप के कई अन्य उभरते राष्ट्रों में अनुवाद राष्ट्रीय नीति का प्रमुख अंग था।

12.3.4 अनुवाद धार्मिक आस्था का प्रतीक

धर्मसुधारवादियों के लिए अनुवाद धार्मिक आस्था का प्रतीक बना। चौदहवीं सदी के प्रारम्भिक दौर में विकलिफ ने धर्मसुधार आन्दोलन चलाया, जिसका उद्देश्य सरल भाषा में बाइबल के सन्देश को आम लोगों तक पहुँचाना था। ईसाई धर्म के प्रचार और प्रसार से अनुवाद को नई ऊर्जा मिली और एक नई भूमिका में अपनी उपस्थिति दर्ज की। बाइबल के सन्देश को आमलोगों तक पहुँचाने में अनुवाद सबसे मददगार सिद्ध हुआ। ईश्वर के शब्दों का प्रचार और प्रसार करना अनुवाद का फर्ज माना जाने लगा। सन् 1073 में ग्रेगरी VII ने चर्च की नई अवधारणाओं को परिभाषित करने की कोशिश की। उनका मानना था कि चर्च का उद्देश्य विश्व में सही व्यवस्था सृजित करना है न कि उससे विमुख होना। बाइबल के अलावा मध्यकालीन पश्चिम में अन्य धार्मिक ग्रन्थों का अनुवाद भी हुआ। प्रवासन के दौर में ईसाई धर्म का विस्तार और प्रचार-प्रसार बड़े पैमाने पर हुआ। खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ रोमन साम्राज्य का वर्चस्व नहीं था और जिनकी भाषाओं में बाइबल लिखित रूप में उपलब्ध नहीं था। नतीजतन चर्च को बाइबल के अनुवाद के माध्यम से नई भाषाओं को लिखित रूप प्रदान करने का मौका मिला।

12.3.5 अनुवाद राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान बनी

स्थानीय भाषाओं में राष्ट्रीय अस्मिता को पहचान दिलाने में अनुवाद ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। राष्ट्रीय भाषाओं के अभ्युदय ने भाषाई अस्मिता को नई पहचान दी। मध्यकाल में भाषाई स्तर पर राष्ट्रों को अपनी राजनीतिक पहचान बनाने में सर्वाधिक सफलता मिली। भाषाई राष्ट्रीयता की नींव रखी जाने लगी और क्षेत्रीय भाषाएँ अपनी भौगोलिक और राष्ट्रीय सीमाओं से भी पहचान बनाने लगी। क्षेत्रीय भाषाएँ प्रशासनिक एवं बोलचाल की भाषा के रूप में अपनी स्थिति मजबूत कर ली। हालाँकि विद्वानों की भाषा लैटिन बनी हुई थी। राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्तरों पर उभर रहे नए राष्ट्रों के राजाओं ने क्लासिकल ग्रन्थों का अनुवाद राष्ट्रीय भाषाओं में करवाए ताकि राष्ट्रीय भाषाओं के प्रति आम लोगों की अभिरुचि बढ़े और राष्ट्रीय भाषा समृद्धि प्राप्त कर सके। इंगलैण्ड के महान शासक अल्फर्ड ने अंग्रेजी में अनुवाद के कार्य को इसी ख्याल से व्यापक स्तर पर प्रायोजित करवाया। नतीजतन अनुवाद राष्ट्रीय अस्मिता के प्रश्नों से अपना ताल्लुक रखने लगा। पश्चिम ने अनुवाद को राष्ट्रीय स्तर पर पालित पोषित किया और अपने आप को अग्रणी बनाने में अनुवाद से सबसे अधिक सहायता ली। अनुवाद की निर्बाध गतिविधियाँ यह दर्शाती हैं कि अनुवाद के प्रति पश्चिम सदैव संवेदनशील रहा है। पश्चिम में अनुवाद को जिस कदर वैधानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक, शासकीय प्रश्रय मिला, वैसा उदाहरण अन्य जगहों पर नहीं मिलता है। नतीजतन, मध्यकाल में यह कार्य राष्ट्रीय स्तर पर उन्मादपूर्ण रहा है। अनुवाद भाषा और संस्कृति के बीच तादात्म्य स्थापित करने में सक्षम हुआ। ब्रिटेन, फ्रांस एवं कई अन्य यूरोपीय राष्ट्रों की वैभवशाली और शक्तिशाली शासकीय ढाँचा ने अनुवाद को प्रोन्नति की नई दिशा दिखाई। देशीयता और विदेशीयता के अन्तराल में रहकर भी अनुवाद को समृद्ध होने का मौका मिला।

12.3.6 अनुवाद भाषा के विकास में सहायक हुआ

सौभाग्यवश पश्चिम में मध्यकाल के पूर्व से ही भाषा को समृद्ध करने का सबसे महत्त्वपूर्ण साधन अनुवाद रहा है। मध्यकाल में ऐसी प्रवृतियाँ और भी सबल दिखाई पड़ती हैं। विशेषतया अनुवादकों ने राष्ट्रीय भाषाओं की समृद्धि और विकास में अहम भूमिका निभाई। अंग्रेजी, फ्रेंच, स्वीडिश, जर्मन, इतालवी एवं कई अन्य भाषाओं के विकास में अनुवादकों की भूमिका सबसे सराहनीय रही है। अनुवाद के माध्यम से कई यूरोपीय भाषाओं का अभ्युदय इस बात का गवाह है कि पश्चिम में अनुवाद को भावनात्मक, सामाजिक और राजनीतिक स्तरों पर सहेजा गया है। ईसाई पुस्तकों के अनुवाद के माध्यम से जर्मन पश्चिम की मानक और समृद्ध भाषा बनी। भाषाविदों के अनुसार लिखित ओल्ड हाई जर्मन का अभ्युदय और विकास बाइबल के अनुवाद की मारफत ही सम्भव हो पाया। अल्फर्ड (सन् 849-99), चॉसर (सन् 1340-1400), विलियम कास्टन (सन् 1422-91), जॉन विकलिफ (सन् 1320-84) और विलियम तिनडेल (सन् 1494-1536) ने अनुवाद के माध्यम से अंग्रेजी को विकसित करने की कोशिश की थी।

12.3.7 अनुवाद लिपि के विकास में सहायक हुआ

मध्यकाल में अनुवाद के माध्यम से पश्चिम की कई भाषाओं की लिपियों का विकास भी सम्भव हुआ। मध्यकाल के प्रवेश-द्वार तक गोथिक मुख्यतया मौखिक भाषा थी और लिपि का विकास उफिला ने किया । अरमेनियाई लिपि का विकास भी सन् 392 -441 के बीच हुआ, जिसमें मेस्रॉप मेशटॉट्स (Mesrop Mashtots) ने अनुवाद के माध्यम से अहम भूमिका निभाई। वे ग्रीक, फारसी, सीरियाई और अरमेनीयाई के अधिकारिक विद्वान थे। स्लाविक भाषा की लिपि के विकास में भी अनुवाद की भूमिका सराहनीय रही है। सन्त क्राइल और मेथोडियस (सन् 863) ने अनुवाद के माध्यम से लिपि का विकास किया। स्लाविक संस्कृति के विकास में भी दोनों ग्रीक भाइयों ने अहम भूमिका निभाई। क्राइल के बारे में रोजर बर्नाड ने तो यहाँ तक कहा कि : He recorded the ancient language of the Slaves with astonishing precision; his translation, based on sound methodology, were clearly superior to all other medieval translation (सन् 1990:1031)।

12.3.8 अनुवाद धार्मिक कट्टरता का परिचायक बना

मध्यकाल में अनुवाद को प्रोत्साहित, प्रायोजित, प्राधिकृत, अधिकृत, संस्करणीय और सम्वर्धित करने में कैथोलिक चर्च की भूमिका सबसे महत्त्वपूर्ण रही है। लेकिन इसकी मार्यदा मुख्यतया 'लैटिन से' और 'लैटिन में' तक ही सीमित थी। कई मायने में इनकी सोच साकारात्मक नहीं थी। कैथोलिक चर्च के पादरियों ने लैटिन को आदर्श माना और स्थानीय भाषाओं को विचलित और आदर्शहीन। इसलिए क्षेत्रीय भाषाओं में धार्मिक ग्रन्थों के अनुवाद के पक्षधर अनुवादकों को

चर्च की ओर से कठोर सजा भी दी गई और उनकी कृतियों को नष्ट करने का भरपूर प्रयास भी किया गया। तिन्देल का उद्देश्य भी सरल भाषा के जरिए बाइबल के सन्देश को जन-जन तक पहुँचाना था। इसी जोखिम भरे कार्य के लिए उन्हें मौत की सजा मिली। एतीन दोले के साथ भी ऐसा ही हुआ। सन् 1506-26 के बीच कई ऐसी निर्मम घटनाएँ घटीं, जो अनुवाद के लिए कलंक के समान है।

12.3.9 अनुवाद धार्मिक कट्टरता से उन्मुक्ति का साधन

सौभाग्य की बात है कि मध्यकाल के अन्तिम दौर में अनुवाद धार्मिक कट्टरता से उन्मुक्ति पाने का साधन बन गया। मानव समाज को एक नया सन्देश देने में अनुवाद कामयाब हुआ। अनुवाद के माध्यम से धार्मिक सन्देशों को आम लोगों तक पहुँचाने में सहायता मिली। इरासमस, तिन्देल, मार्टिन लूथर एवं कई अन्य महान अनुवादकों ने चर्च के अधिकारों और आडम्बर पर कटाक्ष करते हुए नई चुनौतियाँ पेश कीं। इनके कार्यों और उपदेशों ने अनुवाद के माध्यम से धर्मसुधार की नींव डाली। चर्च बोलचाल की भाषा में बाइबल के पठन-पाठन एवं क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद उपलब्ध कराने का घोर विरोध कर रहा था। उक्त दौर में अनुवाद कलह के दौर से गुजर रहा था। दो विपरीत परिस्थितियाँ आन पड़ी थीं : एक ओर चर्च बाइबल एवं अन्य धार्मिक ग्रन्थों के वर्नाकूलर भाषाओं में अनुवाद पर आपत्ति जता रहा था, वहीं दूसरी ओर धर्मसुधारवादी अनुवादक बाइबल एवं अन्य धार्मिक ग्रन्थों के सन्देश को आम लोगों की भाषा में पहुँचाने के लिए कृतसंकल्प दिखाई दे रहा था।

12.3.10 अनुवाद ज्ञान की धरोहर को संरक्षित करने में सहायक हुआ

सच है कि मानवीय ज्ञान अनुवाद के माध्यम से ही संरक्षित हो सका है। सौभाग्य की बात है कि अन्धकार युग के दौर में पश्चिमी ज्ञान को अनुवाद के माध्यम से अरबी में संरक्षित किया जा सका। वहीं दूसरी ओर यूरोपीय भाषाओं में अरबी के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के अनुवाद से पश्चिम को चौतरफा लाभ हुआ। ज्ञान विनिमय के साथ अनुवाद ने ज्ञान संरक्षण का भी कार्य किया है। चिकित्सा, अलजेबरा और दशमलव जैसे गणितीय विचारों से पश्चिम वाकिफ हुआ। पश्चिम में छाई अन्धकार युग की घटा को छाँटने का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य अनुवाद ने ही किया है। अनुवाद कार्य की इस दिशा ने पश्चिम के बौद्धिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक सूत्रों को इतना प्रभावित किया कि इतिहासकारों ने इसे यूरोप का प्रथम पुनर्जागरण काल की संज्ञा दी।

12.3.11 अनुवाद एक सामाजिक आवश्यकता बनी

जैसा कि बताया गया है मध्य के प्रारम्भिक दौर से ही लैटिन स्थानीय स्तर पर संकुचित और बिखरने लगी थी और आम आदमी से इसका वास्ता समाप्तप्राय हो गया। क्षेत्रीय भाषाओं में सम्प्रेषण भाषिक यथार्थ का अहम हिस्सा बन गया। नतीजतन अनुवाद उस दौर की सामाजिक आवश्यकता बन गई। मध्यकाल में अनुवाद ने क्षेत्रीय भाषाओं को नई शक्ति दी। फोलेना ने अपने आलेख में स्पष्ट तौर पर कहा कि मध्यकालीन दौर के अनुवाद को मुख्यतया दो दृष्टियों से समझा जा सकता है :

क्षैतिज : यानी कि प्रतिष्ठित और ख्यातिप्राप्त मूल भाषा से क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद—जैसे लैटिन से अन्य भाषाओं में अनुवाद।

रैखिक : दो समान प्रतिष्ठित भाषाओं के बीच परस्पर अनुवाद—जैसे इतालवी और फ्रेंच के बीच अनुवाद।

अनुवाद भूत और वर्तमान को एक सूत्र में बाँधने में सहायक हुआ। मध्यकालीन यूरोप की परिस्थितियाँ कुछ ऐसी थीं कि अनुवाद एक सहज सामाजिक निदान के रूप में उभरा।

12.3.12 अनुवाद ने पुनर्जागरण की नींव रखी

सौभाग्य की बात है कि पश्चिम में सांस्कृतिक पुनर्निमाण की प्रक्रिया की शुरुआत आठवीं सदी में ही प्रारम्भ हुई। सन् 800 में क्रिश्चियन दिवस के दिन चार्लमैग्ने (Charlemagne) का शाही राज्याभिषेक मध्यकालीन यूरोप का महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक पड़ाव है। सन् 476 से चली आ रही सत्ता की रिक्तता की भरपाई कुछ हद तक हुई एवं कला, साहित्य और शिक्षा के क्षेत्रों में वृद्धि हुई, इसे कैरोलिंजियाई पुनर्जागरण के नाम से जाना जाता है। पाँचवीं-छठी सदी

में हुए बर्बर आक्रमणों के बाद लैटिन का समुचित पठन-पाठन पहली बार प्रारम्भ हुआ। कई परियोजनाओं की शुरुआत हुई, जिसका मुख्य उद्देश्य स्थानीय भाषाओं में ईसाई धर्म के सन्देशों का प्रचार-प्रसार करना था। मध्यकालीन यूरोप के इस महत्त्वकांक्षी और शक्तिशाली राजा के शासनकाल में अनुवाद की दो भिन्न प्रवृतियाँ देखने को मिलती हैं : स्थानीय भाषा में अनुवाद की महत्ता और साहित्यिक लैटिन भाषा का संरक्षण और प्रोत्साहन। लैटिन से इनके लगाव के बारे में डब्लू. डी इल्कोक ने तो यहाँ तक कहा कि—The real restoration of literary Latin was brought about through the personal interest and energy of Charlemagne (1975:337)। आज वे सिर्फ जर्मन और फ्रेंच के जनक के रूप में ही नहीं जाने जाते बल्कि सम्पूर्ण यूरोप के जाने जाते हैं। रोम पतन के बाद उन्होंने यूरोप को पहली बार एकीकृत करने की कोशिश की और आम यूरोपीय अस्मिता की भी नींव डाली। कैथोलिक चर्च के माध्यम से उन्होंने यूरोपीय संस्कृति, कला और धर्म को प्रोत्साहित किया। उन्होंने एक दूसरे के सम्पर्क सूत्र में बाँधने की कोशिश की ताकि संस्कृति और ज्ञान का सृजन हो सके। बारहवीं शताब्दी में मानववादी विचारों का अभ्युदय एक महत्त्वपूर्ण बौद्धिक आन्दोलन था जिसका प्रभाव विश्वव्यापी था। यूनान के धर्मशास्त्रीय तथा नैतिक ग्रन्थों की खोज पुनः शुरू हुई और अनुवाद के कार्य को प्रोत्साहित किया गया। पेरिस, बोलोन और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालयों की स्थापना उस युग की बौद्धिक चेतना को दर्शाता है।

12.3.13 अनुवाद कार्य का आधुनिकीकरण

प्रिण्टिंग प्रेस के अविष्कार से अनुवाद के क्षेत्र में नई चेतना की लहर दौड़ी—खासकर, बाइबल अनुवाद के क्षेत्र में। न्यू टेस्टामेण्ट की छपाई सन् 1525 में हुई। पन्द्रहवीं और सोलहवीं सदी के बीच बाइबल का अनुवाद प्रोटेस्टेण्ट और कैथोलिक मान्यताओं के अनुरूप अनेक यूरोपीय भाषाओं में उपलब्ध हो चुका था। उदाहरण स्वरूप :

सन् 1482 में हिब्रू पेण्टाक की छपाई बोलोग्ना में हुई।

सम्पूर्ण हिब्रू बाइबल का प्रकाशन सन् 1488 में हुआ।

प्रथम ग्रीक न्यू टेस्टामेण्ट का अनुवाद सन् 1516 में बास्ल में इरासमस द्वारा किया गया।

मार्टिर्न लूथर बाइबल का जर्मन बाइबल सन् 1522 में उपलब्ध हुआ ।

डेनीस भाषा में न्यू टेस्टामेण्ट का प्रकाशन सन् 1529 में हुआ और फिर सन् 1550 में प्रकाशित किया गया।

इसी तरह स्वीडिश भाषा में सन् 1526-41 के बीच हुआ।

चेज भाषा में बाइबल का अनुवाद सन् 1579 से 1593 के बीच हुआ।

12.3.14 अनुवाद केन्द्रों की सक्रियता

इस दौर में यूरोप और उससे बाहर कई महत्त्वपूर्ण अनुवाद केन्द्र थे जिसने अनुवाद को पालित, पोषित और सम्वर्द्धित किया। इन केन्द्रों ने अनुवाद के माध्यम से ज्ञान को संरक्षित, सम्वर्द्धित और प्रवाहित करने का कार्य किया है। जिन डेलिसले और जुदिथ उडस्वर्थ की इन बातों पर गम्भीरतापूर्वक गौर करना चाहिए :

Ancient Greek and Syriac manuscripts were housed in Bayt-al-Hikma or 'House of Wisdom" in Baghdad, where they were translated into Arabic in the ninth Century. In the twelvth century, these Arabic translations many of which have outlived their originals, were translated into Latin in Toledo. Many of these Latin translations, medical works particularly, were subsequently translated into vernacular.

12.3.15 बगदाद अनुवाद केन्द्र

नौवीं-दसवीं शताब्दी के अन्तराल में इराक का बगदाद शहर अनुवाद का सबसे सक्रिय और महत्त्वाकांक्षी अनुवाद केन्द्र था जिसका मुख्य उद्देश्य प्राचीन ग्रीक, लैटिन एवं अन्य भाषाओं में उपलब्ध वैज्ञानिक और दार्शनिक ग्रन्थों का अरबी में अनुवाद करना था। उक्त समय में अरबी उभरते इस्लामिक साम्राज्य की भाषा थी। इस केन्द्र में सीरियाई, फारसी और संस्कृत ग्रन्थों का भी अनुवाद करवाया गया।

12.3.16 तोलेदो अनुवाद केन्द्र

स्पेन का अधिकांश हिस्सा सन् 711 से 13 वीं शताब्दी तक इस्लामिक शासन के अधीन था। अनुवाद के माध्यम से अरबीभाषी इस्लामिक समुदाय और रोमनभाषी ईसाई समुदाय को बौद्धिक, सांस्कृतिक और समाजिक सूत्रों में बाँधने का श्रेय इसी स्कूल को जाता है। तोलेदो में तीन तरह के अनुवादक थे :

यहूदी : विशिष्ट यहूदी समाज के विद्वद्जन

कन्वर्स : ईसाइयत को स्वीकारने बाले यहूदी, और

मोजेरब : इस्लाम के अधीन ईसाई

इस स्कूल में लब्धप्रतिष्ठ अन्तरराष्ट्रीय अनुवादक कार्यरत थे, जिन्होंने अरबी ग्रन्थों का लैटिन में अनुवाद किया। सिसली और कस्तुन्तुनिया (Constantinople) की तरह स्पेन भी इस्लाम और ईसाई के बीच एक बहुसांस्कृतिक क्षेत्र था। उक्त दौर में इस्लामिक स्पेन के पास सर्वाधिक उन्नत ज्ञान उपलब्ध था, जिसका मुख्य कारण नौवीं शताब्दी में ग्रीक और लैटिन ग्रन्थों का अरबी में अनूदित होना था। बारहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दौर से ही अरबी ग्रन्थों का लैटिन में नियमित अनुवाद होना प्रारम्भ हो गया था। यहीं से अनुवाद की एक निर्धारित नई दिशा दिखाई पड़ती है। तोलेदो बौद्धिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का केन्द्र बना। मध्यकालीन यूरोप को विज्ञान और दर्शन से साक्षात्कार कराने का श्रेय इसी केन्द्र को जाता है। आयुर्विज्ञान, खगोलशास्त्र, गणित, तन्त्रविद्या से सम्बन्धित ग्रन्थों के अनुवाद पर विशेष ध्यान दिया गया। समयानुसार, इस केन्द्र में दो मुख्य भाषिक प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं :

1. 12वीं शताब्दी में अनुवाद कार्य मुख्यतया अरबी से लैटिन में
2. 13वीं शताब्दी में अरबी से स्थानीय स्पैनिश भाषा में

तोलेदो स्कूल में अरबी से लैटिन में किया गया अनुवाद मुख्यतया शब्दानुवाद ही था। वैज्ञानिक और दार्शनिक ग्रन्थों के अनुवाद में इस प्रक्रिया का अनुकरण बोथियुस के काल से ही देखा जा सकता है।

12.3.17 अनुवाद ने विज्ञान के विकास में अहम भूमिका निभाई

पुनर्जागरण काल के इतालवी दार्शनिक ब्रूनो (सन् 1548-1600) के अनुसार–from translation all science has its off spring–अर्थात विज्ञान की सभी सन्ततियाँ अनुवाद से विकसित हुई हैं। मध्यकालीन अनुवाद की गतिविधियाँ विज्ञान के विकास में प्रेरणा की स्त्रोत रही हैं। कुछ विद्वानों का यहाँ तक मानना है कि अनुवाद विज्ञान के विकास में एक महत्त्वपूर्ण स्तम्भ रहा है एवं विज्ञान को सार्वभौमिक पहचान दिलाने में अनुवाद ने सबसे अधिक सहायता की है। हेनरी के अनुसार–translation was key to scientific progress as it unlocked for each successive inventor and discover the mind of predecessors who expressed their innovative thoughts in another language (1992:194)–कहा जा सकता है कि विज्ञान के विकास में अनुवाद की भूमिका स्मरणीय और सराहणीय दोनों है। अनुवाद के माध्यम से सम्पूर्ण मध्यकाल में विज्ञान की तरक्की हुई। कुछ केन्द्रों का रुझान विज्ञान की ओर विशेष रहा है। मेडिकल, खगोलशास्त्र और गणित के क्षेत्रों में अनुवाद का योगदान अग्रणी है। वैज्ञानिक प्रविधि की नींव मध्यकाल में ही पड़ी है और विज्ञान दर्शन से अलग एक नई विधा के रूप में उभरी। विज्ञान ने मध्यकाल में अनुवाद के माध्यम से कई उपलब्धियाँ हासिल कीं।

ब्रूनी, रोजर बेकन और अलहाजेन की बदौलत मध्यकाल में सिद्धान्तों की नई प्रवृत्तियाँ विकसित हुईं एवं वैज्ञानिक पद्धतियाँ भी विकसित हुईं। रॉबर्ट ने निरीक्षण, उपकरण और सत्यापन के जरिए वैज्ञानिक खोज की पद्धतियों को समुचित माना। वहीं दूसरी ओर मध्यकाल में बीजगणित और अंकगणित का विकास भी मानव इतिहास में अपूर्व घटना है। कहा जाता है कि इस्लामिक विद्वान अल-ख्वाजमी की दो पुस्तकों ने इस्लामिक एवं ईसाई गणितीय विधा को सदा के लिए नया चेहरा प्रदान किया। उनकी पुस्तक *न्यूमरो इण्डोरम* (numero indorum), जिसका मात्र लैटिन अनुवाद संरक्षित है, नौवीं सदी में अरब समुदाय को हिन्दु दशमलव पद्धति से परिचय कराया और बारहवीं सदी में पश्चिम को। उनकी दूसरी किताब *अल किताब अल मुख़्तसर फी हिसाब अल-जबर वल मुक़ाबला* (*al kitab al mukhtasar*

fi hisab al-jabar wal-muqabala) अंकगणित का प्रथम प्रमाणिक संग्रह है जो बेबीलोनी, ग्रीक और भारतीय तथ्यों पर आश्रित है।

12.3.18 अनुवादकों की प्रतिष्ठा में इजाफा

मध्यकाल में अनुवादकों को समाज का एक प्रतिष्ठित वर्ग माना जाने लगा। राजनीतिक स्तर पर भी अनुवादकों की भूमिका बढ़ी। सत्ता से अनुवादकों का सम्पर्क बढ़ा और मन्त्रिमण्डल में उनकी भागीदारी सुनिश्चित की गई। अनुवादकों को आर्थिक अनुदान भी दिया जाने लगा। स्पेन के शासक अल्फान्सो-10 ने अपने शासन काल में अनुवादकों के लिए वांछित ग्रन्थों के अनुवाद के लिए पारितोषिक देने व्यवस्था की। चौदहवीं शताब्दी में फ्रांस के शासक चार्ल्स-5 ने अपने महत्त्वपूर्ण अनुवादकों को लैटिन से फ्रेंच में अनुवाद के लिए आर्थिक रूप से सम्पन्न बनाया।

12.3.19 अनुवाद धार्मिक और भाषाई सहिष्णुता और बहुवादिता का परिचायक

सौभाग्य की बात है कि तमाम धार्मिक, राष्ट्रीय और भाषाई कटुता के बावजूद अनुवाद ने धार्मिक और भाषाई सहिष्णुता और बहुवादिता को प्रेरित किया। अनुवाद के क्षेत्र में ईसाई और इस्लामिक तालमेल इसका प्रबल उदाहरण है। पश्चिम ने इस्लामिक ग्रन्थों का अनुवाद अन्य की बौद्धिक और धार्मिक शक्तियों और कमजोरियों को जानने के लिए किया। तेरहवीं शताब्दी में *किताब अल मिराज* का अनुवाद लैटिन, फ्रेंच और कस्तालियन में कराया गया। बारहवीं शताब्दी में रॉबर्ट ऑफ चेस्टर ने *कुरान* का अनुवाद लैटिन में किया। तेरहवीं शताब्दी में पुनः *कुरान* का बेहतरीन अनुवाद मार्क ऑफ तोलेदो ने किया। सन् 1543 में थियोडोर बिबलियाण्डर ने *कुरान* की छपाई की। सन् 1550 में *बिबलियाण्डर कुरान* का पुनर्प्रकाशन हुआ। जर्मन में *कुरान* का अनुवाद सन् 1616 में और डच में सन् 1641 में हुआ। *कुरान* की प्रशंसा किए बिना औरों की धार्मिक आस्थाओं के प्रति पश्चिमी विद्वानों की जिज्ञासाएँ बढ़ी।

12.4 मध्यकालीन पश्चिम में अनुवाद की दिशाएँ

राष्ट्रीय, धार्मिक, भाषाई मान्यताओं एवं प्रतिष्ठा के अनुसार मध्यकाल में अनुवाद कार्य की तीन दिशाएँ जान पड़ती हैं :

केन्द्रापसारी (Centrifugual) : पश्चिमी देशों, केन्द्रों और भाषाओं से इस्लामिक देशों, केन्द्रों और भाषाओं में अनुवाद।

केन्द्राभिगामी (Centripetal) : इस्लामिक देशों, केन्द्रों और भाषाओं से पश्चिमी देशों, केन्द्रों और भाषाओं में अनुवाद।

समानान्तरीय (parallelistic) : पश्चिम में विकसित हो रहे प्रतिष्ठित राष्ट्रीय भाषाओं और समान धार्मिक मान्यताओं वाले राष्ट्रों के बीच अनुवाद।

12.5 मध्यकालीन पश्चिम में अनुवाद की प्रवृत्तियाँ

जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है मध्यकालीन पश्चिम में अनुवाद की दो परस्पर विरोधाभासी प्रवृतियाँ आमतौर पर देखने को मिलती हैं :

1. क्लासिकल भाषाओं की लोकप्रियता में वृद्धि,
2. स्थानीय भाषाओं के प्रति नैतिक जिम्मेदारी में बढ़ोतरी

सम्पूर्ण मध्यकाल में बाइबल के अनुवाद की परम्परा से स्पष्ट हो जाता है कि स्थानीय भाषाओं में *बाइबल* की कहानियों का अनुवाद गद्यानुवाद और पद्यानुवाद की प्रतिच्छवि के रूप में प्रस्तुत किया गया है—खासकर ओल्ड और न्यू टेस्टामेण्ट के तुलनात्मक अधिमिश्रण को कायम रखने के लिए। प्रारम्भिक मध्यकालीन यूरोप में *बाइबल* का अनुवाद सीमित स्तर

पर हुआ है। *कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ बाइबल* के अनुसार मध्यकाल में *बाइबल* के अनुवाद में धीमी गति का कारण निम्नलिखित रहा है :

1. वर्नाकूलर का विकास
2. वर्नाकूलर भाषाओं की अस्पष्टता और मानकीकरण का अभाव
3. भाषिक एवं सांस्कृतिक प्रतिष्ठा का अभाव

दूसरा महत्त्वपूर्ण कारण तो आर्थिक भी था। विराट संख्या की पाण्डुलिपियों का अनुवाद कोई बहुत सहज कार्य भी नहीं था।

12.6 अनुवाद सिद्धान्त

स्पष्ट तौर पर कहा जा सकता है कि अनुवाद सिद्धान्त की दृष्टि से पश्चिम का मध्यकाल उतना उम्दा नहीं दिखता, जितना कि अनुवाद-व्यवहार की दृष्टि से। प्रारम्भिक और मध्य मध्यकालीन पश्चिम में अनुवाद सिद्धान्त पर गम्भीर चिन्तन का सर्वथा अभाव रहा है। यह भी कहा जा सकता है कि मध्यकाल में अनुवाद सिद्धान्त सम्भवतः विकसित ही नहीं हुआ था। कुछ अनुवादकों ने अनुवाद कार्य पर चिन्तन अवश्य किया, पर संकुचित क्षेत्रों में। अनुवाद सिद्धान्त को क्षेत्र, राष्ट्र, भाषा और धर्म विशेष के नजरिये से समझना बेहतर होगा।

रोमन और ग्रीक

अनुवाद सिद्धान्त के क्षेत्र में रोम को अग्रणी बनाने का कार्य सन्त जेरोम (सन् 345-420) ने किया। वे एक चर्च के फादर, अनुवादक, इतिहासविद और तर्कप्रेमी थे। जेरोम पश्चिम का पहले व्यवस्थित अनुवादक और अनुवाद सिद्धान्तकार थे। उनका सबसे प्रमुख देन बाइबल का लैटिन में अनुवाद है जो *बुलगेत* शीर्षक से सर्वाधिक लोकप्रिय है। पोप डेमासस के कहने पर उन्होंने सन् 364 में *बाइबल* का अनुवाद लैटिन में किया था। उस समय तक *बाइबल* का अनुवाद यूनानी, इथोपिक, गोथिक, जार्जियन, आर्मेनियन एवं कुछ अन्य भाषाओं में उपलब्ध हो चुका था।

जेरोम का मानना था कि सन्तोषजनक अनुवाद करना एक कठिन कार्य है। उनके अनुवाद का विरोध भी हुआ, क्योंकि उन्होंने अनुवाद में नवीनता लाने की कोशिश की। उन्हें धर्मविरोधी तक की संज्ञा दी गई। जेरोम ने अपने अनुवाद में शब्दानुवाद की जगह भावानुवाद को अधिक महत्त्व दिया। इन्हीं कारणों से उन्हें पारम्परिक लोगों की नाराजगी झेलनी पड़ी। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि अनुवादक को शब्दानुवाद की जगह भाव पर अधिक ध्यान देना चाहिए ताकि अभिव्यक्ति को समझने में आम लोगों को कठिनाइयों का सामना न करना पड़े। जेरोम ने यह भी कहा कि आवश्यतानुसार भावानुवाद और शब्दानुवाद दोनों होना चाहिए। उनके विचार उस समय के पारम्परिक विचारों से अलग थे जिसे पहला क्रान्तिकारी कदम माना जा सकता है। उन्होंने स्वीकारा था कि not translated word for word in my translations of Greek texts, but sense for sense, except in the case of the scriptures in which even the order.

यद्यपि मध्यकाल की शुरुआत रोमन साम्राज्य के पतन से मानी जाती है फिर भी अनुवाद सिद्धान्त और चिन्तन के क्षेत्र में उनके योगदान और प्रभाव को समझना आवश्यक है। सचाई है कि रोम ने अनुवाद कार्य और सिद्धान्त की संगठित परम्परा की नींव डाली ।

अनुवाद के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान एल.जी.केली, के अनुसार लैटिन अनुवाद परम्परा का अन्त और मध्यकालीन अनुवाद की शुरुआत बोथियुस (सन् 480-524) से होती है। उनकी रचना *कॉन्सोलेशन फिलॉस्फिए* (Consolatione philosophiae) सर्वाधिक लोकप्रिय हुई जिसे उन्होंने अपने राज्य निष्कासन और सजा की प्रतीक्षा के दौरान लिखी। सम्पूर्ण मध्यकाल पर इसका व्यापक प्रभाव है। अनुवाद के इतिहास में उन्हें रोमन की अन्तिम और मध्यकाल की प्रारम्भिक कड़ी मानी जा सकती है। लैटिन अनुवाद की संगठित परम्परा का अन्त बोथियूस (सन् 480-524) से माना जाता है। उनका जन्म ऐसे समय में हुआ जब यूरोप की राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक परिस्थितियाँ तेजी से बदल रही थीं। विश्व स्तर पर भी सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितयाँ तेजी से बदल रही थीं। मन्दी और

उथल-पुथल के दौर से गुजर रहे रोमन साम्राज्य के लिए वे पुनर्निमाण का स्वप्न देख रहे थे। रोमन सभ्यता को पुनर्निर्मित करने का संकल्प उनके आत्मविश्वास को दर्शाता है। अरस्तू और प्लेटो के सम्पूर्ण कार्यों को लैटिन में अनूदित करने की उनकी इच्छा थी। उन्होंने अरस्तू के तर्क से सम्बन्धित कार्यो का अनुवाद किया। वे शब्दानुवाद के पक्षधर थे और इस कार्य में छेड़छाड़ को विचलन मानते थे। हालाँकि उनकी अनुवाद सम्बन्धी सोच और मान्यताएँ जेरोम से अधिक प्रभावित थीं और अनुवाद में सत्य को संरक्षित रखने में सबसे अधिक विश्वास रखते थे।

मध्यकाल में जेरोम का *बुलगेत* एक मॉडल के रूप में अपनाया गया। साहित्यिक और काव्यनुवाद के प्रति विशेष अभिरुचि में कमी आई और उसका स्थान धार्मिक और दार्शनिक अनुवाद ने ले लिया। जेरोम और बोथियूस ने सम्पूर्ण पश्चिम में अनुवाद की नई परम्परा की नींव डाली। संयोगवश अनुवाद साहित्यकारों और कवियों के बीच में न रहकर धर्म और दर्शन प्रेमियों के बीच चला गया। भाषा, वस्तु और सत्य में तादात्म्य की खोज की जाने लगी। यहीं से एक नई परम्परा की शुरुआत हुई। नतीजतन शब्दानुवाद ने अपनी स्थाई मान्यता प्राप्त कर ली। शाब्दिक अनुवाद को सत्य की राह में सहायक करार दिया गया। हालाँकि अपवाद भी देखने को मिलते हैं। पोप ग्रेगारी द ग्रेट को अपवादों की श्रेणी में रखा जा सकता है। सबसे रोचक बात तो यह है कि रोमन साम्राज्य की अवनति के साथ बोथियूस की लोकप्रियता बढ़ती गई।

केसीडोरस (सन् 480-550), रोमन सेनेटर, ने विवारियम की स्थापना की, जिसका उद्देश्य ग्रीक के दार्शनिक एवं धार्मिक ग्रन्थों का अनुवाद करना था। यह अध्ययन और अनुवाद केन्द्र दोनों था। इसकी सबसे बड़ी विशेषता गोपनीयता और रहस्यमयता को कायम रखना था। वे बोथियूस के कार्य को आगे बढ़ाने के इच्छुक थे। उक्त दौर के सर्वाधिक लोकप्रिय और बेहतरीन अनुवादक डायोनियस एक्जिगूस (Dionysius Exiguus) थे, उनका समय सन् 556 था। बारहवीं शताब्दी के प्रख्यात लैटिन अनुवादक हरमन ऑफ केरिन्थिया ने अरबी में उपलब्ध *गणित* और *खगोल शास्त्र* ग्रन्थों का अनुवाद लैटिन में किया।

उक्त दौर में अनुवाद का छिटपुट साक्ष्य ग्रीक में भी मिलता है। ग्रीक ईसाई मठों में औरों के द्वारा अनुवाद कार्य संचालित होता था। उक्त दौर में ग्रीक में भी कुछ उच्च कोटि के अनुवादक उपलब्ध थे। पोप जकारिया (सन् 741-752) ग्रीक के उन महान अनुवादकों में से थे, जिन्होंने ग्रेगोरी द ग्रेट का अनुवाद ग्रीक में किया। जॉन स्कोटस एरीगेना भी एक महान अनुवादक थे जिनकी प्रमुख और चर्चित कृति पेरिफिजन (periphysion) है। नौवीं शताब्दी तक ग्रीक में रवेना और नापेल्स सक्रिय अध्ययन केन्द्र था। रवेना मुख्यतया चर्च से सम्बन्धित ग्रन्थों के अनुवाद से जुड़ा था।

इटली

12.6.1 दान्ते अलीगियरी (सन् 1265-1321)

दान्ते एक महान इतालवी कवि, अनुवादक और अनुवाद चिन्तक थे। उनका जन्म फ्लोरेन्स में हुआ था। वे इटली के सुप्रीम कवि के नाम से अभी भी जाने जाते हैं। उनका जन्म ऐसे समय में हुआ जब मध्युगीन विचारधारा और संस्कृति के पुनरुत्थान का संयोग बन रहा था।

उनका मानना था कि अनुवाद उचित और प्रभावकारी नहीं हो सकता है। नतीजतन काव्यानुवाद एक असम्भव कार्य है। और, ऐसा इसलिए कि हर भाषा का काव्य उसके लय सिद्धान्तों के अनुरूप रचा जाता है। जाहिर है कि वैसी स्थिति में उसे दूसरी भाषाओं के लयों में ढालना सम्भव नहीं है। अनुवाद से मूल की मधुरता और व्यंजकता नष्ट हो जाती है। उन्होंने कहा—anything harmonized through the bond of the transmuted from its idiom into another without losing all its sweetness and harmony (अनूदित)। हालाँकि अनुवाद कार्य में वे खुद भी संलग्न थे। उनकी रचना *कॅन्विवियो (Convivio,* सन् 1304-8) अनुवाद सिद्धान्त से सम्बन्धित प्रथम इतालवी पुस्तक है। उन्होंने अनुवाद कार्य में नैतिकता और सौन्दर्य को भी महत्त्वपूर्ण माना। अनुवादक को अनुवाद की सहजता और स्पष्टता पर विशेष बल देना चाहिए। उनका मानना था कि अनुवाद शैली की तुलनाओं से बढ़कर है।

12.6.2 रोजर बेकन (सन् 1220-1292)

बेकन उस युग के महान गणितज्ञ, वैज्ञानिक और अविष्कारक थे। अनुवाद में उनकी गहरी रुचि थी। वे यूरोपीय पुनर्जागरण की पहली कड़ी थे। उनके बारे में तो यहाँ तक कहा गया कि उनका जन्म सम्भवतः समय से दो सौ वर्ष पहले हुआ था। उन्हें उस काल का अभिजात शिशु भी माना जाता है।

वे क्लासिकल भाषाओं और स्थानीय भाषाओं में अनुवाद के अन्तर को भलीभाँति समझते थे। उन्होंने अनुवाद कार्य की समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की। बेकन ने अनुवाद को दो वर्गो में वर्गीकृत किया : शिष्टता और अशिष्टता। प्रतिष्ठित स्रोत भाषा को अप्रतिष्ठित लक्ष्य भाषा में रूपान्तरित करने का कार्य दरअसल अशिष्टता का है। यह प्रक्रिया दरअसल प्रतिष्ठित को अतिसामान्य बनाने की है और गँवारूपन को लक्षित करता है। उनके अनुसार अनुवाद की सच्ची प्रक्रिया तो वह है जहाँ स्रोत और लक्ष्य दोनों ही समान स्तर के हों।

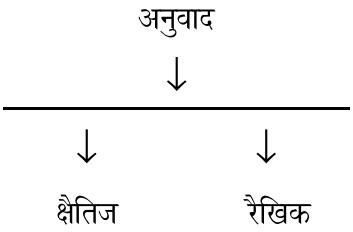

क्षैतिज अनुवाद में अनुवादक को स्रोत भाषा से अधिकतम स्वतन्त्रता प्राप्त होती है और यह भावानुवाद है। जबकि रैखिक अनुवाद शब्दानुवाद है। मसलन अनुवाद स्रोत के करीब होता है। दूसरे की तुलना में प्रथम उच्चस्तरीय और सर्वमान्य है। उन्होंने तो यहाँ तक माना कि स्रोत की अहमियत अनुवाद की तुलना में कम होती है क्योंकि अनुवाद स्थापित मान्यताओं को पुनर्प्रक्रिया के जरिए अन्य में लाने की कोशिश करता है। अनुवाद कार्य में अनुवादक की विशिष्ट योग्यता की अपेक्षा होती है।

12.6.3 लियोनार्दो ब्रूनी (सन् 1374-1444)

वे एक महान इतालवी मानवतावादी अनुवादक थे। उन्होंने होमर और प्लेटो के ग्रन्थों का अनुवाद किया। लियोनार्दो ब्रूनी ने अपनी रचना *इ रेक्टा* (सन् 1420) में श्रेष्ठ अनुवादक के गुणों की भी चर्चा की है : तदनुसार अनुवादक को मूल भाषा और लक्ष्य भाषा का प्रमाणिक ज्ञान होना चाहिए, और व्याकरणिक और शाब्दिक ज्ञान के साथ मूल भाषा और लक्ष्य भाषा की शैलीगत संरचनाओं का भी सूक्ष्म बोध होना चाहिए।

हालाँकि उनकी चर्चा मुख्य रूप से ग्रीक से लैटिन अनुवाद पर टिकी हुई है, फिर भी स्थानीय भाषाओं और नई पीढ़ी के अनुवादकों के लिए उन्होंने नई दिशा प्रदान की। उनके अनुसार अनुवाद कार्य में मूल भाषा और तथ्यों की बेहतर जानकारी सबसे आवश्यक है। ब्रूनी का मानना था कि अनुवाद कार्य में मूल लेखक की शैली को बचाने की भरपूर कोशिश की जानी चाहिए। उनका सैद्धान्तिक पक्ष पुनर्जागरण काल में, अनुवादकों के लिए अनुकरणीय बना। दरअसल ब्रूनी ने ही अनुवाद समालोचना की नींव डाली।

फ्रांस

12.6.4 एतीन दोले (सन् 1509-1546)

एतीन दोले फ्रेंच के कवि, अनुवादक, प्रकाशक और मानवतावादी थे। फ्रेंच विद्वान दोल, लूथर के समकालीन थे। उन्हें प्रथम व्यवस्थित अनुवाद सिद्धान्तकार भी माना जाता है। वे 20 वर्ष की आयु से ही मानवतावाद के पक्षधर बन गए। उन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की। स्पष्टवादी और जनहित विचारों के कारण वे आगे चलकर बेहद विवादास्पद बन गए। उन पर प्लेटो के गलत अनुवाद का दोष लगाया गया और मात्र सैंतीस वर्ष की आयु में मृत्यु की सजा दी गई। इससे अनुवाद के प्रति पश्चिम की सम्वेदनशीलता और कट्टरता का पता चलता है। हालाँकि यह नकारात्मक सम्वेदनशीलता थी।

उन्होंने अपने सिद्धान्त में मुख्य रूप से पाँच बातों पर बल दिया :

1. अनुवादक को स्रोत भाषा का उच्चस्तरीय ज्ञान और लेखक की अभिप्रेरणाओं को समझने की क्षमता होनी चाहिए। प्रयोजन समझना अति आवश्यक है।
2. अनुवादक को यह कार्य आम भाषा में करनी चाहिए, ताकि अनुवाद आम लोग भी समझ सकें।
3. स्रोत भाषा के साथ अनुवादक को लक्ष्य भाषा का भी समुचित ज्ञान होना चाहिए।
4. मूल के प्रति निष्ठावान होना आवश्यक है। सन्देश की अन्तरात्मा मूल में होती है अतः उसकी हर सम्भव रक्षा होनी चाहिए।
5. मूल के प्रभाव से लक्ष्य को दूर करने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए। उत्कृष्ट अनुवाद वही है जो सही और सहज समझ पैदा कर सके।

स्पष्ट है कि उनका सिद्धान्त अनुवाद कार्य में सहजता पर विशेष बल देता है। उनका सिद्धान्त कई अर्थो में आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने भाषिक ज्ञान के साथ-साथ लेखकीय और सामाजिक-सांस्कृतिक सम्वेदनशीलता को अनुवाद के लिए महत्त्वपूर्ण माना। इन्हीं कारणों से एक सिद्धान्तकार में रूप में दोले की लोकप्रियता आज भी बरकार है।

ब्रिटेन

12.6.5 अल्फर्ड

अल्फर्ड, वेसेक्स के एक कुशल शासक (सन् 871-899) थे। उन्होंने कई उत्कृष्ट ग्रन्थों का अनुवाद खुद भी किया और दूसरों को भी प्रेरित किया। चालीस वर्ष की अवस्था में उन्होंने लैटिन सीखी ताकि लैटिन के उत्कृष्ट ग्रन्थों का अनुवाद अंग्रेजी में किया जा सके। वे अनुवाद को सांस्कृतिक अवनति के निदान का महत्त्वपूर्ण साधन मानते थे। अपने अनुवाद कार्य में उन्होंने शब्दानुवाद और मुक्तानुवाद दोनों का प्रयोग किया। उन्होंने अनूदित पुस्तकों की प्रस्तवाना भी लिखी, जिसमें मुख्य रूप से उन्होंने अनुवाद की महत्ता पर प्रकाश डाला। यह कार्य वे विद्वानों द्वारा बड़े पैमाने पर करवाना चाहते थे। अल्फर्ड ने सरल और सहज भाषा के प्रयोग पर विशेष जोर दिया ताकि सन्देश को आसानी से जनसाधारण तक पहुँचाया जा सके। उन दिनों पहली बार अनुवाद सन्देश वाहिनी बनी। वे अनुवाद को अंग्रेजी की लोकप्रियता बढ़ाने का सबसे सक्षम साधन मानते थे। उनका मानना था कि यह कार्य किसी भी भाषा के विकास लिए प्राणवायु साबित हो सकता है। अनुवाद को राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक भी मानते थे। उनके शासनकाल में अनुवाद कार्य को प्रोत्साहन मिला और बेहतरीन अनुवाद भी हुआ। वे तो यहाँ तक मानते थे कि डेनिस आक्रमण से आक्रान्त ब्रिटिश समाज को अनुवाद के जरिए अपने राष्ट्र और समाज के प्रति उत्साहित किया जा सकता है। जे ए हेमरटोन के अनुसार Alfered the great was a translator himself and the cause of translation in others (1986).

12.6.6 जान विकलिफ (सन् 1320-84)

अंग्रेजी में सम्पूर्ण बाइबल का अनुवाद विकलिफ ने सन् 1380 से 1384 के बीच किया। यह बाइबिल अनुवाद का एक युगान्तकारी मोड़ है। वे एक जाने-माने आक्सफोर्ड धर्मवादी थे जिनका मानना था कि मनुष्य ईश्वर के प्रति प्रत्यक्ष रूप से खुद ही उत्तरदायी है। इन्हीं मान्यताओं के आधार पर उन्होंने स्पष्ट तौर पर कहा कि *बाइबल* सभी के लिए है और इसकी उपयोगिता हर किसी के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में है। उनका मानना था कि *बाइबल* की उपलब्धता आम लोगों की मातृभाषा में सुनिश्चित होनी चाहिए। विशेष रूप से, उन्होंने *बाइबल* को स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध कराने की वकालत की। कैथोलिक चर्च के लिए यह सबसे पहली चुनौती थी। नतीजतन वे पादरियों के विरोधी बन गए और उनकी मान्यताओं को धर्मविरोधी करार दिया गया। उनके अनुयायी को लोलार्ड की संज्ञा दी गई।

उनका एक सबल अनुयायी जॉन पुरवे ने प्रथम संस्करण को पहली बार सन् 1408 में संशोधित किया। प्राक्कथन में कुछ सामान्य बातें भी कही गई हैं, जो अनुवाद के चार चरणों को परिभाषित करता है :

1. अनुवाद की प्रमाणिकता सिद्ध करने की सामूहिक जिम्मेदारी
2. मूल और लक्ष्य का तुलनात्मक अध्ययन

3. पुराने और जानकार व्याकरणविदों से कठिन शब्दों और अर्थो के सम्बन्ध में जानकारी हासिल करना
4. अर्थ और वाक्य का अनुवाद होना चाहिए। शब्दानुवाद अनुचित हो सकता है। अतः सामुदायिक स्तर पर अनुवाद को सत्यापित करना चाहिए।

पुरवे ने यह भी कहा कि अनुवादक को अर्थ पर विशेष ध्यान देना चाहिए। शब्दों के बीच तालमेल बिठाने का अनावश्यक प्रयास नहीं करना चाहिए। शायद उनके द्वारा बाइबल के सन्देशों को आम लोगों तक पहुँचाने की कवायद थी, जिस पर कुछ खास लोगों का ही वर्चस्व था।

स्पेन

12.3.7 अलफान्सो डी (सन् 1400-55)

अलफान्सो, स्पेन के प्रख्यात अनुवाद चिन्तक और बेहतरीन अनुवादक थे। अनुवाद कार्य की प्रस्तावना में उन्होंने अनुवाद प्रक्रिया पर भी चर्चा की। उनका मानना था कि लैटिन से अनुवाद करते समय शब्दानुवाद सम्भव नहीं है। इसलिए अनुवादक को अनुवाद के साथ टीका, विश्लेषण या ग्लौस देना चाहिए। उन्होंने दो तरह के अनुवाद की चर्चा की, जो दो भिन्न परिस्थितियों में सहायक होता है : मुक्तप्राय अनुवाद और शब्दानुवाद। उनका सिद्धान्त वर्नाकूलर भाषाओं के अनुवाद के लिए कारगर सिद्ध हुआ।

जर्मनी

12.3.8 वान इव (सन् 1420-75) और हेनरिक स्टाइनहोवेल (सन् 1412-82)

दोनों जर्मन के जाने-माने मानवतावादी थे। दोनों ने अनुवाद की प्रायोगिकता और सम्प्रेषणीयता पर विशेष जोर दिया। उन्होंने कहा कि बेहतर अनुवाद वही है, जिसका रुझान लक्ष्य भाषा की ओर अधिक हो। सम्वाद की सम्प्रेषणीयता और सरलता अनुवाद को सार्थक बनाता है। अनुवाद की सफलता लक्ष्य भाषा में उसकी प्रमाणिकता पर निर्भर करती है। अनुवाद कार्य भी इसी सिद्धान्त से प्रेरित है।

12.6.9 मार्टिन लूथर (सन् 1483)

मार्टिन लूथर ने अनुवाद कार्य और सिद्धान्त के क्षेत्र में नई जिज्ञासा पैदा की। यह दौर बौद्धिक क्रान्ति का था। मार्टिन लूथर जर्मन धर्मशास्त्री, समाज विचारक, तर्कप्रेमी और अनुवादक थे। वे मूर्तिपूजा के विरोधी और चर्च की कला के कटु आलोचक थे।

मार्टिन लूथर का कई कारणों से अनुवाद के क्षेत्र में विशेष महत्त्व है। लूथर को अनुवाद में सहजता, समरसता और बोधगम्यता जैसे नए प्रयोग के लिए विशेष तौर पर जाना जाता है। उन्होंने अनुवाद को सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक विमुक्तियों और उन्मुक्तियों का आधार बनाया। उन्हीं के समय से अनुवाद कार्य में लोकभाषा की महत्ता पर विशेष बल दिया जाने लगा। लैटिन आम लोगों के लिए बोधगम्य नहीं थी, उस भाषा में शिक्षित लोगों की ही पहुँच थी। लूथर ने अनुवाद को ज्ञान का मार्ग-द्वार बनाने पर विशेष जोर दिया। नतीजतन जनसाधारण की पहुँच *बाइबल* पर बढ़ी। अनुवाद की सुगम्यता के लिए उन्होंने निम्नलिखित बातों पर जोर दिया :

1. क्रम परिवर्तन
2. व्याख्यात्मकता की प्रधानता
3. स्पष्टीकरण
4. सुविधा की दृष्टि से एक के लिए अनेक शब्दों का प्रयोग
5. टीकाओं का प्रयोग
6. अति अलंकारिता की जगह सहज शब्दों का प्रयोग।

आवश्यकतानुसार अनुवादक शब्द-क्रमों में परिवर्तन लाने के लिए स्वतन्त्र है। सहायक शब्दों का भी प्रयोग किया जाना चाहिए। अनुवाद में सहज अभिव्यक्ति सबसे महत्त्वपूर्ण होती है। उक्त समय में धार्मिक कट्टरता को निरस्त करने का सबसे कारगर हथकण्डा अनुवाद ही था। लूथर ने इसे भली-भाँति समझ ली थी।

डच

12.6.10 डी इरासमस (सन् 1466-1536)

वे डच मानवतावादी, भाषाविद, धार्मिक विचारक और अनुवादक थे। उन्हें मध्यकाल की अन्तिम कड़ी माना जा सकता है, जहाँ से पुनर्जागरण आन्दोलन की नींव पड़ी। उन्होंने ईसाई मूलग्रन्थों का सम्पादन किया। उन्होंने अनुवाद सिद्धान्त से जुड़ी कुछ महत्त्वपूर्ण बातें कही। उन्होंने कहा कि :

- अनुवाद में मूल को संरक्षित करने का सर्वथा प्रयास हो।
- अनुवाद की उक्त स्थिति में शब्दानुवाद भी सम्भव है।
- अनुवाद में मूल भाषा की शैली का संरक्षण हो।
- अनुवादक को अनुवाद कार्य में विशेष छूट नहीं मिलनी चाहिए।
- अनुवादक को मूल के प्रति विश्वसनीय होना चाहिए।

12.7 प्रमुख अनुवादक

ब्रिटेन

प्रारम्भिक दौर में अंग्रेजी भाषा में अनुवाद को सक्रिय बनाने का श्रेय ईसाई धर्म को जाता है। धार्मिक जिजीविषा और निष्ठा ने ब्रिटेन में अनुवाद की संगठित परम्परा की नींव डाली।

12.7.1 अल्धेल्म (सन् 640-709)

वे प्रख्यात क्लासिकल विद्वान थे। उन्होंने *पसलम* का अनुवाद किया।

12.7.2 बीद (सन् 673-735)

वे प्रारम्भिक मध्यकाल के प्रख्यात लेखक, विद्वान और अनुवादक थे। कुछ इतिहासकारों के अनुसार वे अपने जमाने के सबसे प्रतिष्ठित विद्वान थे। उन्होंने ज्ञान से जुड़े लगभग सभी विषयों पर लिखा। यह भी माना जाता है कि उन्होंने सन्त जॉन के *गॉसपल* का अनुवाद मरणासन्न अवस्था में बोलकर लिखवाया था। अपनी प्रसिद्ध रचना *The Ecelesiastical History of the English People* के कारण उन्हें अंग्रेजी इतिहास में अत्यधिक ख्याति मिली। सन् 1899 में लियो तेरह ने उन्हें डॉक्टर ऑफ चर्च की उपाधि से विभूषित किया।

12.7.3 अफ्रिक (सन् 995-1020)

अफ्रिक ने *Lives of the Saint and Homlies* का पुरानी अंग्रेजी में उच्चकोटि का अनुवाद किया।

12.7.4 चौसर (सन् 1340-1400)

अंग्रेजी के महानतम कवि चौसर को अंग्रेजी का जनक भी कहा जाता है। चौसर अपनी मातृभाषा के अलावा लैटिन, फ्रेंच और इतालवी के पारंगत विद्वान थे। उन्होंने इन भाषाओं के कुछ उच्चस्तरीय ग्रन्थों का अनुवाद किया। चौसर ने लैटिन की ओविड, वर्जिल और वोथियुस एवं इतालवी की बुकाचियो की कृतियों का अनुवाद किया।

12.7.5 काक्स्टन (सन् 1422-91)

जीवन के प्रारम्भिक दौर में काक्सटन पेशे से व्यापारी थे। बाद में उन्होंने महत्त्वपूर्ण ओहदों पर भी कार्य किया। वे एक उच्चकोटि के अनुवादक थे। उन्होंने फ्रेंच की कुछ महान कृतियों का अंग्रेजी में अनुवाद किया।

12.7.6 विलियम तिन्देल (सन् 1494-1536)

उन्होंने चर्च के आडम्बर का विरोध किया। तिन्देल ने न्यू टेस्टामेण्ट का अनुवाद किया। सन् 1526 में उनके द्वारा अनूदित कृति को आमलोगों के समक्ष जलाया गया।

फ्रांस

12.7.7 निकोलस ओरेज्मे (सन् 1330-82)

निकोलस मध्यकाल के एक प्रख्यात विद्वान और प्रतिभाशाली अनुवादक थे। वे कई विद्याओं में पारंगत थे। अर्थशास्त्र, गणित, भौतिक विज्ञान, खगोलशास्त्र, दर्शनशास्त्र और धर्मशास्त्र पर उन्हें जबर्दस्त अधिकार था। कुछ इतिहासकारों के अनुसार वे चौदहवीं शताब्दी के सबसे मौलिक चिन्तक थे। उन्होंने मुख्य रूप से अरस्तू और टॉल्मी (Ptolemy) के कार्यों का फ्रेंच में अनुवाद किया। वे चार्ल्स-5 के कोर्ट के सबसे प्रमुख अनुवादक थे। मध्यकाल के अन्य विद्वानों की तरह उन्होंने भी लेखन कार्य मुख्यतः लैटिन में ही किया। हालाँकि राजा के अनुरोध पर उन्होंने वर्नाकुलर में लिखना प्रारम्भ किया। उन्होंने फ्रेंच में कई नए शब्द गढ़े और तकनीकी अनुवाद भी किए। उन्होंने अनुवादकों के लिए कई महत्त्वपूर्ण और उपयोगी बातें बताईं—अनुवाद के सटीक होने और लक्ष्य भाषा में नए शब्दों के प्रयोग को उन्होंने प्रमुखता से रेखांकित किया। उनका मानना था कि अनुवाद के माध्यम से फ्रेंच को एक सशक्त भाषा बनाया जा सकता है। वे लैटिन परम्परा के हिमायती थे, जिसने ग्रीक के सम्पूर्ण ज्ञान-धरोहर को अनुवाद के माध्यम से लैटिन में उपलब्ध कराया। उन्होंने फ्रेंच में भी वैसी ही प्रवृत्ति विकसित करने की आवश्यकता महसूस की। हालाँकि उनका यह भी मानना था कि सिर्फ अनुवाद ही किसी भाषा को विकसित करने का साधन नहीं हो सकता है। वे फ्रेंच को वैज्ञानिक भाषा के रूप में विकसित करना चाहते थे।

इटली

पेटाक, बुकाचियो और दान्ते मध्यकालीन इतालवी के महान अनुवादक थे। तीनों ने मध्यकाल में मानवतावाद की नींव रखी। इन तीनों के अथक प्रयास से इतालवी सोलहवीं शताब्दी में आधुनिक भाषा बन सकी।

स्पेन

12.7.8 अलफान्सो-X (सन् 1221-1284)

अलफान्सो-X कन्सताइल के एक महान शासक थे। उन्होंने अरबी में उपलब्ध खगोल शास्त्रीय ग्रन्थों का कन्सतालियन में अनुवाद करवाया। अलफान्सो ने एक सक्रिय जरनल सम्पादक की भूमिका भी निभाई। उन्हें तोलेदो स्कूल के अनुवादक अल्फान्सो समझने की भूल नहीं करनी चाहिए।

12.7.9 कारटेगेना (सन् 1384-1456)

वे बरगोस, स्पेन के बिशप थे। एक बेहतरीन अनुवादक के रूप में उन्होंने अनुवाद पर गहन चिन्तन किया। उनका मानना था कि अनुवाद की गुणवत्ता तथ्यों में निहित होती है न कि शैली में। उन्होंने सिसरो और सेनेका के कार्यो का कस्तालियन में अनुवाद किया।

12.7.10 लोपेज डी पेरो (सन् 1322-1407)

लोपेज स्पेन के राजनीतिज्ञ, इतिहासकार, कवि और अनुवादक थे। देशद्रोह के इल्जाम में उन्हें दो बार कैद में रखा गया। उन्होंने ग्रेग्रोरी, एसीडोरस, कोलोना और बुकाचियो के प्रमुख कार्यों का अनुवाद किया। उनके अनुवाद कार्यों ने स्पेन में इतालवी मानववाद की नींव रखी।

तोलेदो स्कूल आफ ट्रान्सलेशन

स्पेन के तोलेदो स्कूल आफ ट्रान्सलेशन में उच्चकोटि के अनुवादक मौजूद थे। उनमें कुछ प्रमुख नाम इस प्रकार हैं :

12.7.11 जेरार्ड ऑफ क्रेमोना (सन् 1114-87)

जेरार्ड ऑफ क्रेमोना तोलेदो स्कूल के एक महान इतालवी अनुवादक थे। कहा यह भी जाता है कि *जेरार्ड ऑफ क्रेमोना* सम्भवतः इस काल के सबसे महत्त्वपूर्ण अनुवादक थे, जिन्होंने विशिष्ट दल की मदद से अरबी से लैटिन में करीब 71 वैज्ञानिक और दार्शनिक पुस्तकों का अनुवाद किया। उन्होंने तोलेदो जाकर अरबी सीखी। वान हूफ (1986:10) ने तो उन्हें 'सम्भवतः सर्वदा का महानतम अनुवादक' (perhaps the greastest translator of all time) कहा। अनुवाद के क्षेत्र में जेरार्ड पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अनुवाद कार्य को सामूहिक स्तर पर प्रायोजित किया और अनुवाद कार्य में एक नई शैली विकसित की।

जर्मनी

12.7.12 नोटकर गालेन (सन् 950-1022)

नोटकर गालेन ओल्ड हाई जर्मन काल के सबसे प्रख्यात और अनूठे अनुवादक थे। ईसाई धार्मिक ग्रन्थों के अलावा उन्होंने अपना ध्यान काव्यानुवाद और दार्शनिक ग्रन्थों की ओर भी केन्द्रित किया और कुछ बेहतरीन अनुवाद किए। उन्होंने बिथुयस और वर्जिल के महत्त्वपूर्ण कार्यो का अनुवाद किया।

12.8 सारांश

स्मरणीय है कि मध्यकाल में अनुवाद का स्रोत हिब्रू और ग्रीक नहीं रहा। मूल भाषा के रूप में लैटिन ने अपनी जगह सुरक्षित कर ली थी। यहीं से अनुवाद की एक नई परम्परा का अभ्युदय हुआ। इसे पश्चिम के अनुवाद की दूसरी परम्परा की संज्ञा दी जा सकती है। अनुवाद की पहली परम्परा हिब्रू और ग्रीक से प्रारम्भ हुई, जिसमें पहली बार हिब्रू मूल भाषा थी और बाद में ग्रीक बनी। ग्रीक से लैटिन में अनुवाद की गतिविधियों ने अनुवाद की पहली सशक्त परम्परा की नींव रखी। यहीं से एक भाषिक, धार्मिक, सामाजिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक क्रिया-कलाप के रूप में अनुवाद कार्य ने अपनी पहचान बनाई। अनुवाद चिन्तन और विमर्श का दौर पहली परम्परा से प्रारम्भ तो हुआ पर इसकी शुरुआत का श्रेय सिर्फ रोम को जाता है। संयोग की बात है कि अनुवाद की पहली परम्परा का अन्त लैटिन से हुआ और दूसरी परम्परा की शुरुआत भी लैटिन से ही हुई। पर एक ही जमीन से अंकुरित दो परम्पराओं ने परस्पर दो भिन्न परिस्थितियों में अपनी जमीन तलाशी। पहली परम्परा में लैटिन ने सर्वशक्तिमान बनकर अनुवाद को आजमाया, वहीं दूसरी परम्परा में पराजित लैटिन ने औरों के लिए अनुवाद की गुंजाइश पैदा की। मध्यकालीन पश्चिम में अनुवाद की परम्परा उसी गुंजाइश का वृहत प्रतिफल है। मध्यकाल में रोम ने सामाजिक, राजनीतिक, भाषिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं कई अन्य स्तरों पर अनुवाद की नई परिस्थितियाँ पैदा कीं। हालाँकि इससे अनुवाद कार्य के क्षेत्र का व्यापक विस्तार हुआ।

दूसरी शताब्दी तक रोमन साम्राज्य आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक चरमोत्कर्ष पर था। तीसरी शताब्दी से रोमन साम्राज्य के पतन का दौर प्रारम्भ हुआ। तीसरी शताब्दी से रोमन साम्राज्य का भौगोलिक, राजनीतिक, सामाजिक...कई स्तरों से संकुचन प्रारम्भ हो गया। सन् 285 में प्रशासनिक सहूलियत के ख्याल से सम्राट डिलेशियन ने साम्राज्य को पूर्वी और पश्चिमी दो खेमों में वर्गीकृत किया। सेना के खर्च में भी अपार वृद्धि होने लगी और रोमन साम्राज्य के पड़ोसी राज्यों की शक्तियाँ बढ़ने लगीं। सन् 378 में गोथिक के हाथों पराजय ने रोमन साम्राज्य की सैन्य-शक्ति को लगभग ध्वस्त कर दिया और बर्बर जनजातियों ने रोमन की सांस्कृतिक श्रेष्ठता को नकार दिया। रोम पर आक्रमण का दौर लगभग यहीं से प्रारम्भ हुआ। लूटपाट के उद्देश्य से छोटे-छोटे आक्रमण भी होने लगे। हूण, बलगार, अभार, मगयार ने भी इस साम्राज्य पर आक्रमण किया और वहाँ के निवासियों को आक्रान्त किया। लगभग पाँचवीं शताब्दी तक रोमन संस्थाएँ चरमरा चुकी थीं। कुछ इतिहासकारों के अनुसार पश्चिम में अन्धकार युग का समावेश यहीं से प्रारम्भ हुआ। रोमन साम्राज्य का पतन दरअसल पश्चिम के बौद्धिक पतन का द्योतक है। यह दौर पहली परम्परा के सूर्यास्त का है। अनुवाद की दूसरी परम्परा की शुरुआत मध्यकाल में हुई। उस दौरान अनुवाद की दिशा बहुविध थी। बौद्धिक स्तर पर पश्चिम शिथिल हो चुका था; सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पतन जीवन के हर

क्षेत्र में देखा जा सकता था। इस्लाम के प्रचार-प्रसार की वजह से दुनिया के अन्य भागों से इसका सम्पर्क और भी संकुचित हो चुका था। पश्चिम यूरोप एक बर्बर और ग्राम्य साम्राज्य के रूप में तब्दील हो चुका था। राजनीतिक अस्थिरता अपने चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी, जिसका नकारात्मक प्रभाव हर क्षेत्र में था। अशहरीकरण के कारण शिक्षा में गिरावट आई और चर्च तथा कैथेडरल शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बना, जिसका एक मात्र उद्देश्य *बाइबल* के सन्देशों का प्रचार-प्रसार करना था। हालाँकि स्पेन, इटली और गाउल जैसे देशों में शिक्षा की स्थिति सन्तोषजनक थी। सातवीं शताब्दी में आयरलैण्ड और केल्टीक के क्षेत्रों में शिक्षा की परिस्थितियाँ अनुकूल बनी और विदेशी भाषा के रूप में लैटिन का पठन-पाठन होने लगा। पादरियों का बौद्धिक वर्चस्व धीरे-धीरे बढ़ता चला गया, उनका रुझान प्रकृति-अध्ययन की ओर विशेष रूप से था।

मध्यकालीन पश्चिम में दो प्रमुख भाषिक प्रवृत्तियाँ देखी जा सकती हैं : लैटिन की साहित्यिक भाषा में तब्दीली और वर्नाकुलर के प्रति आमलोगों की अभिरुचि। पाँचवीं शताब्दी में वृहत रोमन साम्राज्य के विभाजन ने रोमन भाषाओं के उत्थान की पृष्ठभूमि तैयार की। व्लगर लैटिन स्थानीयता में समावेशित होने लगी। स्पेनी, इतालवी, फ्रेंच, रोमन और कत्लान जैसी भाषाएँ उभरीं। स्थानीय भाषाओं का प्रचलन बढ़ा। भाषाई, भौगोलिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक रिक्तताओं ने अनुवाद को नई जमीन तलाशने का भरपूर समय और मौका दिया, वहीं दूसरी ओर पश्चिम की एक और महत्त्वपूर्ण भाषा अंग्रेजी दूसरे छोर पर विकसित हो रही थी। अंग्रेजी जर्मेनिक परिवार की भाषा है, जिसमें रोमन भाषाओं के शब्दों की भरमार है। मध्यकालीन यूरोप में अनुवाद एक सामाजिक आवश्यकता बन गई।

12.9 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. मध्यकालीन अनुवाद की विशेषताओं की चर्चा करें।
2. मध्यकालीन अनुवादकों की चर्चा करें।
3. मध्यकालीन अनुवाद सिद्धान्त की चर्चा करें।
4. मध्यकालीन अनुवाद की प्रवृतियों, दिशाओं और रुझानों की चर्चा करें।
5. पश्चिमी मध्यकालीन अनुवाद की परम्परा से आप क्या समझते हैं? उसकी अवधि, उसका वर्गीकरण और सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक परिस्थितियों की चर्चा करें।

12.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Baker, M. (ed.) (1998/2008) *The Routledge Encyclopedia of Translation Studies*. New York: Routledge.
- Bassnett, S. (2002) *Translation Studies*. New York: Routledge.
- Bassnett, S. and A. Lefevere (eds.) (1990) *Translation, History and Culture* New York: Routledge.

इकाई 13 आधुनिक यूरोपीय अनुवाद परम्परा

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 अनुवाद परम्परा

13.3 औपचारिक अनुवाद परम्परा

13.3.1 रिनेसाँ या पुनर्जागरण युग

13.4 20वीं शताब्दी में अनुवाद

13.5 सारांश

13.6 शब्दावली

13.7 अभ्यास के लिए प्रश्न

13.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

13.0 उद्देश्य

यह इकाई आधुनिक यूरोपीय परम्परा से सम्बन्धित है। इस इकाई को पढ़ने से अनुवाद अध्ययन में एम.ए. करने वाले शिक्षार्थियों को यूरोप की आधुनिक अनुवाद परम्परा की संक्षिप्त जानकारी मिलेगी। इस इकाई को पढ़कर आप :

- यूरोपीय अनुवाद परम्परा की जानकारी हासिल कर सकेंगे; और
- आधुनिक यूरोपीय अनुवाद परम्परा के विभिन्न स्तरों तथा अनुवादों के बारे में जान सकेंगे।

13.1 प्रस्तावना

पिछली इकाइयों में आपने पश्चिम में अनुवाद की प्राचीन परम्परा (Classical Tradition of Translation) तथा मध्यकालीन पश्चिमी अनुवाद की परम्परा की जानकारी प्राप्त की है।

इस इकाई में मुख्यतः आधुनिक काल में यूरोप में कौन-कौन-से प्रमुख अनुवाद हुए, उन अनुवादों के पीछे कौन-सी दृष्टि मुख्य रूप से काम कर रही थी तथा भविष्य के अनुवादों पर उनका क्या प्रभाव रहा– इस बात की जानकारी दी जाएगी।

13.2 अनुवाद परम्परा

प्राचीन काल से ही जब दो समुदायों का विभिन्न कारणों से परस्पर मिलना होता होगा तब निश्चित रूप से दो भाषाओं में बोलने वाले लोगों के बीच अनुवाद की आवश्यकता अपरिहार्य रही होगी, पर अनुवाद के लिखित प्रमाणों के अभाव में ठीक-ठीक यह नहीं बताया जा सकता कि अनुवाद की परम्परा कब शुरू हुई, पर रोजेटा शिला (Rosetta Stone) निश्चय ही अनुवाद का एक प्रमुख प्रमाण माना जाता है जो ई. पू. दूसरी शताब्दी का है। एक फ्रांसीसी इंजीनियर ने एलेक्जेण्ड्रिया से लगभग दस किलोमीटर दूर 'रोजेटा' नामक स्थान पर इस शिलालेख का पता लगाया था। इस शिला पर इजिप्टीयन, हेराग्लायफिक (Egyption, Hieroglyphic) देमॉटिक चिह्नों (Demotic Characters) तथा ग्रीक भाषा में ई. पू. 196 के राजा टॉल्मी पंचम (Plotemy V) का आदेश उत्कीर्ण किया गया है। इसमें ग्रीक भाषा में चौबन पंक्तियाँ हैं, जिसका अर्थ देमॉटिक और हेरोग्लायफिक में क्रमशः बत्तीस और चौदह पंक्तियों में दिया गया है।

फिर भी यह कहना कि अनुवाद की परम्परा 'रोजेटा स्टोन' के काल से ही शुरू हुई–ठीक नहीं है, क्योंकि कई ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि अनुवाद की परम्परा 'रोजेटा स्टोन' के काल से बहुत

पहले से चली आ रही थी। असीरिया के राजा सरगोन कई भाषाओं में अपनी विजय घोषणाएँ करवाते थे, जो मूल रूप में असीरियाई भाषा में होती थी।

हम्मूराबी (Hammurabi) के शासन काल (ई.पू. 2100) में बेबीलोन एक बहुभाषी नगर था। कहा जाता है उसने अपने यहाँ कई ऐसे लोग (Scriber) नियुक्त कर रखे थे, जो राज्य के आदेशों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया करते थे।

ई.पू. 347 के लगभग में नेहेमिह (Nehemiah) के समय में यहूदियों में अनुवाद का एक नया ढंग अपनाया जाता था, जिसे व्याख्यात्मक अनुवाद की संज्ञा दी जा सकती है, लोग धर्मोपदेश सुनने के लिए एक स्थान पर एकत्र हुआ करते थे। उनमें कुछ ऐसे लोग भी होते थे जो हिब्रू भाषा अच्छी तरह नहीं समझते थे, ऐसे लोगों को मेबिनिम (Mebinim) आर्मेइक भाषा में अनुवाद करके समझाते थे ताकि वे उपदेश को भली भाँति समझ सकें।

13.3 औपचारिक अनुवाद परम्परा

औपचारिक अनुवाद की परम्परा पश्चिम में वास्तव में बाइबिल के अनुवादों से शुरू हुई। मिस्र में ऐसे यहूदियों की संख्या बहुतायत में थी जो ग्रीक भाषा बोलते थे और हिब्रू नहीं जानते थे। ऐसे लोगों की सुविधा के लिए ई.पू. दूसरी-तीसरी शताब्दी में '*ओल्ड टेस्टामेण्ट*' के अनुवाद किए गए। इनमें '*सेप्टुआजिण्ट*' (Septaugint) नामक अनुवाद सबसे अधिक प्रसिद्ध हुआ जो ई. पू. 270 में किया गया था। इसके बारे में प्रसिद्ध है कि इसका अनुवाद 70 लोगों ने मिलकर ईश्वरीय प्रेरणा से 70 दिनों में पूरा किया था। इसके बाद ई.पू. 240 में लिवियस एण्ड्रोनिक्स (Livius Andronicus) ने होमर के महाकाव्य '*ओडेसी*' का पद्यानुवाद किया। नेवियस (Naevius) और एन्नियस (Ennius) ने कई ग्रीक नाटकों के अनुवाद, सिसरो ने प्लेटो के '*प्रोतोगोरस*' तथा कई ग्रीक कृतियों के अनुवाद किए।

मध्ययुग में पश्चिमी यूरोप में 'वेनरेबल बेदे' (Venerable Bede) द्वारा जॉन के *'गॉस्पेल'* के सन् 735 में हुए अनुवाद को छोड़कर प्रायः सभी अनुवाद धार्मिक निबन्धों के कठिन लैटिन में भाषान्तर करने तक ही सीमित रहे। बारहवीं शताब्दी तक आते-आते जब तोलेदो विद्या का प्रमुख केन्द्र बन गया तो कई ग्रीक ग्रन्थों के लैटिन में अनुवाद हुए। अनुवाद तथा अनुवाद कला को आगे बढ़ाने में स्पेन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। ग्यारहवीं शताब्दी में ही बिशप डान रैमुण्डो ने तोलेदो में अनुवादकों के लिए एक स्कूल स्थापित किया। जहाँ अनेक अरबी और यहूदी विचारकों की रचनाओं का लैटिन में अनुवाद किया गया। इस स्कूल के अनुवादकों के प्रयासों से मध्ययुग में विश्वविद्यालयों तथा पश्चिमी जगत के ज्ञान जिज्ञासुओं के लिए एक बहुत बड़ा सांस्कृतिक क्षेत्र खुल गया था।

13.3.1 रिनेसाँ या पुनर्जागरण युग

पुनर्जागरण युग को अनुवाद का स्वर्ण-काल कहा जाता है। अभी तक अनुवाद मुख्यतः धार्मिक ग्रन्थों तक ही सीमित था, इस काल में अनुवादकों का ध्यान जन रुचि के विषयों की ओर भी आकृष्ट हुआ और इसी क्रम में अनेक प्राचीन कृतियों के मुख्यतः ग्रीक से अनुवाद किए गए। कई विद्वानों ने राय दी है कि इस काल में पूरा रोम ग्रीक से लैटिन में अनुवाद करने की एक फैक्ट्री बन गया था।

इस काल का सबसे महत्त्वपूर्ण नाम मार्टिन लूथर है, जिन्होंने सन् 1522 में '*न्यू टेस्टामेण्ट*' का जर्मन भाषा में अनुवाद किया। उनके अनुवाद से अनुवाद के क्षेत्र में एक नई चिन्तन परम्परा शुरू हुई। उनके समय में अनुवाद की दो धाराएँ थीं—एक शब्दानुवाद, दूसरी भावानुवाद, इनमें अर्थ को अधिक महत्त्व दिया गया था। उन्होंने दूसरे मत को महत्त्व देते हुए सहज और सम्प्रेषणीय अनुवाद पर जोर दिया, ताकि आम लोगों को धर्म-ग्रन्थों को समझने में कोई कठिनाई न हो। इस सन्दर्भ में एतीन दोले (Etienne Dolet/1509-1546) का नाम बहुत महत्त्वपूर्ण है। उनका जन्म फ्रांस में हुआ, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अनुवादक का मूल लेखक के 'कथ्य' के साथ पूरी तरह तादात्म्य होना चाहिए। लेकिन कुछ रूढ़िवादी लोगों ने उनके इस मत को स्वीकार नहीं किया।

जहाँ तक अंग्रेजी का सम्बन्ध है, इंग्लैण्ड में अनुवाद की परम्परा नौवीं शताब्दी से शुरू हुई, जो सोलहवीं शताब्दी तक आते-आते काफी मजबूत हो चुकी थी। अंग्रेजी के प्रसिद्ध आलोचक जार्ज सेण्ट्सबरी कहते हैं कि पन्द्रहवीं शताब्दी में मौलिक लेखन की अपेक्षा अनुवाद ही अधिक हुए हैं। जॉन विक्लिक(1320-1384) ने अंग्रेजी में बाइबिल के '*न्यू*

टेस्टामेण्ट का पहला अनुवाद किया, इसके बाद हिब्रू, ग्रीक तथा लैटिन अनुवादों के आधार पर अंग्रेजी में बाइबिल के कई अनुवाद हुए। सन् 1604 में जेम्स प्रथम ने 47 अनुवादकों को बाइबिल का अधिकृत अनुवाद करने के लिए नियुक्त किया, जो सन् 1611 में तैयार हुआ। पहले तो इस अनुवाद का काफी विरोध हुआ, लेकिन धीरे-धीरे इसके संगीतमय गद्य ने सभी को मुग्ध कर लिया और अंग्रेजी में अभी तक के सभी अनुवादकों में इसे सर्वश्रेष्ठ माना जाने लगा। इसका प्रमुख कारण था इस अनुवाद का भाषा सौष्ठव और अभिव्यक्ति कौशल।

रोमन साम्राज्य के विघटन के समय ही पश्चिमी यूरोप में लैटिन लोकभाषा बन गई। बेदे (Bede) ने *'इक्लेज़िएस्टिकल हिस्ट्री'* (Ecclrsiastical History) (सन् 731) की रचना लैटिन में ही की थी। महान शिक्षाविद सम्राट आल्फ्रेड (सन् 848-99) ने इसका अनुवाद एंग्लो-सैक्सन भाषा में किया। बोयेथियस द्वारा रचित *'कन्सोलेशन्स ऑफ फिलॉसफी'* का अनुवाद भी उन्होंने ही किया था। पाश्चात्य इतिहास में ये दोनों अनुवाद आज भी अनुवाद परम्परा में मील के पत्थर गिने जाते हैं।

मध्य युग में यूनानी भाषा-साहित्य के पढ़ने-पढ़ाने वालों की संख्या पश्चिमी यूरोप में बहुत कम रह गई थी और इसके साहित्य के प्रति भी कोई विशेष रुचि नहीं रह गई थी, फिर भी आयरलैण्ड के प्रसिद्ध विद्वान 'जोहानस स्कोटस एरीजिना' ने चार्ल्स द बाल्ड के अनुरोध पर *'जयोनीसियस दि एरियोपगीट'* का अनुवाद किया था।

बाद में कार्डोवा के विद्वानों ने अरस्तू की दार्शनिक कृतियों के प्रामाणिक रूपान्तर प्रस्तुत किए, इन विद्वानों द्वारा किए गए रूपान्तरों का फिर लैटिन में अनुवाद किया गया जो सन् 1150 के आस-पास दक्षिणी स्पेन होता हुआ पश्चिमी यूरोप पहुँचा। यह अनुवाद विश्व के सांस्कृतिक विकास की परम्परा में एक अनुवादक का सर्वोत्तम योगदान कहा जा सकता है। दो शताब्दियों बाद कुस्तुन्तुनिया से अनेक अनूदित रचनाएँ पश्चिम जाने लगी। इससे वहाँ के विद्वानों के यूनानी भाषा-साहित्य पर गहरी पकड़ का अनुमान लगाया जा सकता है। पुनर्जागरण के आन्दोलन में जिस अनुवाद ने एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और जो नए युग का शुभारम्भ कहा जाता है वह था लिथोण्टिपस पाइलेट्स द्वारा किया गया होमर का लैटिन में अनुवाद। इसके लिए जिओबानी बोकच्चो (सन् 1313-1375) तथा फ्रांसेस्को पेट्रार्क(सन् 1304-1374) ने अनुवाद को भरपूर सहयोग दिया।

इसी समय अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि एवं कहानीकार चौसर, फ्रांसीसी रूमानी कथाओं को अंग्रेजी में अपने ढंग से कह रहे थे। इसके बाद पन्द्रहवीं शताब्दी में सर टॉमस मैलरी ने कई फ्रांसीसी कथाओं के मुक्त रूपान्तर किए और विलियम कैक्सटन ने ओबिद की प्रसिद्ध रचना *मैटामोरफ़ोसीज़'* का अत्यन्त रोचक और उत्कृष्ट अनुवाद प्रस्तुत किया। यह अलग बात है कि बाद में यह पता चला कि कैक्सटन का यह अनुवाद मूल कृति पर आधारित न होकर उसके फ्रांसीसी अनुवाद पर आधारित था, वास्तव में यूनानी और लैटिन भाषा की रचनाओं के अच्छे अनुवाद का युग प्रथम एलिजाबेथ और प्रथम जेम्स के शासनकाल से आरम्भ होता है। इस युग की सबसे महत्त्वपूर्ण रचना प्राचीन यूनानी भाववादी दार्शनिक प्लुटार्क (सन् 46-126) की *'लाइब्ज'* का सर टॉमस नार्थ द्वारा किया गया अनुवाद है, जो सन् 1579 में किया गया। शेक्सपीयर द्वारा इसके उपयोग ने इस रचना को अत्यधिक प्रसिद्ध कर दिया। लेकिन इस अनुवाद में 'प्लुटार्क' और अनुवादक एकाकार नहीं हो पाए। कहीं-कहीं मूल और अनुवाद में समरूपता का अभाव दिखाई देता है। सन् 1566 में विलियम ऐडलिंगटन के एपुलियस गोल्डेन ऐस का अनुवाद इसलिए अधिक प्रसिद्ध हुआ क्योंकि इसमें मूल रचना की रोचकता एवं भाव साम्यता अक्षुण्ण बनी रहती है। यह अनुवाद बहुत लम्बे समय तक, जब तक रॉबर्ट ग्रेस ने इसका नया रूपान्तर प्रकाशित न करवा दिया यह अनुवाद सर्वोत्तम माना जाता रहा।

उपर्युक्त दोनों अनुवादों की भिन्नता का मूल आधार एलिजाबेथ युग के गद्य और आधुनिक गद्य के अन्तर को स्पष्ट करता है।

इनकी अगली कड़ी में जार्ज चौपन द्वारा किए गए *इलीयड* और *ओडीसी* के अनुवाद हैं जो अत्याधुनिक हैं, वही बात अलेक्जेण्डर पोप (सन् 1688-1744) द्वारा किए गए होमर की रचनाओं के पद्यानुवाद के लिए कही जा सकती है, इन अनुवादों पर इनके युग की रुचि का अत्यधिक प्रभाव है, अर्थात् अनुवाद में यह कहीं नहीं लगता कि होमर 18वीं शताब्दी के नृत्यशास्त्रवादी कवि नहीं थे। इसकी अपेक्षा ड्राइडन (सन् 1631-1700) द्वारा किया गया वर्जिल के महाकाव्य *एनियड (Aeneid)* का अनुवाद है, जिसमें अनुवादक मूल की आत्मा का स्पर्श कभी नहीं करता, यह अनुवाद सन् 1967 में प्रकाशित हुआ।

कवियों द्वारा किए गए श्रेष्ठ अनुवादों में शेली द्वारा रूपान्तरित होमरीय *'हिम्टु मरक्यूरी'* है, परन्तु विक्टोरिया युगीन कवियों ने उसके आदर्शों का निर्वाह नहीं किया। अनुवाद तो निरन्तर होते रहे, लेकिन उन अनुवादों में वह प्राकृतिक सहजता नहीं मिलती जो उत्कृष्ट और परिनिष्ठित अनुवादों का लक्षण माना जाता है। जो सहज सम्प्रेषणीयता अनुवाद में अपेक्षित है वह दिखाई नहीं देती।

फ्रांस में देखें तो लकौत द लीले (सन् 1818-94) का नाम उल्लेखनीय इसलिए कहा जा सकता है क्योंकि उन्होंने यूनानी और लैटिन की श्रेष्ठ रचनाओं का बहुत ही अच्छा अनुवाद प्रस्तुत किया। वैसे तो स्वच्छन्दतावादी आन्दोलन के विरोधियों से उन्हें अधिक समर्थन और सम्मान प्राप्त था, लेकिन उनके अनुवादों की श्रेष्ठता इस बात से प्रमाणित होती है कि उनके द्वारा अनूदित *'इलीयड'* और *'ओडीसी'* को पुनः स्पेनी भाषा में रूपान्तरित किया गया। यह उनकी अनुवाद कला प्रवीणता का ही परिणाम था।

इंग्लैण्ड में बेंजामिन जावेट ने सन् 1817 में प्लेटो का अनुवाद प्रकाशित किया, जिसमें शैली की दृष्टि से तो कई खामियाँ थीं लेकिन कई आलोचकों के अनुसार इस अनुवाद के बाद अनुवाद कला में एक नया मोड़ आया और अनुवाद ने कुछ बन्धनमुक्त होकर खुले में साँस लेना प्रारम्भ किया। प्लेटो के अनुवाद के सन्दर्भ में विचार करें तो स्वस्थ अनुवाद की परम्परा सन् 1941 में एफ.एम. कॉर्नफोर्ड के *'रिपब्लिक'* के अनुवाद के प्रकाशन से शुरू होती है।

अनुवाद के इतिहास में अंग्रेजी की कुछ ऐसी असाधारण उपलब्धियाँ हैं जिन्हें हम विश्व-वांग्मय की अमूल्य निधि कह सकते हैं। इनमें स्कॉटलैण्ड के कवि गाविन डालस द्वारा अनूदित वर्जिल के महाकाव्य *'एनियड'* (सन् 1553) और आर्पर गोल्डिंग (सन् 1565-67) तथा क्रिस्टोफर मार्लो द्वारा ओविद की रचना *'मेटामोर फ़ोसीज़'* के अंग्रेजी रूपान्तर उल्लेखनीय हैं। लेकिन जार्ज सैण्डिस ने सन् 1626 में ओविद का रूपान्तरण पूरा किया, यह सतरहवीं और अठारहवीं शताब्दी में सबसे अधिक चर्चित रहा। सन् 1559-1581 के बीच प्राचीन रोम के विरक्तिवादी (स्टोइक) दार्शनिक तथा नाटककार सेनका (सन् 04-65) की रचनाओं के कई अनुवाद हुए जिनसे अंग्रेजी का काव्य नाटक बहुत प्रभावित हुआ। प्लिनी की *'नेचुरल हिस्ट्री'* का अनुवाद सन् 1601 में फिलेमन हॉलैण्ड द्वारा प्रकाशित करवाया गया। सन् 1561 में कास्तिलियोनी की *'इलकार्निजियानो'* का सर टॉमस हॉबी द्वारा तथा सन् 1591 में ऐरिओस्टो रचित *'ऑलैण्डो फ्यूरियोसो'* का सर हैरिंगटन द्वारा तथा सन् 1603 में जॉन फ्लोरियो द्वारा मोन्तने के निबन्धों के अनुवाद महत्त्वपूर्ण अनुवादों में गिने जाते हैं। स्पेन के प्रसिद्ध लेखक सेर्वान्तेस दे सावेद्रा (सन् 1547-1616) की महत्त्वपूर्ण रचना *'डॉन-क्विक्ज़ोट'* के पहले भाग का अनुवाद तो सन् 1612 में ही हो चुका था। अठारहवीं शताब्दी में इसके तीन अनुवाद और हुए *मॉट्टोज* का सन् 1712 में, *जर्विस* का सन् 1742 में और *स्मालेट* का सन् 1755 में। सर विलियम जोन्स (सन् 1746-94) ने अरबी की कविताओं तथा संस्कृत के *'अभिज्ञान शाकुन्तलम्'* तथा *'मनुस्मृति'* के अनुवाद किए।

सन् 1883 में लैंग, लीफ और मायर्स ने *'इलीयड'* का एक बहुत अच्छा अंग्रेजी रूपान्तरण प्रकाशित किया और सन् 1894 में सोफोक्लेस रचित *'इलेक्ट्रा'* का अनुवाद आर.सी. जेब्द ने किया, लेकिन उस समय के विद्वान समीक्षकों के मतानुसार ये दोनों अनुवाद ही उत्कृष्टता के पैमाने पर खरे नहीं उतरे और अनुवाद में अप्रचलित प्रयोगों की बहुलता के कारण खुद अप्रचलित हो गए। तत्कालीन कवि भी अनुवाद की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम नहीं कहे जा सकते। ईस्खिलस द्वारा रचित (*एगमिक्नोन*) का राबर्ट ब्राउनिंग (सन् 1812-89) द्वारा किया गया अनुवाद भी इसी कोटि में आता है। उधर जर्मन भाषा में भी काफी अच्छे अनुवाद शुरू हो गए थे। मार्टिन लूथर द्वारा किए गए बाइबिल के (सन् 1522-34) अनुवाद ने जर्मन भाषा को तो नवजीवन दिया ही, साथ ही अनुवादकों को भी सहज और एक आदर्श अनुवाद मिल गया और यहीं से अनुवाद एक सर्जनात्मक विधा के रूप में मान्य हो गया। इसके परिणामस्वरूप ही क्रिस्टोफर मार्टिन वीलांद (सन् 1733-1813) जैसे कवियों से लेकर राइनर मेरिय रिल्के (1875-1926) तक सभी श्रेष्ठ कवियों ने इसका अनुपालन किया। श्लेगेल द्वारा शेक्सपियर के नाटकों के जर्मन अनुवाद (सन् 1797-1810) विश्व-साहित्य के श्रेष्ठ अनुवादों की प्रथम श्रेणी में गिने जाते हैं। होमर के पद्यात्मक जर्मन अनुवाद तो एक के बाद एक होते ही रहे। जर्मनी के वौन शेफर (सन् 1948) जैसे अनुवादकों ने यह सिद्ध कर दिखाया कि यूनानी षट्पदियों (हेक्सामीटर्स) को आधुनिक भाषा में रूपान्तरित करना असम्भव नहीं है। इस दृष्टि से एच.बी. कॉटोरिल द्वारा अंग्रेजी में किया गया *'ओडिसी'* का अनुवाद एक अच्छा उदाहरण कहा जा सकता है।

उन्नीसवीं शताब्दी में अनुवाद

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में अतुकान्त पद्य में केरी द्वारा किया गया दान्ते के महाकाव्य *'डिवाइन कॉमेडी'* का अनुवाद (सन् 1805-12) और कोलरिज द्वारा शिलर की रचना *'वौलेस्टाइन'* का अनुवाद (सन् 1800) महत्त्वपूर्ण मील के पत्थर रहे। वैसे तो उन दिनों अनुवादों की कोई कमी नहीं थी, पर एक धारणा पनप रही थी कि जो अनुवाद करने योग्य है उसका अनुवाद नहीं किया जा सकता (Nothing worth translating, can be translated)। यहाँ शताब्दी के प्रारम्भ के विद्वान मैथ्यू ऑर्नाल्ड (सन् 1822-88) का उल्लेख करना अत्यन्त आवश्यक है। ड्राइडन के समान ही साहित्यिक आलोचना के इतिहास में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। सन् 1861 में मैथ्यू ऑर्नाल्ड का *'ऑन ट्रान्सलेटिंग होमर'* शीर्षक विचारोत्तेजक निबन्ध प्रकाशित हुआ। उनके अनुसार किसी भी रचना का रूप 'फार्म' उसके 'कथ्य' की तरह ही महत्त्वपूर्ण होता है, अतः अनुवादक को उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। उनके अनुसार एक विशेष वर्ग ही अनुवाद का पाठक होता है, न कि जनसाधारण, इसलिए अनुवादक को मूल लेखक की रचना तथा उसकी भाव-भूमि से पूर्णतः तादात्म्य स्थापित कर उसी वर्ग के स्तर के अनुसार अनुवाद करना चाहिए। इसके बाद अनुवाद की समकालीन परम्परा का सूत्रपात हुआ। इस परम्परा में कई सफल अनुवादों का नाम लिया जा सकता है। इनमें कौन्स्टन्स गार्नेट द्वारा टॉल्स्टाय और तुर्गनेव का तथा विलियम आर्चर द्वारा इब्सन का अनुवाद कई दृष्टियों से ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। अरस्तू के महान उपन्यास का *'रिमैम्ब्रेन्स ऑफ थिंग्सपास्ट'* के नाम से हुए अनुवाद का भी भव्य स्वागत हुआ। इसी प्रकार आर्थर वेली का *'चीनी कविताएँ'* सन् 1946, एजरा पाउण्ड का *'कैथे'* जो चीनी से अनूदित है तथा ऐंग्लो-सैक्सन कविता *'द सीफेयरर'* (सन् 1912) बहुत महत्त्वपूर्ण अनुवादों की कड़ी में गिने जाते हैं। *'पोयम्स ऑफ सेंटजॉन ऑफ द क्रॉस'* (सन् 1951) तथा विला और एडविन म्यूर (Edwin Muir) द्वारा काफ्का के अनुवाद की भी काफी प्रशंसा हुई है।

इस शताब्दी में हुए अनुवादों में फिट्जेराल्ड (सन् 1809-1883) के उल्लेख के बिना इस अनुवाद परम्परा को ठीक से नहीं समझा जा सकेगा। उन्होंने वैसे तो कई कृतियों का अनुवाद किया, पर उमर खय्याम की रुबाइयों के अनुवाद ने उन्हें सबसे अधिक प्रसिद्धि दी, इस अनुवाद में उन्होंने ड्राइडन द्वारा बताए गए 'पैराफ्रेज' और अनुकरणपरक अनुवाद का कुछ ऐसे मिले-जुले रूप से सहारा लिया कि उसे एक 'मौलिक कृति' के स्तर पर स्थापित कर दिया। उनके इस अनुवाद के लिए जॉन पैने जैसे विद्वान ने कहा है कि यह अनुवाद मूल रचना के भावों से बहुत अलग हो गया है इसलिए इसे अच्छा अनुवाद नहीं कहा जा सकता है, इसलिए कुछ लोगों ने इसे साहित्यिक रूपान्तरण का चमत्कार भी कहा है। उन्होंने इन रुबाइयों के पाँच अलग-अलग अनुवाद किए लेकिन पहला अनुवाद ही सबसे अच्छा माना गया। इसका पहला संस्करण सन् 1859 में प्रकाशित हुआ।

फिट्जेराल्ड कोई बड़े विचारक नहीं थे, लेकिन वे काव्य रचना के अनुवाद की कठिनाइयों से परिचित थे। वे शाब्दिक अनुवाद की अपेक्षा भावानुवाद को ही अच्छा समझते थे।

13.4 20वीं शताब्दी में अनुवाद

बीसवीं शताब्दी में अनुवाद को एक उपेक्षित विधा न मानकर इसको एक स्वतन्त्र साहित्यक विधा के रूप में स्वीकार किया गया। इतना ही नहीं अनुवाद के सम्बन्ध में विद्वानों में एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाते हुए गहराई से चिन्तन मनन शुरू हुआ यही कारण है बीसवीं शताब्दी में न केवल संख्या की दृष्टि से बल्कि विषय और क्षेत्र की दृष्टि से भी अनुवाद का चमत्कारिक रूप से बहुत ही व्यापक क्षेत्र विकसित हुआ और अनुवाद के सिद्धान्तों के सन्दर्भ में एक वैज्ञानिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण अपना लिया गया।

पश्चिम में अनुवादों को जो गरिमा प्राप्त हुई है, उसका ही एक प्रमाण मैक्समूलर द्वारा सम्पादित और अनेक भाषाविदों द्वारा अनूदित पचास खण्डों का *'द सेक्रेड बुक्स ऑफ द ईस्ट'* है। प्राच्य धर्मग्रन्थों के अनुवादकों में जेम्स डार्मेस्टीटर, एल.एच. मिल्स, काशीनाथ त्र्यम्बक तैलंग, रोज डेविड्स, जुलियस एग्लिंग, हर्मन ओल्डेन वर्ग, सैमुएल बील, एच. कर्न, हर्मन जकोबी, मैक्समूलर, जूलियस जॉली, एम. ब्लूम फील्ड, ई.बी. कॉवेल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। रूस, जर्मनी, जापान आदि देशों में अनुवादकों की अनेक क्रियाशील संस्थाएँ जो उत्कृष्ट कृतियों की चाहे वे किसी भी भाषा की हों, मूल्यांकन करती रहती हैं और तत्काल अपनी भाषा में अनुवाद कर लेती हैं। मास्को का *प्रगति प्रकाशन* और *रादुका*

प्रकाशन ऐसे ही दो रूसी प्रकाशन संस्थान हैं। रामचरित मानस का रूसी में डब्ल्यू डगलस पी. हिल द्वारा किए गए रूपान्तरण का अंग्रेजी-रूपान्तरण (सन् 1952), एम शान्ता, एम. रोजर्स, बी. बाउमर, एम. बिडोली के सहयोग से रैमुण्डो पनिक्कर द्वारा किया गया, वेद मन्त्रों का संग्रह और अंग्रेजी अनुवाद (सन् 1977), लिण्डा हेस और शुकदेव सिंह द्वारा किया गया कबीर कृत *'बीजक'* का रूपान्तर, वादविल द्वारा कबीर की कतिपय रचनाओं का अंग्रेजी अनुवाद (सन् 1974), जार्ज कार्डोना द्वारा पाणिनी की *विवृतियाँ आठ खण्ड*, राबर्ट पी. ओल्डमैन द्वारा *वाल्मीकि रामायण* का अंग्रेजी अनुवाद, ऐसे हजारों रूपान्तरण भारतीय संस्कृति को विश्व की भिन्न-भिन्न भाषाओं में सम्प्रेषित कर रहे हैं।

यूनेस्को द्वारा अनुवाद करवाई गई कृतियाँ भी पाश्चात्य अनुवादकों की जिज्ञासा, तत्परता और सांस्कृतिक चेतना को रेखांकित करती है। तात्पर्य यह है कि बीसवीं शताब्दी में पाश्चात्य अनुवाद-साहित्य का अभूतपूर्व विकास हुआ है। साहित्य दर्शन, विज्ञान, समाजशास्त्र इत्यादि सभी अनुशासनों में अनुवाद-कार्य हो रहे हैं। वर्तमान युग का अनुवाद-साहित्य यकीनन इतना सर्वव्यापी और बहुआयामी है कि उसका विवरण प्रस्तुत करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। यूरोप, अमरीका, जापान, चीन आदि देशों के आचार्य-अनुवादक अपने-अपने विश्वविद्यालयों में प्राचीन ग्रन्थों पर न केवल शोध कर रहे हैं बल्कि विश्व के उत्कृष्ट एवं महत्त्वपूर्ण प्राचीन साहित्य को अपनी-अपनी भाषा में, विशेष रूप से, अंग्रेजी, रूसी और जापानी में रूपान्तरित कर रहे हैं।

भारतीय साहित्य की महत्त्वपूर्ण रचनाएँ रवीन्द्रनाथ कृत *'गीतांजलि'*, यूनेस्को द्वारा प्रकाशित *गोदान*, रूसी भाषा में प्रेमचन्द और तुलसी का विपुल साहित्य, चीनी और जापानी में भी अनूदित हुआ है। बाद के वर्षों में मशीन द्वारा अनुवाद की सम्भावना पर विचार विमर्श शुरू हुआ और इस दिशा में बहुत तेजी से अनुसन्धान प्रारम्भ हुआ। परिणाम स्वरूप इस क्षेत्र में काम काफी आगे बढ़ गया। लेकिन अभी भी सही-सही अनुवाद कर पाना सम्भव नहीं हो सका है। मशीनी अनुवाद के सम्बन्ध में अमरीकी भाषाविद डब्ल्यू.जे. हटकिन्स (W.J. Hutchins) ने शोधपूर्ण लेख में मशीन ट्रान्सलेशन की समस्याओं पर विस्तार से विचार किया है।

13.5 सारांश

पश्चिम में औपचारिक अनुवाद की परम्परा वस्तुतः बाइबल के अनुवाद से शुरू हुई। इनमें 'सेप्टुआजिण्ट' सबसे अधिक प्रसिद्ध हुआ जो ई. पू. 270 में किया गया था। ई.पू. 240 में होमर के महाकाव्य 'ओडेसी' का पद्यानुवाद, कई ग्रीक नाटकों का अनुवाद, प्लेटो के *'प्रोतोगोरस'* का अनुवाद हुआ। मध्ययुग में पश्चिमी यूरोप में 'गॉस्पेल' सहित कई धार्मिक निबन्धों का भाषान्तर हुआ। बारहवीं शताब्दी तक आते-आते जब तोलेदो विद्या का प्रमुख केन्द्र बन गया, जहाँ कई ग्रीक ग्रन्थों के लैटिन में अनुवाद हुए। अनुवाद तथा अनुवाद कला को आगे बढ़ाने में स्पेन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। ग्यारहवीं शताब्दी में ही बिशप डान रैमुण्डो ने तोलेदो में अनुवादकों के लिए एक स्कूल स्थापित किया। जहाँ अनेक अरबी और यहूदी विचारकों की रचनाओं का लैटिन में अनुवाद किया गया।

सन् 1522 में *'न्यू टेस्टामेण्ट'* के जर्मन अनुवाद से अनुवाद के क्षेत्र में एक नई चिन्तन परम्परा शुरू हुई। उसमें शब्दानुवाद के बजाए भावानुवाद को अधिक महत्त्व दिया गया। सोचा गया कि आम लोगों को धर्म-ग्रन्थों को समझने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। सोलहवीं शताब्दी में फ्रांस के एतिन दोले ने इस बात पर जोर दिया कि मूल लेखक के 'कथ्य' से अनुवादक का पूरी तरह तादात्म्य होना चाहिए। पर कुछ रूढ़िवादी लोगों ने उनके इस मत को स्वीकार नहीं किया।

इंग्लैण्ड में नौवीं शताब्दी से शुरू हुई अनुवाद की परम्परा सोलहवीं शताब्दी तक काफी मजबूत हो गई। बाद में कार्डोवा के विद्वानों द्वारा अरस्तू की दार्शनिक कृतियों के रूपान्तरण से किए गए लैटिन अनुवाद सन् 1150 के आस-पास दक्षिणी स्पेन होता हुआ पश्चिमी यूरोप पहुँचा।

अनुवाद की इस कड़ी में जार्ज चौपन द्वारा किए गए *इलीयड* और *ओडेसी* के अनुवाद, तथा अलेक्जेण्डर पोप (सन् 688-1744) द्वारा किए गए होमर की रचनाओं के पद्यानुवाद अत्याधुनिक हैं, इन अनुवादों पर युगीन रुचि का अत्यधिक प्रभाव है। ड्राइडन (सन् 1631-1700) द्वारा किया गया वर्जिल के महाकाव्य *एनीयड* का अनुवाद भी इस सन्दर्भ में अवलोकनीय है।

फ्रांस में लकौत द लीले (सन् 1818-94) ने यूनानी और लैटिन की श्रेष्ठ रचनाओं का बहुत अच्छा अनुवाद किया। उनके द्वारा अनूदित *'इलीयड'* और *'ओडेसी'* को पुनः स्पेनी भाषा में रूपान्तरित किया गया। यह उनकी अनुवाद कला प्रवीणता का ही परिणाम था।

इंग्लैण्ड में बेंजामिन जावेट ने सन् 1817 में प्लेटो का अनुवाद प्रकाशित किया, जिसमें शैली की दृष्टि से तो कई खामियाँ थीं लेकिन कई आलोचकों के अनुसार इस अनुवाद के बाद अनुवाद कला में एक नया मोड़ आया और अनुवाद ने कुछ बन्धनमुक्त होकर खुले में साँस लेना प्रारम्भ किया।

अनुवाद के इतिहास में अंग्रेजी की कुछ ऐसी असाधारण उपलब्धियाँ हैं जिन्हें हम विश्व-वांग्मय की अमूल्य निधि कह सकते हैं। इनमें स्कॉटलैण्ड के कवि गाविन डालस द्वारा अनूदित वर्जिल के महाकाव्य *'एनियड'* (सन् 1553) और आर्पर गोल्डिंग (सन् 1565-67) तथा क्रिस्टोफर मार्लो द्वारा ओविद की रचना *'मेटामोर फ़ोसीज़'* के अंग्रेजी रूपान्तर उल्लेखनीय हैं।

मार्टिन लूथर द्वारा किए गए बाइबल के (सन् 1522-34) अनुवाद ने जर्मन भाषा को तो नवजीवन दिया ही, साथ ही अनुवादकों को भी सहज और एक आदर्श अनुवाद मिल गया और यहीं से अनुवाद एक सर्जनात्मक विधा के रूप में मान्य हो गया।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में अतुकान्त पद्य में केरी द्वारा किया गया दान्ते के महाकाव्य *'डिवाइन कॉमेडी'* का अनुवाद (सन् 1805-12) और कोलरिज द्वारा शिलर की रचना *'वौलेस्टाइन'* का अनुवाद (सन् 1800) महत्त्वपूर्ण मील के पत्थर रहे। सन् 1861 में मैथ्यू ऑर्नाल्ड का *'ऑन ट्रान्सलेटिंग होमर'* शीर्षक विचारोत्तेजक निबन्ध प्रकाशित हुआ। उनके अनुसार किसी भी रचना का 'फार्म' उसके 'कथ्य' की तरह ही महत्त्वपूर्ण होता है, अतः अनुवादक को उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इस शताब्दी में फिट्जेराल्ड (सन् 1809-1883) द्वारा उमर खय्याम की रुबाइयों का अनुवाद बहुत अच्छा माना गया। वे काव्य रचना के अनुवाद की कठिनाइयों से परिचित थे। वे शाब्दिक अनुवाद की अपेक्षा भावानुवाद को ही अच्छा समझते थे।

बीसवीं शताब्दी में न केवल संख्या की दृष्टि से बल्कि विषय और क्षेत्र की दृष्टि से भी अनुवाद का चमत्कारिक विकास हुआ और अनुवाद के सिद्धान्तों के सन्दर्भ में एक वैज्ञानिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण अपना लिया गया।

बीसवीं शताब्दी में पाश्चात्य अनुवाद-साहित्य का अभूतपूर्व विकास हुआ है। साहित्य दर्शन, विज्ञान, समाजशास्त्र इत्यादि सभी अनुशासनों में अनुवाद-कार्य हो रहे हैं। वर्तमान युग का अनुवाद-साहित्य यकीनन सर्वव्यापी और बहुआयामी है। यूरोप, अमेरिका, जापान, चीन आदि देशों के आचार्य-अनुवादक अपने-अपने विश्वविद्यालयों में प्राचीन ग्रन्थों पर न केवल शोध कर रहे हैं बल्कि विश्व के उत्कृष्ट एवं महत्त्वपूर्ण प्राचीन साहित्य को अपनी-अपनी भाषा में, विशेष रूप से, अंग्रेजी, रूसी और जापानी में रूपान्तरित कर रहे हैं।

13.6 शब्दावली

व्याख्यात्मक : जिसे स्पष्ट करने की आवश्यकता हो।

सम्प्रेषणीयता : विचारों का सहज ढंग से आदान-प्रदान।

स्वच्छन्दतावादी : जो किसी बँधी-बँधाई लीक पर न चले।

तादात्मय : दो विचारधाराओं में मेल।

13.7 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. अनुवाद की आवश्यकता क्यों हुई?
2. रोजेटा शिला किस स्थान पर है? यह किसने लगाया था? इस शिला पर किस भाषा में किसका आदेश लिखा हुआ है?

3. औपचारिक अनुवाद की परम्परा पश्चिम में कब शुरू हुई?
4. ग्यारहवीं शताब्दी में अनुवादकों के लिए कहाँ और किसने स्कूल शुरू किया?
5. पुनर्जागरण युग अनुवाद का स्वर्ण-काल क्यों कहा जाता है।
6. सन् 1522 में *'न्यू टेस्टामेण्ट'* का अनुवाद किसने किस भाषा में किया? इस अनुवाद से अनुवाद के क्षेत्र में क्या परिवर्तन आया?
7. एतीन दोले का अनुवाद-परम्परा में क्या योगदान है?
8. कवियों द्वारा किए गए श्रेष्ठ अनुवादों में शेली का योगदान बताइए?
9. लकौत द लीले कहाँ के रहने वाले थे? अनुवाद के क्षेत्र में उनका नाम क्यों उल्लेखनीय है?
10. बीसवीं शताब्दी के अनुवाद को किस दृष्टि से देखा जाता है? इस क्षेत्र में क्या दृष्टिकोण अपनाया गया?
11. धर्मग्रन्थों के अनुवादकों में कौन-कौन-से नाम उल्लेखनीय हैं?
12. अनुवाद के क्षेत्र में यूनेस्को का क्या योगदान रहा है?
13. भारतीय साहित्य की कौन-कौन-सी प्रमुख रचनाओं का पाश्चात्य अनुवादकों ने अनुवाद किया है?
14. उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में अनुवाद के क्षेत्र में केरी का क्या विशेष योगदान रहा है?
15. सन् 1861 में मैथ्यू अनार्ल्ड ने *'ऑन ट्रान्सलेटिंग होमर'* निबन्ध में किस बात पर बल दिया है?
16. उमर खय्याम की रुबाइयों के अनुवाद में फिट्जेराल्ड ने कौन-सी पद्धति अपनाई है?
17. बीसवीं शताब्दी में अनुवाद के क्षेत्र में कौन-कौन-से नए परिवर्तन आए?
18. बीसवीं शताब्दी में भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाली कौन-कौन-सी रचनाओं का अनुवाद हुआ?
19. मशीन ट्रान्सलेशन के सम्बन्ध में आप क्या जानते हैं?

13.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- J.C. Catford, *Linguistic Theory of Translation.*
- George Steiner, *After Babel: Aspects of Language & Translation*, OUP, New York & London, 1975.
- Peter Newmark, *Approaches to Translation,* 1981.
- Sujit Mukherjee, *Translation as Discovery*, Orient Longman, Hyderabad, 1994.
- Tejswini Niranjana, *Sitting Translation.*, Hyderabad, Orient Longman.
- R. Raghunath Rao, *The Art of Translation,* Delhi, Bhartiya Anuvad Parishad.
- Susan Bassnett & Ande Lefvere, *Translation/History/Culture.,* Publishers, London, 1990.
- Susan Bassnett, *Translation Studies.*, Routledge, London & New York, 1988.
- Anuradha Dinwaney & Carol Maier, (Ed.), *Between Languages & Culture(Translation And Cross.Culture Texts)*, OUP, Delhi, 1996.
- Spivak, Gayatri Chakraborty, *The Politics of Translation,* Routledge, London & New York, 1992/2000.
- Hardwick, Lorna, and St. Jerome, *Translating Words, Translating Culture*, Pub. Co. 2000.
- Moore, N. Cornelia and Lower, Lucy, *Translation East and West: A Cross.Cultural Approach*, University of Hawaii and East-West Centre.

इकाई 14 अनुवाद की अमेरिकी एवं कनाडाई परम्पराएँ

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 अमेरिकी परम्परा

- 14.2.1 प्रस्तावना
- 14.2.2 अनुवाद-सिद्धान्त के विचार एवं परम्पराएँ
- 14.2.3 आन्द्रे लफेवेयर
- 14.2.4 लॉरेन्स वेनुटी
- 14.2.5 सारांश

14.3 कनाडाई अनुवाद परम्परा

- 14.3.1 प्रस्तावना
- 14.3.2 विचार एवं परम्पराएँ
- 14.3.3 सुज़ान द लोब्तिनियेर हारवुड
- 14.3.4 शेरी सिमोन
- 14.3.5 सारांश

14.4 अभ्यास के लिए प्रश्न

14.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

14.0 उद्देश्य

यह इकाई अनुवाद की अमेरिकी एवं कनाडाई परम्परा से सम्बन्धित है। इस इकाई को पढ़ने से अनुवाद अध्ययन में एम.ए. करने वाले शिक्षार्थियों को अनुवाद की अमेरिकी एवं कनाडाई परम्परा की संक्षिप्त जानकारी मिलेगी। इस इकाई का मुख्य उद्देश्य उत्तरी अमेरिका के दो देशों—संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा—की अनुवाद परम्पराओं पर विचार करना है। यहाँ हम यह दिखाना चाहते हैं कि भाषा सम्बन्धी नीतियों में अन्तर के कारण कैसे ये दो पड़ोसी देश अनुवाद सम्बन्धी कार्यों में भिन्न हैं। हम दोनों देशों की अनुवाद परम्पराओं का अध्ययन करेंगे और दोनों परम्पराओं में से अलग-अलग दो-दो ऐसे विशिष्ट विद्वानों के कार्यो पर चर्चा करेंगे जिन्होंने अनुवाद अध्ययन के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है और सारी दुनिया में अनुवाद अध्ययन पर अपने विचारों का प्रभाव छोड़ा है।

14.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम उत्तरी अमेरिका के दो देशों, संयुक्त राज्य अमेरिका एवं कनाडा की अनुवाद परम्पराओं पर विचार करेंगे। यद्यपि बहुत हद तक दोनों समान परम्पराओं से जुड़े हैं, अपनी भाषाई नीतियों एवं संस्कृति के प्रति अपने रवैये में अन्तर के कारण अनुवाद सम्बधी उनके विचारों में बहुत अन्तर है। अमेरिका में शुरू से ही अंग्रेजी को इस नए उपनिवेश की कार्यालयीन भाषा माना गया जबकि कनाडा एक द्विभाषी देश है जहाँ अंग्रेजी एवं फ्रांसीसी—दोनों को कार्यालयीन भाषा का दर्जा दिया गया है। इस कारण भाषा सम्बन्धी नीतियाँ अलग हो गईं एवं अनुवाद सम्बन्धी प्रक्रियाओं में भिन्नता आ गई। हालाँकि दोनों देशों में अनुवाद अध्ययन के बड़े-बड़े विद्वान हुए, कनाडा के लिए अनुवाद एक ऐसी सरकारी आवश्यकता है जो इसकी द्विभाषिकता के मूल में है, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए अनुवाद की ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है। इस कारण इन दोनों पड़ोसी देशों में अनुवाद की परम्पराओं में बहुत अन्तर है।

14.2 अमेरिकी परम्परा

14.2.1 प्रस्तावना

यूरोप के अलग-अलग देशों से लोग आकर अमेरिका में बसे, पर इस नई दुनिया में अंग्रेजी ही बहुसंख्यक भाषा के रूप में स्वीकृत हुई। यूरोप की विभिन्न साहित्यिक परम्पराओं का प्रभाव भी अमेरिकी साहित्य पर पड़ा। ये विचार मुख्यतः अंग्रेजी अनुवादों के माध्यम से अमेरिका पहुँचे। अमेरिकी विश्व दर्शन को हम अंग्रेजी भाषा के माध्यम से ही समझते आए हैं। दुनिया भर में अमेरिका की बढ़ती अर्थ-शक्ति के साथ इसकी भाषा अंग्रेजी महत्त्वपूर्ण रही। सारी दुनिया में अधिकांशतः अंग्रेजी में लिखा साहित्य ही अनूदित होता रहा, जबकि अन्य भाषाओं से अंग्रेजी में सबसे कम अनुवाद होता रहा। इसलिए अमेरिकी साहित्य हर जगह मिल जाता है, पर अमेरिका में अधिक विदेशी साहित्य उपलब्ध नहीं है। अमेरिका में प्रकाशित पुस्तकों के अनुवाद एवं अन्य देशों में प्रकाशित पुस्तकों के अमेरिकी अनुवादों की संख्या में स्पष्ट विषमता दिखाई देती है। फिर भी कहना आवश्यक है कि अनूदित कृतियाँ कई स्पष्ट एवं अस्पष्ट तरीकों से अमेरिकी साहित्य पर असर डालती है, जिससे नई शैलियाँ एवं नई तकनीक विकसित होती रहती है। अब हम कुछ ऐसी साहित्यिक विधाओं पर विचार करेंगे जो अनूदित कृतियों से प्रभावित हुई हैं।

14.2.2 अनुवाद-सिद्धान्त के विचार एवं परम्पराएँ

अमेरिका में अधिकांश अनूदित साहित्य पाठ्यक्रमों में ही मिलता है। पर वह इस तरह पढ़ाया जाता है मानो अनुवाद में अनुवादक की कोई वैचारिक सापेक्षता न हो। लॉरेन्स वेनुटी ने मॉडर्न लैंग्वेज एसोसिएशन ऑफ अमेरिका द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का इस सन्दर्भ में अपनी पुस्तक *अप्रोचेज टू टीचिंग वर्ल्ड लिटरेचर* में गहन अध्ययन प्रस्तुत किया है। वेनुटी ने यह स्पष्ट रूप से दिखाया है कि अनूदित पुस्तकों का चयन 'सटीक अनुवाद, पढ़ाए जाने वाले छात्रों द्वारा पाठ को समझने की क्षमता, बाजार में पुस्तक की उपलब्धता एवं उसकी लोकप्रियता पर निर्भर करता है (वेनुटी 1998:88)।' वेनुटी ने यह दिखाया है कि चयनित अनूदित पाठों पर इन बिन्दुओं से शायद ही कभी विचार किया जाता है। इन बिन्दुओं पर विचार न करने से ऐसा प्रतीत होता है मानो अंग्रेजी भाषा सार्वभौमिक सत्य को वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत करती है। इससे एक भाषाई एवं सांस्कृतिक अहंकार को भी बढ़ावा मिलता है(वेनुटी 1998:92)। वेनुटी ने अपनी इस पुस्तक में यूरोप के प्रमुख लेखकों की अनूदित कृतियों का भी अध्ययन किया है। वेनुटी ने दाँते की *डिवाइन कॉमेडी,* कामू के *द प्लेग,* तथा कुछ अन्य लेखक, जैसे सेरवान्तेस, गेटे, इब्सन, वोल्तेयर, गार्सिया मार्केज की कृतियों का अध्ययन किया है। साथ ही *इलियड* और *ओडिसी* जैसे महाकाव्यों का भी अध्ययन किया है। वेनुटी ने यह दिखाया है कि कोई भी अनुवाद किसी काल विशेष में एक विशिष्ट पाठक वर्ग के लिए ही होता है। पुराने अनुवादों को पढ़ने से उस काल के सांस्कृतिक मूल्यों एवं प्रवृत्तियों का पता चलता है जब वह अनुवाद किया गया था। समकालीन अनुवाद समकालीन सांस्कृतिक मूल्यों को दर्शाता है। इसलिए किस अनुवाद को अध्ययन के लिए चुना गया, यह अपनी संस्कृति को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है। किसी अनूदित कृति के अनुवाद सम्बन्धी पहलुओं पर विचार न करने से हम उसके बहुसांस्कृतिक पक्षों एवं साहित्यिक अनुभवों की विविधताओं से वंचित रह जाते हैं, जो हमारी संस्कृति को समृद्ध कर सकते हैं। वेनुटी ने यह दिखाया है कि कोई भी संस्कृति बिना विदेशी संस्कृति या संस्कृतियों से मिले विकसित नहीं हो सकती है। संस्कृतियों के इस मेल के लिए पाठ्यक्रम में अनूदित कृतियों को पढ़ाना बहुत अच्छा तरीका है। आन्द्रे लफेवेयर ने संयुक्त राज्य अमेरिका के सन् 1900 से 1980 के दशक तक के नाट्य-संग्रहों का विश्लेषण कर यह दिखाया है कि वहाँ की संस्कृति में मुख्यतः पश्चिमी नाट्य साहित्य का ही योगदान है। इन नाट्य संग्रहों का उपयोग यह दिखाने के लिए किया जाता है कि कैसे ग्रीक नाटकों से अब तक के नाटकों का विकास हुआ है (आन्द्रे लफेवेयर 1998:140)। पाठ्यक्रम में चुने हुए नाटकों के बारे में यह स्वाभाविक रूप से मान लिया जाता है कि वे अपने युग की भाषा एवं संस्कृति का निरूपण करते हैं, और यदि हम इन संग्रहों की भूमिका पढ़ें तो स्पष्ट हो जाता है कि संग्रहकर्ताओं ने स्थापित लेखकों की स्थापित कृतियों को महत्त्व दिया है और उन्हें ही चुना है। ग्रीक क्लासिक कृतियों से लेकर, सतरहवीं शताब्दी के 'नव क्लासिक' कृतियों तक या फिर 18वीं सदी के बुर्जुआ नाटकों से लेकर 19वीं सदी के 'उच्च कोटि के नाटकों' (Well made play) या 20वीं सदी के एब्सर्ड नाटकों तक—सभी इन संग्रहों में रखे गए

हैं। इन संग्रहों में अधिकांशतः एस्किलस, सोफोक्लिस एवं यूरापिडिस के ग्रीक क्लासिक नाटक, लोपे द वेगा एवं काल्देरोन के स्पेनी बारोक नाटक, कोर्नेई, रासीन तथा मोलियेर जैसे महान फ्रांसीसी नाटककारों, तथा ह्यूगो, द्यूमा और बोमार्शे जैसे बाद के फ्रांसीसी नाटककारों की ही रचनाएँ मिलती हैं। संगृहित नाटकों से ऐसा आभास मिलता है कि यूरोपीय नाट्य परम्परा में फ्रांसीसी नाट्य परम्परा का वर्चस्व रहा है और फ्रांसीसी नाटक सभी संग्रहों में शामिल किए गए हैं (आन्द्रे लफेवेयर 1996:144)। इससे यह भी पता चलता है कि अमेरिकी मानसिकता में फ्रांसीसी नाट्य साहित्य को 'उच्च कोटि का साहित्य' माना जाता है। गेटे, शिलर, होल्बर्ग, एवं इब्सन जैसे जर्मन एवं स्केण्डिनिवियाई नाटककारों की रचनाएँ भी इन संग्रहों में शामिल हैं।

जैसा पहले भी कहा गया, नाटक का अर्थ सिर्फ पाश्चात्य परम्परा के नाटकों से है और शायद ही कभी किसी गैर पश्चिमी नाटकों को इन संग्रहों में स्थान मिला है। साथ ही अधिकांश संग्रहों में नाटक के उसी अनुवाद को चुना गया जो सबसे अधिक स्वीकृत अनुवाद है। कुछ संग्रहों में गैर पश्चिमी नाटकों को भी चुना गया है। ऐसे संग्रहों में भारतीय नाटककार कालिदास की कृति *अभिज्ञानशाकुन्तलम,* जापानी नाटक *एब्सट्रेक्शन, नाकामित्सु* और *फोर लेडीज एट ए गेम ऑफ पोएम कार्ड्स* को चुना गया है। सन् 1960 के दशक के बाद ब्रेस्ट के ऐसे नाटकों को स्थान मिला है जिनमें मार्क्सवाद का सबसे कम प्रभाव दिखता है (आन्द्रे लफेवेयर; 1996:147)। *द' प्राईवेट लाइफ ऑफ द मास्टर रेस* और *मदर करेज* ब्रेस्ट के ऐसे दो नाटक हैं। इयोनेस्को को भी अपने नाटक *द' लेसन* के साथ लगभग इसी दौरान स्वीकृति मिली। बाद के दिनों में नाट्य संग्रहों में उनके कई नाटकों का चुनाव भी एक ऐसी पुरातन विचारधारा एवं सहित्य विमर्श पर आधारित है जो विद्यार्थियों की मानसिकता को न तो किसी तरह झकझोरे और न ही किसी तरह की सत्ता विरोधी मानसिकता को बढ़ावा दे। इससे पुस्तकों की बिक्री भी सुनिश्चित होती है, क्योंकि अधिकांश शिक्षण संस्थान ऐसे ही संग्रहों को अपने पाठ्यक्रमों में शामिल करेंगे।

अमेरिका में पाठ्यक्रमों में कविताओं का अध्ययन नाटकों के अध्ययन से बिल्कुल अलग है। विशेषकर सन् 1950 और 1960 के दशक में कविताओं का अध्ययन रचनात्मक लेखन में नई धाराओं को जन्म देता है। ऐसा मुख्यतः इसीलिए हुआ कि कविताओं का अनुवाद पाठ्यक्रमों में अध्ययन की दृष्टि से होकर संस्कृति में विशेष परिवर्तनों की आकांक्षा से हुआ है (जेन्ट्सलर 1996:122) रॉबर्ट ब्लाई द्वारा किए गए स्पेनी कविताओं के अनुवादों का अध्ययन कर ई. जेन्ट्सलर ने यह दिखाया है कि कैसे ब्लाई ने वियतनाम युद्ध के विरुद्ध मुहिम छेड़ी और अमेरिका के कॉलेजों में युद्ध विरोधी काव्य-पाठ नियमित रूप से आयोजित किया। ब्लाई तत्कालीन अमेरिकी कविता का आलोचक था और विलियम डफी के साथ मिलकर उसने *द' फिप्टीज* शीर्षक से पत्रिका प्रकाशित की, जिसमें उस समय की कविताओं की जमकर आलोचना की। उन्होंने अमेरिकी कवियों की इसके लिए बहुत आलोचना की कि वे अत्यधिक दार्शनिक हैं और दैनिक जीवन तथा समाज में हो रहे उत्पीड़न के प्रति उदासीन हैं। ब्लाई द्वारा की जा रही आलोचना के मूल में उनके वे विचार हैं जो उन्होंने पाब्लो नेरुदा, जुआन रामोन जिमेनेज, फेदेरिको गार्सिया लोर्का, जॉर्ज त्राकल आदि गैर अंग्रेजी कवियों के अध्ययन से अर्जित किए थे। इन नए कवियों को पढ़ते हुए ब्लाई ने फ्रांस, डेनमार्क, तथा स्वीडेन के कवियों को पढ़ा और फिर लातीनी अमेरिकी कवियों को भी पढ़ा। नोबेल पुरस्कार विजेता जिमेनेज की रचनाओं के आधार पर वे कविता की ऐसी शैली प्रस्तावित करते हैं जो अकादेमिक लेखन शैली से बिलकुल अलग है और समान्य जन-मानस के बीच आसानी से स्वीकृत होती है। ब्लाई गहन अचेतन की काव्यात्मक अभिव्यक्ति के प्रति आकर्षित हुए। वे चाहते थे कि कविता राजनीति की, और दैनिक जीवन की बात करे। वे उल्लिखित कवियों से इसलिए प्रभावित थे कि वे सामान्य लोगों के उद्विग्न मन एवं कष्टों को स्वर देने में सक्षम थे। उनके अनुवादों ने उनकी तथा औरों की रचनाओं को प्रभावित किया। अपने ऐसे विचारों के आधार पर उन्होंने वियतनाम युद्ध का विरोध किया और वे सरकार के दृष्टिकोण के विरुद्ध खड़े भी रहे। साहित्यिक अनुवाद एक ऐसा हथियार था, जिससे अमेरिकी काव्य रचनाओं में विरोध के स्वर के लिए स्थान बना। साहित्यिक अनुवादों द्वारा यह स्थान एक ऐसे अमेरिकी साहित्यिक परिवेश में बन पाया जो अब तक पारम्परिक रूढ़िवादी प्रकाशनों के प्रभाव में ही था।

कविता एवं नाटक के अलावा उपन्यास विधा का भी अमेरिकी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है। अन्य देशों के उपन्यासों का अमेरिका में जितना अनुवाद हुआ है उससे अधिक अमेरिकी उपन्यासों का अनुवाद विदेशों में हुआ।

इसलिए यह देखना समीचीन है कि अमेरिकी प्रकाशक कैसी कृतियों को अनुवाद के लिए चुनते हैं। प्रायः कहा जाता है कि अनूदित पुस्तकें अमेरिका में होने वाले कुल प्रकाशनों का केवल दो प्रतिशत है। नोबल पुरस्कार विजेताओं की कृतियों के अनुवाद के साथ-साथ वैसी कृतियों को भी अनुवाद के लिए चुना जाता है जो किसी अन्य भाषा में बहुत बिकी हो। ऐसी आशा की जाती है इन पुस्तकों को वैसी ही व्यावसायिक सफलता अमेरिका में भी मिलेगी। किन्तु यहाँ भी व्यावसायिक सफलता के अलावा प्रायः यह भी देखा जाता है कि ये पुस्तकें तत्कालीन सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिदृश्य में समीचीन हों। ऐसी बातों को प्रायः स्पष्ट रूप से कहा नहीं जाता है, किन्तु पुस्तक की तत्कालीन सांस्कृतिक, राजनीतिक समीचीनता भी अनुवाद हेतु चुनाव का महत्त्वपूर्ण कारण होती है।

वेनुटी ने इस परिप्रेक्ष्य में इतालवी बेस्टसेलर लेखक जोवानी गारेशी (Giovanni Guareschi) का अध्ययन किया है (1998:124-157)। उन्होंने यह दिखाया है कि यद्यपि जोवानी गारेशी द्वितीय विश्व युद्ध के बाद दो दशक तक लिखते रहे। पर अमेरिका में उन्हें अनुवाद एवं प्रकाशन के योग्य तब माना गया जब उन्होंने एक ऐसा कॉमिक फिक्शन (comic fiction) लिखा जो तत्कालीन अमेरिकी राजनीतिक परिस्थितियों को स्वीकृत था। इस कॉमिक फिक्शन में दॉन कामिलो नाम का एक ग्रामीण पादरी था जो हमेशा कम्युनिस्ट मेयर पेपोन से मिलता था और उसे अपनी चतुराई से मात देता था। इस कॉमिक फिक्शन धारावाहिक (comic Series) की सफलता का कारण यह माना जाता है कि शीत युद्ध के दौरान इसमें एक कम्युनिस्ट विरोधी मानसिकता दिखाई गई है और सारे कम्युनिस्टों का मजाक उड़ाया गया है। बहरहाल, गारेशी की अनूदित कृतियों को प्रचलित अमेरिकी जीवन-मूल्यों में एकीकृत कर लिया गया। गारेशी की इटली में स्वीकृति एक भिन्न प्रकार की थी, क्योंकि इटली को न तो साम्यवाद का डर था, न ही किसी वामपन्थी दल से जुड़ने में किसी प्रकार का सामाजिक दुराव था। इस तरह गारेशी का अपनी संस्कृति में जो महत्त्व था उससे अमेरिकी संस्कृति में उनका महत्त्व बिल्कुल अलग था। स्रोत-संस्कृति एवं लक्ष्य-संस्कृति में अनूदित कृति की बिल्कुल अलग प्रकार की स्वीकृति का यह एक उदाहरण है। अनुवाद करते समय ऐसी भाषा का प्रयोग किया गया, जिससे वह अमेरिकी संस्कृति में स्थानीय रूप में स्वीकृत हो जाए और अमेरिकी बाजार में आसानी से बिके। साथ ही इस प्रवाहमय प्रचलित भाषा के साथ अनुवाद करते समय यह भी सुनिश्चित किया गया कि अनूदित पाठ में ऐसी समान्तरता स्थापित हो जाए, जिससे पात्रों के साथ पाठक तादात्म्य स्थापित कर सकें। इस तरह तत्कालीन 'साम्यवादी खतरों' से जूझने में अनुवाद से सहायता मिली। उल्लिखित अवतरणों में अमेरिका में सहित्यिक अनुवाद के इतिहास के पर चर्चा की गई है और यह बताया गया है कि कैसे अमेरिकी मानसिकता विदेशी सहित्य से वंचित रहती है। यदि अमेरिकी विदेशी सहित्य पढ़ते भी हैं तो मुख्यतः यूरोपीय साहित्य ही पढ़ते हैं और वह भी केवल अनुवाद में। विभिन्न विदेशी कृतियों की उनकी समझ अनुवाद के माध्यम से ही बनी है और कई बार तो इसी समझ ने वहाँ के रचनात्मक साहित्य को प्रभावित किया है। हालाँकि अमेरिका में अनुवाद को अधिक महत्त्व नहीं दिया गया है, पर सचाई है कि ऐसे अनेक विचारक वहाँ हुए हैं जिन्होंने अनुवाद सिद्धान्त में बहुत काम किया है। अनुवाद सिद्धान्त के ऐसे दो प्रमुख विचारक—आन्द्रे लफेवेयर और लॉरेन्स वेनुटी पर हम यहाँ चर्चा करेंगे।

14.2.3 आन्द्रे लफेवेयर

आन्द्रे लफेवेयर का जन्म बेल्जियम में सन् 1945 में हुआ। उन्होंने अपनी शिक्षा वहीं समाप्त की। सन् 1984 में वे ऑस्टिन में टेक्सास विश्वविद्यालय में पढ़ाने गए। सन् 1996 में उनकी मृत्यु हुई और सन् 1984 से सन् 1996 तक वे अनुवाद अध्ययन के अग्रणी विचारक रहे। वे सबसे अधिक इस बात के लिए जाने जाते हैं कि उन्होंने अनुवाद को 'पुनर्लेखन' या 'मूल पाठ का अपवर्तन' कहा। उन्होंने अनुवाद को पुनर्लेखन का सबसे प्रभावकारी स्वरूप माना, क्योंकि अनुवाद, लेखक या उसकी कृतियों की किसी अन्य संस्कृति में एक छवि प्रस्तुत करता है। इससे लेखक या एक संस्कृति की कृतियाँ अपनी मूल संस्कृति से परे भी पहुँचती है (लफेवेयर, 1992:9)। उनका कहना है कि अनुवाद एक ऐसा पुनर्लेखन है जो मूल को कुछ इस तरह प्रस्तुत करता है जो तत्कालीन प्रभावपूर्ण विचारधाराओं और काव्यादर्शो के अनुरूप हो। इस प्रकार के प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया में बहुत सारी बातें शामिल होती हैं। चूँकि अनुवाद कभी ऐसी स्थिति में नहीं किए जाते, जहाँ पहले से कोई साहित्य उपलब्ध न हो; यह स्वाभाविक है कि अनुवाद अपने समय की विचारधाराओं और काव्यादर्शों पर आधारित होता है। 'अनुवादक जिस

प्रकार अपने आप को समझता है और जैसे अपनी संस्कृति को समझता है, उसका सीधा प्रभाव उसके अनुवाद पर पड़ता है और अनुवाद की प्रक्रियाओं का यह एक प्रमुख अंग है (लफेवेयर, 1992(ए): 14)। लफेवेयर आगे लिखते हैं कि विचारधाराएँ मुख्यतः उन लोगों द्वारा निर्धारित की जाती है, जिन्होंने अनुवाद करवाया है। पहले के समय में राजा या सम्राट ऐसा करते थे और अब प्रकाशक या अनुवाद करवाने वाली संस्थाएँ ये काम करती हैं। इसलिए यदि कोई कृति समाज की स्वीकार्य स्थिति का विरोधी हो तो अनुवाद के लिए उसे नहीं चुना जाता है। इस दिशा में अनुवाद की संरक्षण संस्थाओं का महत्त्व कम नहीं आँका जा सकता, क्योंकि प्रायः ये संरक्षक चाहें तभी वह अनुवाद प्रकाशित हो, न चाहें तो प्रकाशन रुका रहे (लफेवेयर 1992(ए): 19)। किसी काल का काव्यादर्श ही निर्धारित करता है कि कोई कृति अनुवाद योग्य है या नहीं। अनुवाद की स्थिति में स्पर्धा करने वाली दो संस्कृतियाँ मिलती हैं और निर्धारित करती हैं कि कोई कृति अनुवाद योग्य है या नहीं या कोई अनुवाद स्वीकार्य है या नहीं।

14.2.4 लॉरेन्स वेनुटी

लॉरेन्स वेनुटी का जन्म सन् 1953 में हुआ। वे फिलाडेल्फिया के टेम्पल विश्वविद्यालय में प्राध्यापक हैं। वे सक्रिय अनुवादक, अनेक क्रान्तिकारी पुस्तकों के सम्पादक एवं अनुवाद अध्ययन के सिद्धान्तकार हैं। उनकी सम्पदित पुस्तक *रीथिंकिंग ट्रान्सलेशन : डिस्कोर्स, सब्जेक्टिविटी, आईडियोलॉजी* सन् 1992 में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक ने अनुवाद अध्ययन के वैचारिक केन्द्र को तुलनात्मक भाषावैज्ञानिक अध्ययन से आगे ले जाकर अनुवाद की राजनीति तक पहुँचाया। उन्होंने अनुवाद के उस पाश्चात्य दर्शन को सामने रखा जो प्रवाहपूर्ण भाषा में हुए ऐसे अनुवाद को अधिक स्वीकृत मानता है जिससे अनुवाद एक अनूदित कृति की तरह न लगे। फिर वेनुटी ने इस अनुवाद दर्शन की आलोचना करते हुए बताया कि यह तो अनुवाद का 'देशीयकरण' (Domestication) है और कहा कि इस देशीयकरण के साथ अनूदित पाठ मूल की तरह प्रस्तुत हो जाता है (वेनुटी 1998:31)। इस तरह के प्रवाहमय अनुवाद में, अनुवादक और अनुवाद अदृश्य रह जाते हैं। इस स्थिति में पाठक को पढ़ते समय यह नहीं पता चलना चाहिए कि वह अनूदित पाठ पढ़ रहा है। वे आंत्वान बर्मन (Antoine Berman) के इस विचार का अनुमोदन करते हैं कि अच्छा अनुवाद 'विदेशी पाठ की वैदेशिकता' को छिपाता नहीं है (वेनुटी 1998:11)। दूसरे शब्दों में पाठकों को यह पता चलना चाहिए कि वे मूल पाठ नहीं बल्कि अनुवाद पढ़ रहे हैं। अनुवाद के इस सिद्धान्त को सामने रखते हुए वेनुटी यह बताते हैं की कैसे देशीयकरण अनुवाद की राजनीति का आधार बन जाता है। होता यह है कि वैसे पाठ जिनका देशीयकरण आसान होता है अनुवाद के लिए चुन लिए जाते हैं और वैसे पाठ जिनका देशीयकरण आसान नहीं होता है, अनुवाद के लिए नहीं चुने जाते। फिर वैदेशिकता निर्धारित करने में यह भी एक वैचारिक बिन्दु होता है कि अपनी संस्कृति में जो पाठ अल्पसंख्यक संस्कृति से जुड़ा हो या प्रचलित मुख्य पुस्तकों की तुलना में हाशिये पर खड़ा हो, उनके प्रति क्या रवैया अपनाया गया (वेनुटी 1998:10)। अनुवाद की प्रक्रिया में इस गौण सांस्कृतिक पक्ष पर विचार करने का उद्देश्य सांस्कृतिक नवीकरण को बढ़ावा देना और अंग्रेजीभाषी समाज के अन्दर की भिन्नताओं को बढ़ावा देते हुए सांस्कृतिक भिन्नताओं को समझना है (वेनुटी 1998:11)। इस विदेशीकरण पर विचार करते हुए वेनुटी ने अनुवाद के परिप्रेक्ष्य में मूल पाठ का वाक्य विन्यास मूल भाषा की 'शब्द संरचना के आधार पर बने शब्द' (calques), भाषा में पुराने स्वरूप का प्रयोग, सामयिक अमेरिकी बोलचाल की भाषा के प्रयोग और इन सभी का अनुवाद में एक साथ प्रयोग पर विचार किया है और कहा है कि यह कभी-कभी बड़ा विचित्र लगता है (वेनुटी 1998:13-20)। ये सब बताते हुए वे कहते हैं इन सब का प्रयोग करते समय अनुवाद की सटीकता और बोधगम्यता पर कोई समझौता नहीं किया गया है।

14.2.5 सारांश

इस इकाई के प्रथम भाग में हमने देखा कि अमेरिकी साहित्यिक परिदृश्य में अनुवाद की क्या भूमिका है और इसका महत्त्व कितना कम है। अनुवाद कर पढ़ाने के लिए प्रायः वैसी ही कृतियों को चुना जाता है जो बहुत समय से चर्चित रही हो या अपनी संस्कृति की महत्त्वपूर्ण पुस्तकें हों। अनुवाद के लिए कृतियाँ चुनते समय यह भी देखा जाता है कि वे तत्कालीन मुख्य विचारधाराओं से तालमेल रखती हैं या नहीं। जैसे शीत युद्ध के दौरान कोई साम्यवाद विरोधी कृति अमेरिका में आसानी से चुनी जा सकती थी। लेकिन कविताओं में कुछ ऐसे भी प्रयोग हुए,

जिन पर अनूदित कृतियों द्वारा प्रभावित साहित्य सिद्धान्तों और विषयों का स्पष्ट प्रभाव दिखता है। इसका असर कविता की शैली पर भी हुआ है। हमने दो मुख्य सिद्धान्तकारों, आन्द्रे लफेवेयर और लॉरेन्स वेनुटी पर भी चर्चा की है। आन्द्रे लफेवेयर ने यह दिखाया है अनुवाद पुनर्लेखन का एक प्रकार है और अनुवाद करते समय ऐसी प्रक्रियाएँ अपनाई जाती हैं कि अनूदित पाठ विचारधारा विशेष के अनुरूप ढल सके। इस तरह वे अनुवाद में काव्यादर्शों और राजनीतिक चेतनाओं के अध्ययन का महत्त्व स्थापित करते हैं। लॉरेन्स वेनुटी यह दिखाते हैं कि कैसे अमेरिकी और बाकी पाश्चात्य परम्परा में अनुवाद की भाषा को ऐसा बनाया जाता है, जिससे वह अनुवाद मूल कृति जैसा लगे और अनुवादक पूरे अनुवाद में अदृश्य रहें। यह सब बताते हुए वेनुटी यह स्थापित करते हैं कि अनुवाद को अनुवाद की तरह लगना चाहिए, अनुवाद में अनुवादक की उपस्थिति दिखनी चाहिए और अनुवाद में कृति की मूल संस्कृति के तत्व भी स्पष्ट रूप से दिखाई देने चाहिए।

14.3 कनाडाई अनुवाद परम्परा

14.3.1 प्रस्तावना

संयुक्त राज्य अमेरिका से अलग कनाडा में दो भाषाओं की संवैधानिक स्वीकृति है और इसलिए वहाँ अनुवाद रोजमर्रा के काम-काज का एक अंग है। कनाडा में वैधानिक तौर पर यह सुनिश्चित किया जाता है कि सभी सरकारी कागजात अंग्रेजी और फ्रांसीसी दोनों भाषाओं में जारी किए जाएँ। कनाडा में अनुवाद अन्तरराष्ट्रीय गतिविधि से अधिक देश के अन्दर की जाने वाली प्रक्रिया है। अधिकांश सरकारी कागजात अंग्रेजी में तैयार किए जाते हैं और फिर फ्रांसीसी भाषा में उनका अनुवाद होता है। लेकिन साहित्यिक कृतियों के परिप्रेक्ष्य में इसका बिल्कुल उल्टा होता है।

14.3.2 विचार एवं परम्पराएँ

कनाडा में साहित्यिक अनुवाद उन्नीसवीं सदी के मध्य से होता रहा है और सन् 1960 के दशक तक हमें कई छिट-पुट अनूदित कृतियाँ दिखती हैं। सन् 1972 से इसमें कुछ तेजी आई जब राष्ट्रीय सरकार ने कनाडा काउन्सिल के माध्यम से साहित्यिक अनुवाद के लिए अनुदान देना शुरू किया। पहले अंग्रेजीभाषी कनाडाई केबेक के उपन्यासों का अनुवाद करने को तत्पर रहते थे (सिमोन 1990:113)। अंग्रेजी कनाडाई कृतियों का फ्रांसीसी में अनुवाद बाद में होने लगा।

शुरू-शुरू में साहित्यिक अनुवाद देश के अंग्रेजीभाषी और फ्रांसीसीभाषी लोगों को जोड़ने की एक कड़ी था। इसका विशिष्ट उदाहरण फिलिप और औबेर द गास्पे की कृति *द कनेडियन्स ऑफ ओल्ड* का सन् 1890 में जी.डी. रॉबर्ट्स द्वारा किया अनुवाद है। इसके आमुख में अनुवादक ने यह दिखाया है कि कनाडाई-फ्रांसीसी साहित्य वहाँ के जीवन का सही चित्रण है और इस साहित्य के अनुवाद से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि अंग्रेजीभाषी बहुसंख्यक कनाडाई फ्रांसीसी अल्पसंख्यक समाज को समझ सकेंगे। उसी समय इस पुस्तक के दो संस्करण थे जो अनुवाद के प्रति दो अलग-अलग दृष्टिकोण दिखाते हैं। रॉबर्ट का संस्करण अधिक पठनीय था लेकिन उन्होंने कई जगह पाठ का अनुवाद किया ही नहीं था और सांस्कृतिक सन्दर्भों को अंग्रेजी के अनुरूप ढाल दिया था। इसके विपरीत टॉमस मार्की ने जब बाद में इसका अनुवाद किया तो वह अनुवाद मूल के अधिक करीब था। मार्की ने ढेर सारी पाद-टिप्पणियाँ डाल दी थीं। जिससे उनकी पुस्तक का 'विवरणात्मक महत्त्व' अधिक हो गया और इससे मूल संस्कृति को समझने में अधिक सहायता हुई। दोनों के अनुवाद के तरीके अलग थे लेकिन दोनों का उद्देश्य एक था।

कनाडाई अंग्रेजी साहित्य से फ्रांसीसी में अनुवाद के लिए कृतियों का चयन बड़ा ही रोचक है। उदाहरण के तौर पर सिमोन ने कहा है पौंफिल लमे (Pamphile Lemay) द्वारा सन् 1884 में किया गया विलियम किर्बी का *द गोल्डन डॉग* के अनुवाद का उद्देश्य दूसरों की दृष्टि में बने हुए अपनी छवि को समझना है (सिमोन, 1990 : 114)। यानी कि अंग्रेजीभाषी कनाडाई लोगों ने अनुवाद दूसरों को जानने के लिए किया, तो दूसरी तरफ फ्रांसीसीभाषी कनाडाई लोगों ने यह जानने के लिए अनुवाद किया कि दूसरे लोग उनके बारे में क्या सोचते-समझते हैं। फ्रांसीसीभाषियों ने भी अनुवाद के ऐसे तरीके अपनाए जिसमें ऐसे विचारों या भाषा प्रयोगों को बदल दिया गया जो कैथोलिक

धर्मावलम्बियों को स्वीकार्य नहीं था। किन्तु ऐसा यह दिखाने के लिए किया गया कि कैसे एक 'विरोधी' भी महान फ्रांसीसी पूर्वजों के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हैं और कैथोलिक लोगों से अधिक गहरी धार्मिक भावनाएँ रखते हैं।

सन् 1921 में प्रकाशित लूई हेमों (Louis Hemon) की फ्रांसीसी में लिखी महत्त्वपूर्ण कृति *मारीया शाप्दलेन (Maria Chapdelaine)* के अनुवादों में भी इस प्रकार के अन्तर दिखाई पड़ते हैं। विलियम ह्यूम ब्लेक (William Hume Blake) ने जब इसका अनुवाद किया तो उन्होंने अनुवाद में स्रोतभाषा एवं संस्कृति के अनेक तत्वों को अक्षुण्ण रखा। उन्होंने कई फ्रांसीसी शब्द, और फ्रांसीसी शब्द-संरचना के आधार पर बने शब्दों का प्रयोग किया; अंग्रेजीभाषियों को अटपटा लगने वाले कई सम्वादों का जस-का-तस अनुवाद किया। इसके पीछे उनकी यह मंशा थी कि फ्रांसीसी कनाडाइयों के पुराने और सामन्तवादी लगने वाले मूल्य अनुवाद में अक्षुण्ण रहें। (सिमोन, 1995 : 13)। इस पुस्तक का अनुवाद एण्ड्रयू मकफैल (Andrew MacPhail) ने भी किया है जो अनुवाद की दृष्टि से अधिक स्वतन्त्र और स्पष्ट है।

सन् 1970 के दशक के पहले तक कनाडा में लगभग यही स्थिति बनी रही। सन् 1970 के दशक से जब अनुवाद के लिए सरकारी अनुदान मिलना शुरू हुआ तब स्थिति कुछ बदली। पहले यह दूसरे को या खुद को जानने का प्रयास था। किसी भी भाषा में रचनात्मक प्रक्रियाओं पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं था। साहित्यिक रचनात्मकता पर अनुवाद का प्रभाव तब आना शुरू हुआ जब फ्रांसीसी घोर स्त्रीवादी लेखन का अनुवाद सामने आना शुरू हुआ।

सन् 1960 और 1970 के दशकों में केबेक (Quebec) के साहित्य को मुख्यतः भाषागत विशेषताओं के रूप में देखा जाता था। सन् 1960 के दशक में केबेक में एक ऐसी राजनीतिक चेतना सामने आई जो भाषा सम्प्रेषणीयता के आधार पर केबेक की क्षेत्रीय राष्ट्रवादी भावनाओं पर आधारित था। केबेक की पूरी अस्मिता और पहचान भाषा पर आधारित थी। इस साहित्यिक स्वर के अनुवाद को फिलिप स्ट्रैटफॉर्ड (Philip Stratford) ने 'सीमा पार से आने वाला समाचार' (News from the front) की संज्ञा दी (सिमोन 1997:199)। केबेक शहरी श्रमिक वर्ग की भाषा को 'जुआल' के नाम से जाना जाता है और इसी दशक में इसका साहित्यिक भाषाओं में प्रयोग होने लगा। यह एक विशिष्ट बात थी क्योंकि सुसंकृत वर्ग पेरिस में बोली जाने वाली भाषा को ही स्वीकार करता था और उसकी नजर में यह भाषा का अपभ्रंश स्वरूप था।

जुआल भाषा का ऐसा प्रकार था जिसमें बहुत सारे अंग्रेजी शब्द मिल गए थे, उच्चारण फ्रांसीसी से अलग हो गया था, वाक्य-संरचना सामान्य व्याकरण के नियमों से अलग हो गई थी और इसका प्रयोग केबेक की मानसिक दूरस्थता (alienation) को गौरवपूर्ण तरीके से दिखाने के लिए किया गया (सिमोन 1997:199)। अंग्रेजी बहुलभाषी कनाडा और इससे बड़े अमेरिकी अंग्रेजी समुदाय से घिरे होने के कारण, अल्पसंख्यक फ्रांसीसी समुदाय को ऐसा लगता था मानो वह सांस्कृतिक और भाषाई औपनिवेशिकता का शिकार है। ऐसी स्थिति में वह अपनी आकांक्षाओं और अस्मिता को भाषा के माध्यम से सम्प्रेषित कर रहा था। केबेक ने अपने आप को फ्रांस से और फ्रांस में बोली जाने वाली फ्रांसीसी भाषा से भी थोड़ा अलग कर लिया क्योंकि फ्रांस की फ्रांसीसी भाषा केबेक की विशिष्टताओं और सांस्कृतिक भिन्नता को नहीं दिखाती थी। नई भाषा की इस खोज ने अनुवाद और फ्रांसीसी में अनूदित कृतियों के पुनः अनुवाद की नीतियों को जन्म दिया। सबसे पहले शेक्सपीयर की कृतियों का अनुवाद किया गया। मिशेल गार्नो (Michel Garneau) द्वारा शेक्सपीयर के *मैक्बेथ* के अनुवाद के मुखपृष्ठ पर लिखा है 'केबेक्वा में अनूदित'— यानी की केबेक की फ्रांसीसी में अनूदित न कि पेरिस के फ्रांसीसी में अनूदित। मुखपृष्ठ पर फ्रांसीसी भाषा में लिखा है कि यह अनुवाद फ्रांसीसी में नहीं बल्कि केबेक्वा यानी केबेक की भाषा में है। यहाँ ऐसा लिखा जाना भी कुछ अटपटा है क्योंकि सामान्यतः अनूदित कृतियों पर यह नहीं लिखा जाता है कि यह किस भाषा में अनूदित है बल्कि केवल यह लिखा जाता है कि यह पुस्तक किस भाषा से अनूदित है। ऐसा लिखते हुए, इस केबेक में हुए अनुवाद ने अब तक डायलेक्ट समझे जाने वाले फ्रांसीसी के एक स्वरूप को एक अलग राष्ट्रीय और सांस्कृतिक भाषा का दर्जा दिलाया। आनी ब्रिसेट (Annie Brisset) ने इसे 'पुनर्क्षेत्रीकरण की प्रक्रिया' (Reterritorialising Operation) का नाम दिया है (ब्रिसेट 2006:340)। अलग भाषा के अस्तित्व को सामने रखते हुए अनुवादों के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया गया कि केबेक के लोगों का एक अलग अस्तित्व है और उनकी इस भाषा के माध्यम

से यहाँ के लोगों के साहित्य को सामने लाया जा सकता है। अनुवाद के माध्यम से यहाँ किसी दूसरे को समझने का प्रयास नहीं किया गया है बल्कि एक विदेशी कृति के अनुवाद से केबेक की भाषा और यहाँ के लोगों की अस्मिता को वैधता प्रदान की गई। *मेक्बेथ* के अनुवादक ने उस पुरानी फ्रांसीसी भाषा को गहराई से समझा जो केबेक में शुरू में आए लोग बोलते थे; फ्रांसीसी की उस विभाषा की मदद से उन्होंने 'एक आदर्श केबेक भाषा' का स्वरूप बनाया (बिसेट 2006:352)। हालाँकि इस तरह भाषा का प्रयोग वर्तमान समय में नहीं होता है फिर भी यह 'मातृभाषा' का भाव जगाती है और केबेक के लोगों को यह अनुभूति होती है कि यह उनकी अपनी भाषा है।

केबेक के नाटकों में भी बिल्कुल ऐसा ही देखा जा सकता है। रोचक बात यह है कि नाटकों में कलाकार केबेक्वा बोलते हैं लेकिन मंच पर निर्देशन सम्बन्धी अन्य सम्वाद, यथा नेपथ्य-सम्वाद, मानक फ्रांसीसी में होता है। इस पुनर्नुवाद की प्रक्रिया को गहराई से देखने से हमें अनुवाद की एक अलग दृष्टि मिलती है। जैसे कई बार रूसी और स्वीडेन के नाटकों का अनुवाद ऐसे लोगों ने किया है जो मूल भाषा नहीं जानते हैं। अनुवाद के लिए उन्होंने ऐसे लोगों की मदद ली जो मूल भाषा जानते हैं और जिन्होंने मूल कृति का शब्दशः अनुवाद कर इन अनुवादकों को दिया। इसके अनुवादकों ने उपलब्ध फ्रांसीसी और अंग्रेजी अनुवादों को देखा और तब अपना केबेक्वा अनुवाद प्रस्तुत किया। इस तरह की अनुवाद प्रक्रिया केबेक की जीवन्त नाट्य परम्परा से जुड़ी है जिसमें प्रसिद्ध अनुवाद और नाटककार मिशेल त्रोम्ब्ले (Michel Trembley) जैसे लोगों ने अपना योगदान दिया है। मिशेल त्रोम्ब्ले द्वारा जुआल में लिखा प्रसिद्ध नाटक *'ले बेल सेर'* (Les Belles Soeurs) इसी नाट्य परम्परा की एक कृति है।

कनाडाई अनुवाद की परम्परा का सर्वाधिक विशिष्ट पक्ष वहाँ के स्त्रीवादी लेखन का है। इस प्रकार के लेखन और अनुवाद में भाषा का प्रयोग स्त्रियों के लिए और स्त्रियों के बारे में लिखने के लिए विशेष रूप से किया जाता है। लूइस वॉन फ्लोटो (Luise Von Flotow) ने इस स्त्रीवादी अनुवाद को परिभाषित करते हुए लिखा है कि 'यह अनुवाद का एक ऐसा प्रयास है जिसमें उस मूल लेखन की अनेक तकनीकों को अपना लिया जाता है जिसका अनुवाद किया जा रहा है' (लूइस वॉन फ्लोटो, 1991:74)। इस तरह यह केबेक के नए स्त्रीवादी लेखन का एक प्रकार बन गया है। अपने अनुवाद की प्रक्रियाओं के माध्यम से यह स्त्री की भाषा एवं समाज में उपस्थिति को दर्शाता है।

इस प्रकार स्त्रीवादी अनुवाद कई बातों को समझने का प्रयास करता है। जैसे वह यह देखता है कि कैसे पाठों में स्त्री की स्थिति का अनुवाद किया गया है, कैसे लेखिकाओं का अनुवाद किया गया है या कैसे स्त्रीवादी लेखन का अनुवाद किया गया है।

हम यह इस बात पर थोड़ी चर्चा करेंगे कि कैसे स्त्रीवादी लेखन का अनुवाद किया गया है और स्त्रीवादी अनुवाद विमर्श इसे कैसे देखने का प्रयास करता है। शेरी सिमोन (Sherry Simon) ने कहा है कि 'अनुवादक की अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विशिष्ट पहलू उसकी परियोजना है। अपनी परियोजना के राजनीतिक और व्याख्यात्मक पहलुओं के प्रति अनभिज्ञता दर्शाने के बजाए स्त्रीवादी अनुवाद अपने हस्तक्षेप को सहर्ष स्वीकार करते हैं' (सिमोन, 1996:74)। बल्कि उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे सामने आएँ और अपने स्त्रीवादी हस्तक्षेपों को भी सामने रखें। अनुवादकों को अर्थ-रचना की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी करना है और अपने हस्तक्षेपों को पाद-टिप्पणियों, आमुखों के माध्यम से या अनेक माध्यमों से लोगों के सामने सीधे भी रखना है' (केस्किनेन 1993:967)। उनके हस्तक्षेप कई रूपों में सामने आते हैं जिनको लूइस वॉन फ्लोटो (Luise Von Flotow) ने 'पूरक, आमुख, पाद-टिप्पणियों, और 'विमर्श के अपहरण' के रूप में देखा है (लूइस वॉन फ्लोटो, 1991:74)। 'पूरक' से यहाँ अर्थ है कि अनुवाद के दौरान भाषा में अन्तर को इस प्रकार से अनूदित किया जाए कि पाठ में स्त्रियों की उपस्थिति स्पष्ट दिखे। मादलेन गान्यों (Madeleine Gagnon) की कृति *'लौन्त्र'* (L' Antre) का एक पुरुष स्त्रीवादी अनुवादक द्वारा अनुवाद इसका एक रोचक उदाहरण है। इस अनुवादक ने कहा है, *'लौन्त्र'* का अनुवाद करते समय बहुवचन सर्वनाम 'वे' के स्त्रीवाचक और पुरुषवाचक फ्रांसीसी स्वरूपों का अंग्रेजी में केवल 'दे' (They) से अनुवाद कर देना उचित नहीं होता। जब ये सर्वनाम किसी व्यक्ति के लिए प्रयोग किए जाते हैं तो व्यक्ति का स्त्री या पुरुष होना महत्त्वपूर्ण है।' ऐसी स्थिति में अनुवादक ने अंग्रेजी में एकवचन सर्वनाम 'शी' (She) का प्रयोग किया। अनुवादक ने सामान्य रूप से स्त्री-पुरुष दोनों के लिए जहाँ 'He' या 'They' का प्रयोग होता है वहाँ 'She' का प्रयोग किया जो कि अंग्रेजी में लिखने

के तरीके से बिल्कुल उल्टा था। यहाँ यह देखा जा सकता है कि कैसे अनुवादक ने भाषा में वैसी 'पूरक' तकनीकें अपनाई हैं जिससे पाठ में स्त्री की उपस्थिति स्पष्ट दिखे।

'आमुख' में स्त्रीवादी अनुवादकों ने अपनी अनुवाद सम्बन्धी प्रक्रियाओं और नीतियों पर खूब लिखा है। लीज गोवैं (Lise Gauvin) की पुस्तक *लेत्र द्यून ओत्र* की अनुवादिका सुज़ान द लोत्बिनियेर-हारवुड (Suzanne de Lotbinière-Harwood) ने अपने अनुवाद के आमुख में लिखा है, "मेरे लिए अनुवाद एक राजनीतिक गतिविधि है जिसका लक्ष्य भाषा को स्त्रियों के सम्प्रेषण के लिए प्रयोग में लाना है...आप ये नहीं भूल पाएँगे के यह एक अनुवाद है...मैंने ऐसे कई स्त्रीवादी तरीके अपनाए हैं जिनसे मैं पुलिंग में बात करने से बच सकूँ..." (गोवैं 1989:9-12) इसी कारण इन प्रक्रियाओं को 'विमर्श के अपहरण' की संज्ञा दी जाती है। इस अर्थ में 'अपहरण' का प्रयोग डेविड होमल ने लोत्बिनियेर के पुस्तक की समीक्षा करते हुए किया है। डेविड होमल (David Homel) ने लिखा है, "वे कई बार इतना हस्तक्षेप करती हैं कि लगभग वे मूल लेखक की कृति का अपहरण ही कर लेती है (1990)।" इस प्रकार का लिंग-उल्लेखन (Gender Marking) कई बार देखने को मिलता है। जैसे प्रमुख स्त्रीवादी लेखिका निकोल ब्रोसार (Nicole Brossard) की कृति *आमौंत* (Amantes), जिसमें 'लेस्बियन लवर्स' की चर्चा है, का अनुवाद करते समय बारबरा गोदार (Bardara Godard) ने इसका शीर्षक *लवहर्स* (Lovhers) या शीलव्स (Sheloves) दिया है। इस लिंग उल्लेखन का दूसरा उदाहरण द लोब्तिनियेर हार्वुड के लेखन में मिलता है, जब वे लेखकों के लिए Authors और लेखिकाओं के लिए Authers शब्द का प्रयोग करती हैं (द लोत्बिनियेर हारवुड 1991:156)। सभी प्रकार के स्त्रीवादी अनुवादों की रचनात्मक ऊर्जा, आनन्द एवं क्रान्तिकारिता के ये कुछ स्पष्ट उदाहरण हैं।

इस अनुवाद परियोजना की एक और विशेषता है—लेखकों और अनुवादकों के बीच होने वाली सहभागिता एवं सहकारिता। लेखक स्वयं ही प्रायः अनुवादकों को सह-लेखक या सह-लेखिका का दर्जा देते हैं। यह स्त्रीवादी लेखन और अनुवाद की नई शब्दावली भी बना रहा है और साथ ही पुराने नकारात्मक अर्थ वाले शब्दों को भी सकारात्मक अर्थ में प्रयोग कर रहा है। जैसे 'विरागो' (Virago) शब्द का अर्थ 'पौरुषपूर्ण स्त्री' पहले नकारात्मक अर्थ में लिया जाता था, जिससे अलग हटकर इन अनुवादकों ने सकारात्मक अर्थ में प्रयोग किया। उनके ऐसा करने के कारण को मार्लेन विल्डमैन ने इस प्रकार व्यक्त किया है, 'स्त्री...अपने ही पाठ के क्षेत्र में खुद को स्वीकृत महसूस करती है (1989:38)।" कनाडाई स्त्रीवादी अनुवाद इस देश के भाषागत वर्णव्यवस्था को भी दर्शाता है। कनाडा में अंग्रेजी और फ्रांसीसी दो भाषाएँ हैं जिनमें अंग्रेजी का वर्चस्व अधिक है। ऐसी स्थिति में भाषा और लिंगवादी वर्चस्व से सम्बन्धित प्रश्न अनुवाद की प्रक्रिया में सामने आ जाते हैं। अनुवाद को मूल लेखन की तुलना में दूसरे स्थान पर रखा जाता है—यह कुछ ऐसा ही है जैसे स्त्रियों को लैंगिक वर्चस्व में पुरुषों के बाद दूसरे स्थान पर रखा जाता है। स्त्रीवादी अनुवाद के इस परिप्रेक्ष्य में अनुवाद को समझना आवश्यक है।

14.3.3 सुज़ान द लोब्तिनियेर हारवुड

सुज़ान द लोत्बिनियेर हार्वुड केबेक की प्रमुख स्त्रीवादी लेखिका निकोल ब्रोसार (Nicole Brossard) के अनुवादों के लिए जानी जाती हैं। ऐसे उन्होंने लिज़ गोवैं (Lise Gauvin) जैसे कई अन्य लेखिकाओं की कृतियों के भी अनुवाद किए हैं। अपनी अनुवाद परियोजना को सामने रखने वालों में वे सर्वप्रथम हैं। अपनी अनुवाद परियोजना को उन्होंने *रबेल ए ऐंफिदेल। ला त्राद्युक्सियों कॉम प्रातीक द रेएक्रीत्यूर ओ फेमिनैं। द बॉडी बाइलिंग्वुअल : ट्रान्सलेशन ऐज रिराइटिंग इन द फेमिनीन* (Re-belle et Infidèle. La traduction comme pratique de rèècriture au fèminine. The Body Bilingual : Translation as Rewriting in the Feminine) शीर्षक अपनी प्रसिद्ध द्विभाषी पुस्तक में ही यह बात सामने रखी कि यहाँ विरोध का स्वर है और यहाँ अनुवाद के उस रूपक-चित्रण के आधार पर एक भाषायी प्रक्षेपण है, जिसमें कहा जाता है कि अनुवाद या तो सुन्दर (Belle अर्थात् सुन्दरी) होता है या मूल कृति के प्रति निष्ठावान। एक स्त्रीवादी अनुवादिका होने के नाते वे स्पष्ट रूप से कहती हैं कि वे किसी पाठ के प्रति निष्ठावान नहीं हैं और वे पुरुष प्रधान भाषा के विरोध में खड़ी हैं। उनकी निष्ठा अपनी अनुवाद परियोजना के प्रति है और वे अनुवाद के माध्यम से स्त्री को सामने रखती हैं। वे धार्मिक पुस्तकों के अनुवाद का अध्ययन करती हैं और यह दिखाती हैं कि कैसे बाइबिल के अनुवादकों ने भी स्त्री की उपस्थिति को गौण भाव से देखा है। अपनी बात को

प्रमाणित करने के लिए वे मर्लिन स्टोन की पुस्तक *कौं दियठ एते फाम* (Quand Dieu était femme) को उद्धृत करती हैं। इस पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद *ह्वेन गॉड वाज़ अ वुमन* (When God was a woman) के नाम से हुआ है। कनान, बेबीलोन, और मिस्र की देवियों को पुलिंग में दिखाया गया है (द लोत्बिनियेर हार्वुड, 1991:102)। 'वेस्ताल' जिसका अर्थ मन्दिर की महिला परिचारिका होता है, उसका अनुवाद, 'वेश्या' शब्द से किया गया है। इस तरह अनूदित भाषा में स्त्री का सामाजिक स्तर नीचा किया गया है। साथ ही मूल संस्कृति की धार्मिक भावनाओं को भी ठीक से नहीं समझा गया है।

वे सिमोन द बोवार की पुस्तक *'द सेकेण्ड सेक्स'* के अनुवाद पर लिखे मार्ग्रेट ए. सिमोन के आलेख का अध्ययन करके यह दिखाती हैं कि कैसे इस अनुवाद की प्रक्रिया में 'दूसरे लिंग (the second sex)' यानी स्त्री के स्वर को चुप कर दिया गया है। उन्होंने यह दिखाया है कि कैसे अंग्रेजी अनुवाद में मूल पाठ का लगभग दस प्रतिशत छोड़ दिया गया है। ऐसा करते हुए अनुवादक ने अठहत्तर स्त्रियों के नामों को छोड़ दिया है जिससे ऐसा लगता है मानो बोवार पारम्परिक वैचारिक शून्यता की स्थिति में लिख रही हैं। इसका असर यह हुआ कि एंग्लो-अमेरिकी स्त्रीवादियों ने उनके लेखन को इस प्रकार देखा मानो वह बिना किसी आधार के एकाकी रूप से लिखा जा रहा हो।

द लोत्बिनियेर हारवुड की परिभाषा 'स्त्रीत्व में पुनर्लेखन' को अनुवाद के सन्दर्भ में दो अर्थों में प्रयोग किया जाता है—पहला स्रोतभाषा से लक्ष्यभाषा में अनुवाद के लिए और दूसरा पुरुष प्रधान विमर्श से स्त्री-विमर्श में अनुवाद के लिए (द लोत्बिनियेर हार्वुड, 1999:100)। वे ऐसा कहती हैं—स्त्री होने का तथ्य यही है कि वह एक अनुवाद है।

उन्होंने बहुत अनुवाद किया है और केबेक के अधिकांश स्त्रीवादी लेखिकाओं का अनुवाद करते हुए उन्होंने स्त्रियों को भाषा के माध्यम से समाज के सामने उपस्थित किया है।

14.3.4 शेरी सिमोन (Sherry Simon)

शेरी सिमोन, मोण्ट्रियाल के कोंकोर्डिया विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं और अनुवाद अध्ययन की अग्रगण्य विदूषियों में से एक हैं। उन्होंने कई पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें से दो पुस्तकें अनुवाद अध्ययन के क्षेत्र में बहुत महत्त्वपूर्ण है। ये पुस्तकें हैं— सन् 1996 में प्रकाशित *जेण्डर इन ट्रान्सलेशन : कल्चरल आइडेण्टीटी एण्ड द पॉलिटिक्स ऑफ ट्रान्समीशन (Gender in Translation: Cultural Identity and the Politics of Transmission)* तथा सन् 2006 में प्रकाशित *ट्रान्सलेटिंग मोण्ट्रियाल (Translating Montreal)*।

वे इन दोनों पुस्तकों में स्त्रीवादी अनुवाद और अपने शहर मोण्ट्रियाल का अनुवाद के सन्दर्भ में अध्ययन प्रस्तुत करती हैं।

सन् 1970 और सन् 1980 के दशकों में प्रयोगवादी स्त्रीवादी लेखन सामने आया, जिसने अनुवाद के कार्यक्षेत्र में बड़ा योगदान दिया। इस समय लेखक और अनुवादक— दोनों ही तत्कालीन साहित्य और संस्कृति में बहुत सक्रिय हो गए। अनुवाद सिद्धान्त में लैंगिक विषयों पर चर्चा बहुत हद तक अनुवाद को 'पुनर्लेखन' के रूप में प्रतिष्थापन से जुड़ा है... यह लगभग कुछ वैसा ही है जैसा हम समाज विज्ञान और मानव विज्ञान के क्षेत्रों में देखते हैं जहाँ भाषा में लैंगिक अस्मिता और कर्ता-स्थापन सम्बन्धित विषयों को समझने की प्रक्रिया में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए (शेरी सिमोन, 1996:viii)

सन् 1996 में प्रकाशित अपनी पुस्तक में शेरी सिमोन ने मुख्य रूप से इन्हीं विषयों पर चर्चा की है और अनुवाद-सिद्धान्त के क्षेत्र में लैंगिक प्रश्नों के महत्त्व का अध्ययन किया है। इस सन्दर्भ में उन्होंने निष्ठा *(Fidelity)*, मूल लेखक के स्वामित्व *(Authorship)* और स्त्री तथा अनुवाद दोनों की दूसरे दर्जे की स्थिति जैसे विषयों पर विचार किया है। वे कनाडाई स्त्रीवादी लेखकों/लेखिकाओं तथा अनुवादकों/अनुवादिकाओं की रचनाओं का अध्ययन करती हैं और इस पर सवाल खड़ा करती हैं कि 'संस्कृति' शब्द को अबाध स्वीकृति कैसे मिल गई है। वे कनाडा से बाहर की कृतियों का भी अध्ययन करती हैं, स्त्री अनुवादिकाओं की भूमिका का विश्लेषण करती हैं, इस क्रम में उन्होंने फ्रांसीसी स्त्रीवादी लेखन के अंग्रेजी अनुवाद और बाईबिल के अनुवादों का भी अध्ययन किया है। अपने

अध्ययनों के आधार पर वे निष्कर्ष निकालती हैं कि अनुवाद में एक 'सांस्कृतिक परिवर्तन' (Cultural Turn) और 'अन्तर के सृजन' (Production of difference) की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

सन् 2006 में प्रकाशित उनकी पुस्तक जीवन्त शहर मोण्ट्रियाल का अध्ययन है जो बहुसांस्कृतिक, बहुभाषी, बहुजातीय शहर है, जहाँ के रोजमर्रा के जीवन में अनुवाद का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

शेरी सिमोन कहती हैं कि इस पुस्तक में वे मोण्ट्रियाल के सामाजिक इतिहास का अध्ययन अनेक महान लोगों और परम्पराओं के माध्यम से करती हैं (शेरी सिमोन 2006:16)। इस परिप्रेक्ष्य में उन्होंने अपने मोण्ट्रियाल शहर का बखूबी अध्ययन किया।

14.3.5 सारांश

कनाडा में अनुवाद लगभग भारत की तरह देश के अन्दर होने वाली प्रक्रिया है। सरकार की द्विभाषी नीति यह सुनिश्चित करती है कि अंग्रेजी से फ्रांसीसी में सभी सरकारी कागजात अनूदित हों और कनाडाई फ्रांसीसी साहित्यिक रचनाएँ अंग्रेजी में अनूदित हों। अंग्रेजीभाषी लोगों ने फ्रांसीसी भाषा के साहित्य का अनुवाद फ्रांसीसी अल्पसंख्यक लोगों को जानने के लिए किया। इससे अलग कनाडाई फ्रांसीसी लोगों ने अनुवाद यह जानने के लिए किया कि अंग्रेजीभाषी लोगों के बीच उनकी छवि कैसी है। सन् 1970 के दशक के बाद सरकारी अनुदानों ने अनुवादों की गति बढ़ा दी। अस्मिता की राजनीति के कारण केबेक में अंग्रेजी के पुराने महान ग्रन्थों के नए प्रकार के फ्रांसीसी अनुवाद सामने आए, जिसने वहाँ की नाट्य परम्परा को नए आयाम दिए। बाद में प्रयोगधर्मी/प्रयोगवादी स्त्रीवादी लेखन ने अनुवाद की प्रक्रियाओं में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन कर दिए। स्त्रीवादी अनुवादों ने पाद-टिप्पणियों, आमुखों, नए शब्दों के गठन और भाषा में परिवर्तनों के माध्यम से भाषा एवं समाज में स्त्रियों की उपस्थिति को स्पष्ट रूप से दिखाने का प्रयास किया। इस क्षेत्र में काम करने वाली दो प्रमुख विदुषियाँ हैं– सुज़ान द लोत्बिनियेर हार्वुड और शेरी सिमोन। लोत्बिनियेर सक्रिय अनुवादिका हैं जो लैंगिक भेदभाव का विरोध करती हैं और अनुवाद की अपनी प्रक्रिया में स्त्रीवादी एजेण्डा को सामने रखती हैं। शेरी सिमोन अनुवाद अध्ययन की प्रमुख विदुषी हैं जो लैंगिकता और अनुवाद से जुड़े प्रश्नों के अलावा इसका भी अध्ययन करती हैं कि कैसे ये विषय मोण्ट्रियाल शहर और पूरे देश में देखे जाते हैं।

14.4 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. अमेरिकी साहित्य परिदृश्य में कितना अनुवाद होता है और उसकी क्या भूमिका है?
2. अनूदित कृतियों के संग्रहों में वहाँ किन लेखकों को स्थान मिलता है? उनके चुनाव के क्या कारण हैं?
3. क्या अनूदित कविताओं की वही भूमिका है जो अनूदित उपन्यासों या नाटकों की है?
4. अनुवाद अध्ययन के सन्दर्भ में इन शब्दों को समझाएँ :
   (क) अनुवाद की राजनीतिक प्रक्रिया
   (ख) पुनर्लेखन
   (ग) देशीयकरण
   (घ) विदेशीकरण
   (ङ) अदृश्यता (Invisibility)
   (च) संरक्षण (Patronage)
5. कनाडाई और अमेरिकी अनुवाद परम्पराओं में क्या अन्तर है? इन अन्तरों के कारण समझाएँ।
6. कनाडा की दोनों सरकारी भाषाओं के बीच अनुवाद की क्या गति रही है? क्या इसमें समय के साथ कुछ परिवर्तन हुआ है? तर्क सहित उत्तर दें।
7. अनुवाद के कारण किस साहित्यिक विधा ने भाषाई अस्मिता बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है? यह भी बताएँ कि इस साहित्यिक विधा ने यह भूमिका किस प्रकार निभाई है।
8. रचनात्मक लेखन ने कनाडा में अनुवाद प्रक्रियाओं को किस प्रकार प्रभावित किया है? कुछ अन्य देशों में हो

रहे अनुवाद प्रक्रियाओं से इसकी तुलना करें।

9. अनुवाद में लैंगिकता का महत्त्व बताएँ।

14.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- **Brisset**, Annie, 'The Search for a Native Language : Translation and Cultural Identity' in Lawrence Venuti ed. *The Translation Studies Reader* (2nd edition), Routledge, London and New York, 2004.
- **De Lotbini/re-Harwood,** Susanne, *Re-belle et infidèle: la traduction comme pratique de réécriture au feminine. The Body Bilingual: Translation as Re-writing in the feminine.* Les éditions du remue-ménage/Women's Press, Québec/Ontario, 1991.
- **Gauvin, Lise**, *Letters from An Other* (tr. by Susanne de Lotbiniere-Harwood), Women's Press, Toronto, 1989.
- **Gentzler, Edwin,** 'Translation, Counter-Culture, and the *Fifties* in the USA', in Roman Alverez and M. Carmen-Africa Vidal eds. *Translation, Power, Subversion*. Multilingual Matters Ltd., Clevedon, Philadelphia, Adelaide, 1996.
- **Godard, Barbara**, 'Translating and Sexual Difference' in *Documentation sur la recherche féministe*, vol 13, no. 3, 1984.
- _____, 'Theorizing Feminist Discourse/Translation' in *Tessera*, vol. 6, 1989.
- **Koskinen, Kaisa,** 'Sexual/Textual Translation' in *Les Actes du XIII World Congress*, Institute of Translation and Interpretation, Brighton, 1993.
- **Lefevere, Andre**, *Translation, Rewriting and the Manipulation of Literary Fame*. Routledge, London and New York, 1992.
- _____ , ed. *Translation/History/Culture. A Source Book.* Routledge, London and New York, 1992(a).
- _____, 'Translation and Canon Formation: Nine Decades of Drama in the United States' in Roman Alverez and M. Carmen-Africa Vidal eds. *Translation, Power, Subversion*. Multilingual Matters Ltd., Clevedon, Philadelphia, Adelaide, 1996.
- **Simon, Sherry**, 'Translating the Will to Knowledge: Prefaces and Canadian Literary Politics' in Susan Bassnett and Andre Lefever eds. *Translation, History and Culture*. Pinter Publishers, London, 1990.
- _____, *Culture in Transit*. Véhicule Press, Montreal, 1995.
- _____, *Gender in Translation. Culture Identity and the Politics of Transmission*. Routledge, London and New York, 1996.
- _____, 'Translation and Cultural Politics of Canada' in Shantha Ramakrishna ed. *Translation and Multilingualism. Post Colonial Contexts*. Pencraft International, Delhi, 1997.
- _____, *Translating Montreal. Episodes in the Life of a Divided City.* McGill-Queen's University Press, Montreal and Kingston/London/Ithaca, 2006.
- **Venuti, Lawrence,** *Rethinking Translation: Discourse, Subjectivity, Ideology*. Routledge, London and New York, 1992.
- _____, *The Translator's Invisibility: A History of Translation*. Routledge, London and New York, 1995.
- _____, *The Scandals of Translation.Towards and Ethics of Difference*. Routledge, London and New York, 1998.
- **Von Flotow, Luise,** 'Feminist Translation' in *TTR*, vol.4, no.2, 1991.
- **Wildeman, Marlene,** 'Daring Deeds: Translation as Lesbian Feminist Act', *Tessera,* vol. 6, 1989.